ICH SCHEME 2015-16

File No./email letter no. 28-6/ICH-Scheme/92/2015-16 Dt. 29 January 2016

राजस्थान की सांस्कृतिक विरासत'' ''लोक नाट्य रम्मत'' का संरक्षण, संवर्धन एवं प्रलेखन द्वारा सुदृढ़ीकरण एवं एकीकरण।

प्रथम प्रतिवेदन

(Ist Report/Blue Print)

गूंज कला एवं संस्कृति संस्थान, बीकानेर
सी–122–सी, मुरलीधर व्यास नगर, बीकानेर (राजस्थान)
मो0 नं0 9783964442
ईमेल–**goonjkalaandsanskritisansthan@gmail.co.com**

अनुक्रमाणिका

1. परियोजना का परिचय

(1) प्रस्तावना

(2) बीकानेर की रम्मतों की मौलिक विशेषताएं

(3) लोक नाट्य रम्मतों की वर्तमान स्थिति

(4) राजस्थान की सांस्कृतिक विरासत ''लोक नाट्य रम्मत'' के संरक्षण व संवर्धन की आवश्यकता क्यों।

2. राजस्थान की सांस्कृतिक विरासत ''लोक नाट्य रम्मत'' के संरक्षण व संवर्धन हेतु किए जाने वाले क्रिया कलाप –

3. क्रियाकलापों का चरणबद्ध विवरण (Time Frame of Project)

4. प्रथम चरण में किये गये क्रिया कलापों का विवरण

(1) बीकानेर की रम्मतों के दल (अखाड़ों) व कलाकारों एवं उस्तादों को सूचिबद्ध करना

(2) बीकानेर की रम्मत के दल (अखाड़े) उस्ताद व कलाकार

(3) रम्मतों के अभ्यास व प्रस्तुति हेतु संस्थान के प्रयास

(4) अभ्यास हेतु कार्यशालाओं व गोष्ठियों का आयोजन

(5) रम्मतों की प्रस्तुति (मंचन) में सहयोग

(6) रम्मतों की वीडियोग्राफी एवं उस्ताद व कलाकारों के साक्षात्कार

(7) बीकानेर की सांस्कृतिक विरासत ''लोकनाट्य रम्मत'' पर शोध कार्य

(अ) अमरसिंह राठौड़ की रम्मत

(ब) हेड़ाऊ मैहरी की रम्मत

5. उपसंहार

6. परिशिष्ट

ICH SCHEME 2015-16

File No./email letter no. 28-6/ICH-Scheme/92/2015-16 Dt. 29 January 2016

प्रथम प्रतिवेदन

(I[st] Report/Blue Print)

1. **प्रस्तावित परियोजना/कार्य कलाप का शीर्षक –** ''राजस्थान की सांस्कृतिक विरासत'' ''लोक नाट्य रम्मत'' का संरक्षण, संवर्धन एवं प्रलेखन द्वारा सुदृढ़ीकरण एवं एकीकरण।

2. **परियोजना/कार्य कलाप शुरू होने की तारीख –** 01.02.2016

3. **परियोजना/कार्य कलाप पूर्ण होने की अपेक्षित तारीख –** 30.11.2016 (कुल अवधि 9 माह)

4. **परियोजना का परिचय–**

1. **प्रस्तावनाः–** भारतीय वांग्मय में कला एवं साहित्य को दो रूपों में विभाजित किया गया है एक शास्त्रीय रूप तथा दूसरा लोक रूप।

आधुनिक जीवन की विसंगतियों को झेलता भारतीय समाज लोक एवं शास्त्र के न्यारे–न्यारे रूपों को अपने व्यवहार में स्वीकार कर उन्हे एकाकार भी करता रहता है। वह एक ही समय में ''लोक'' का होकर भी ''शास्त्र'' का बना रहता है अथवा ''शास्त्र'' की परिधि में हो कर भी लोक दृष्टि का प्रतिनिधित्व कर रहा होता है। उत्सव, नाट्य एवं अनुष्ठान इसी मिले–जुले स्वरूप को आज हमारे सामने प्रस्तुत करते है लोक के वैशिष्ट्य को स्वयं शास्त्र भी स्वीकार करता है क्योकि बिना ''लोक'' के शास्त्र की परिकल्पना संभव नहीं है। स्वय आचार्य भरत ने अपने नाट्य शास्त्र में लोक के महत्व को स्पष्ट किया है–

नानाभावोपसम्पन्न नानावस्थान्तरात्मकम्।
लोकवृतानुकरणं नाट्यमेतन्मया कृतम।।

–नाटयशास्त्र 1/112

राजस्थानी लोककला की अपनी समृद्ध परम्परा रही है अनादि काल से ही इसके माध्यम से राजस्थानी समाज जहां स्वयं को अभिव्यक्त करता रहा है वही उससे प्रेरणा भी लेता रहा है। राजस्थानी समाज और संस्कृति में व्याप्त जीवन मूल्यों

की प्रतिष्ठा इस कला का ध्येय रहा है। लोकगीत, लोक–कथा एवं लोक–नाट्य की अलग–अलग विधाओं में इस समाज की सांसो की सुगन्ध प्रवाहित होती है। राजस्थान के जनजीवन का कोई कार्य बिना लोकगीतोंके सम्पन्न नहीं हो सकता तथा इसी समाज के अनुभवों ने लोक–कथाओं को अभिव्यक्ति दी है और इन्ही कथाओं से निकल कर आता है लोक नाट्य वस्तुतः इसी कडी में सबसे प्रमुख स्वरूप जिस विधा का प्रकट होता है वह है लोकनाट्य अपनी प्रस्तुतिपरकता के कारण वे समाज का मनोरंजन भी करते रहे और उसकी अभिव्यक्ति का साधन भी बने रहे। राजस्थान के लोकनाटयों के कई रूप प्रचलित हैः–

- **ख्याल**
- **गवरी**
- **पड़**
- **तुर्रा कलंगी**
- **कठपुतली एवं**
- **रम्मत इनमें प्रमुख है।**

इनमें से कुछ नाट्य अपने अनुष्ठानिक स्वरूप के कारण तो कुछ विशुद्ध मनोरंजनात्मक पहल के कारण लोक के आकर्षण का केन्द्र बने रहे है। हम कह सकते है कि लोकनाट्य सामाजिक चेतना की रचनात्मक अभिव्यक्ति का प्रदर्शनात्मक रूप है। राजस्थान का लोकनाट्य ''रम्मत'' भी इनमें से एक है। लोकनाट्य का फलक विस्तृत है। उसमें सामाजिक, आर्थिक राजनैतिक एवं दार्शनिक पक्ष अपने सत्य को तलाशने की यात्रा करते है। यह ययावरी प्रवृति लोक नाट्य का जीवन से सदा सम्बन्घ बनाये रखती है।

रम्मतः– ''रम्मत'' राजस्थानी लोकनाटयों का एक विशेषरूप है। राजस्थान में इसके कई भेद प्रचलित है। रम्मत का अर्थ है ''खेल'' राजस्थानी लोकनाट्य ख्याल का सम्बन्ध भी खेल से जोड़ा जाता है इसलिए कई बार रम्मत एवं ख्याल एक ही भाव को प्रकट करने वाले माने जाते है खेल हमारे जीवन में रंजन का कार्य करते है अतः रम्मत स्वतः ही रंजन करने वाली विधा मानी जाती है। राजस्थान में विभिन्न जातियों द्वारा प्रस्तुत किये जाने वाले लोकनाट्य रूप भी रम्मत कहे जाते है।

राजस्थान के अलग–अलग अंचलों में जाति विशेष द्वारा विशेष अवसरों पर ये लोक नाट्य रम्मत प्रस्तुत किये जाते है जिनमें प्रमुख हैः–

रावलों की रम्मतः– ये रम्मत राजस्थान के अलग–अलग अंचलों में एक ही जाति रावल द्वारा प्रस्तुत की जाती है।

बीकानेर की रम्मतेः— बीकानेर अंचल में पुष्करणा जाति द्वारा प्रस्तुत की जाती है।

जैसलमेर की रम्मतेः— पश्चिमी राजस्थान के जैसलमेर अंचल में शाकद्विपीय ब्राहम्णों द्वारा प्रस्तुत की जाती है।

मेघवालों की रम्मतः— अनुसूचित जाति द्वारा प्रस्तुत लोकनाट्य रूप की सम्भवतः प्रथम विधा जो सिरोही अंचल में प्रस्तुत की जाती है।

बीकानेर की रम्मतेः— बीकानेर दूसरी काशी सारस्वत भूमि है। यह शहर रणबंका ही नहीं रसबंका भी रहा है। यहां मेले मगरिये, पर्व—उत्सव, तीज—त्यौहार, रास—फाग, खेल—तमाशा, व्रत—उत्सव, उपासना अनुष्ठान लोक जीवन की सांसे रही है।

सावन—फागुन में बीकानेर की धरती देव रमण की धरती बन जाती है जैसा रसीला यहां का सावन है वैसा ही रसीला यहा का फागुन है। फागुन की मस्ती के आलम में रंगीले—रसीले—सुरीले वातावरण में मंचित होते रहे है लभगभग 250 वर्षों से बीकानेर के लोकनाट्य रम्मत, ख्याल और नौटंकी।

बीकानेर की रम्मतों के कथानक मुख्यतः ऐतिहासिक, सामाजिक, धार्मिक, संयोग—वियोग, प्रकृतिचित्रण, सौन्दर्यमूलक, सुधार—भाव, राजनैतिक व्यग्य, सम—सामयिक घटनायें, सूखती संवेदना, मरती मानवता के दर्द आदि भावनाओं पर आधारित होती है।

बीकानेर की रम्मतों की मौलिक विशेषताएं—

1. इनमें बीकानेर का लोकजीवन, लोक—भावना तथा लोक—संस्कृति स्पष्ट प्रगट होती है।
2. इन लोकनाट्यों की अपनी स्वयं की विशिष्ट संगीत—बंदिशे है।
3. ये स्थानीय भाषा के साथ—साथ स्थानीय प्रभाव एवं रंग लिये होते है।
4. इनकी वेशभूषा—आभूषण तथा श्रृंगार बीकानेरी होता है।
5. इनके पद—संचालन, हाव—भाव व अभिनय अपने है।
6. इनकी प्रस्तुति का अपना ही अंदाज है।
7. इनके रंगमंच जिन्हे यहां ''अखाड़ा'' या ''कड़ा'' कहा जाता है अलग ढंग से बनाये जाते है। कहीं यह अखाड़ा पाटों पर बनाया जाता है, कहीं धरती पर। धरती पर बालू बिछाई जाती है। जिसे पावन मान कर लोग समापन के बाद श्रद्धा से घर ले जाते है अखाड़ा गोलाकार होता है। पाटों का चौकोर। पाटों पर वांछित बिछायत तथा कुर्सियां आदि रखी जाती हैं व कही—कही उस क्षेत्र को रगीन फर्रियों से भी सजाया जाता है।
8. रंगमंचीय साज—सज्जा, पर्दे तथा प्रोपर्टीज का उपयोग नहीं किया जाता।
9. लोकनाट्य प्रारम्भ होने से पूर्व अपने—अपने इष्ट देवी—देवताओं की पूजा आराधना सभी कलाकार करते है।
10. आयोजन का प्रबन्ध स्वयं कलाकार ही करते है।

11. मैकअप कभी–कभी ही किया जाता है।
12. महिलाओं की भूमिका परम्परागत रूप से पुरूष ही करते है मुँह पर घूंघट रहता है।
13. ख्याल–रम्मत का सारा कथ्य गेय एवं संगीतात्मक होता है। संवाद भी गाकर प्रस्तुत किए जाते है। गद्य का प्रयोग होता ही नहीं।
14. दर्शक अखाड़े या कड़े के चारों तरफ खड़े या बैठे रहते है, अतः हर संवाद या पद कलाकार चारो तरफ घूम–घूम कर तीन या चार बार बोलता है। कई बार स्थल विशेष पर जनता भी साथ गाने लगती है।
15. टेरिये तथा वादक कड़े या अखाड़े के बाहर, पास या नीचे बैठकर गाते–बजाते है।
16. इनमें मुख्यतः नगाड़ा–ढोलक–बांसुरी आदि वाद्य ही बजाये जाते है।
17. लोक कलाकार ऐसे चूने जाते है, जिनकी आवाज व सुर इतना ऊँचा तथा बुलन्द हो कि हजारों की भीड़ को बिना माइक सुनाई दे सके। ऐसे भी कलाकार थे, जिनकी आवाज शान्त रात में 7–8 किलोमीटर दूर तक सुनाई देती थी।
18. लोकनाट्यों के अभ्यास का शुभारम्भ वसंत पंचमी से किया जाता है।
19. बीकानेर के लोकनाट्य मुख्यतः होली पर्व पर ही किए जाते है। कहीं–कहीं शीतलाष्टमी को भी आयोजित किए जाते है।
20. ये लोकनाट्य श्रद्धाभाव से अपने इष्टदेव के रास के नाम से–यथा ''भैरूंजी का रास'' ''रामदेवजी का रास'' किए जाते है अथवा मनोरंजन के लिए।
21. इन लोकनाट्यों में अश्लीलता या भद्दापन्न अभिव्यक्त नहीं होते।
22. ये लोकनाट्य व्यावसायिक स्तर पर नहीं किए जाते और न ही इनके कलाकार व्यावसायिक होते है।
23. हर दल या मण्डल के अपने–अपने कलाकार होते है। कभी–कभी कलाकार दूसरी रम्मत में भी भाग या सहयोग देता है।
24. सबके चौमासे–ख्याल–लावणी अलग–अलग होते है– हर वर्ष नये होते है।
25. अधिकांश आयोजन अलग–अलग मोहल्लों एवं अलग–अलग रातों में होते है।
26. लगभग सभी लोकनाट्य देर रात को प्रारम्भ होकर दूसरे दिन 9–10 बजे तक चलते है।
27. सभी आयोजन साम्प्रदायिक–सदभाव के लिए शान्तिपूर्वक वातावरण में सम्पन्न होते है। यह एक श्रेष्ठ रंग–परम्परा है कि आज तक कभी इन आयोजनों में कोई अशान्ति या व्यवधान नहीं आया।
28. सभी जाति–धर्म सम्प्रदाय के लोग इसमें खुले दिल से भाग लेते है–देखते है। उन्हीं के आर्थिक व अन्य सहयोग से इनकी प्रस्तुतियाँ होती है।
29. कई बार मुसलान भाइयों में ख्याल आदि लिखाए गए है। सालु भिश्ती की लावणियाँ तो खूब गाई गई है। सिक्खों द्वारा लिखी गई रचनाएं भी प्रस्तुत की गई हैं।
30. ''स्वांग मैरी'' की रम्मत में कथानक नहीं होता। बस चौमासा, लावणी, ख्याल गाये जाते है।
31. ''अमर सिंह राठौड़'' शहजादी नौटंकी आदि कथानकपूर्ण ख्याल रम्मत हाते है। यहां सभी लोक–नाट्यों को अधिकांश ''रम्मत'' ही कहते है।
32. बीकानेरी रम्मतों में ध्रुपद, कली, भेटी, उडावणी, टेर, झेला आदि गायन प्रस्तुति की अपनी स्वयं की व्यवस्था है।

33. लोक–नाट्यों मे गुरू–परम्परा का श्रेष्ठ रूप देखने को मिलता है। हर खिलाड़ी या कलाकार अखाड़े में प्रवेश करते ही गुरू को स्मरण–नमस्कार करता है तथा अखाडे की मिट्टी को मस्तक पर लगाता है।
34. इन लोक–नाट्यों में वाचिक, आंगिक, आहार्य अभिनय ही किया जाता है। सात्विक अभिनय का अधिकांश में अभाव ही रहता है।
35. ये आयोजन सदा खुले चौक में होते है तथा निशुल्क होते है।
36. श्रेष्ठ कलाकार पर लोग ''घोळ'' (रूपये सिर पर फेर कर न्यौछावर करना) करते है। सगे–सबंधी भी घोळ करते है।
37. इन आयोजनों में सदा जन–सहयोग मिलता रहा है। जनता भरपूर मनोरंजन प्राप्त करती है।
38. आयोजन से पूर्व भव्य ''बरनोलियां'' या ''छीकिया'' निकाली जाती है – जिनमें दूर–दूर तक की परिक्रमा, पैदल या घोड़ों पर या वाहनों पर की जाती हैं।
39. इनमें कंठ संगीत, वाद्य संगीत नृत्य एवं हावभाव के माध्यम से संवाद प्रस्तुत किए जाते है।
40. कलाकार की गायकी में टेरिये (गायक समूह) पूर्ण सहयोग देते है।
41. इन प्रस्तुतियों में अधिकांश मे सारंग, सोरठ, देस, माड़, खमाच आदि रागों की प्रधानता रहती है।
42. तालों में ज्यादातर तिताला, झुमरा, दीपचन्दी, दादरा, कहरवा, आदि का उपयोग होता है।
43. कई रम्मते एक ही परिवार द्वारा परम्परागत रूप में वर्षों से की जाती रही है।
44. प्रस्तुति से पूर्व सामूहिक गणेश वन्दना, रामदेव बाबा वन्दना, लटियाल आराधना शिव व भैरूं आदि में से कुछ की जाती है।
45. ये आयोजन फाल्गुन शुक्ला अष्टमी से फाल्गुन शुक्ला चतुर्दशी तक ही होते है। इनके बाद नहीं।
46. इनकी प्रस्तुति की कलात्मकता एवं आकर्षण का ऐसा प्रभाव था कि लोग दूर–दूर के गाँवों से शाम को ही आ–आकर अपना स्थान सुरक्षित कर लेते थे। इसके साथ ही प्रवासी बीकानेरी कलकता–बम्बई–मद्रास आदि से इनका आनन्द लेने अपना काम–काज छोड़, पैसा और समय लगाकर प्रतिवर्ष आते थे।
47. इनमें कलाकरों का मनोयोग एवं जनता का सहयोग प्रशंसनीय रहता था।
48. इस लोकनाट्य कला ने अपने 150–200 वर्षों के जीवन में कभी राज्याश्रय की कामना नही की। लोक की यह कला सदैव लोकश्रय पर ही जीवित रहीं। वस्तुतः लोकनाट्य कला का स्वरूप लोक की, लोक द्वारा और लोक के लिये होने के कारण पूर्णतः लोकतांत्रिक ही रहा है।
49. रम्मत करने से पूर्व राज्य से औपचारिक स्वीकृति लेनी पडती थी। पर इसकी बहुत कड़ाई से पालना नहीं होती थी।
50. होलिका लगने के बाद कई रम्मतों वाले अपने अखाड़े के आस–पास ''खम्भा स्थापना'' करते है। खम्भे पर श्रीगणेश तथा अपने–अपने इष्ट देवी–देवताओं की मूर्तियां होती है। यह खम्भा तीन–चार फीट जमीन खोद कर गाड़ा जाता है। यह देवी–देवताओं की अराधना भी है तथा रम्मत की सुरक्षा एवं कुशलात की कामना का प्रतीक है।

बीकानेर में फागुन माह में होने वाले लोक नाट्य रम्मत में मुख्य रम्मते है:–

1. **अमर सिंह राठौड़ की रम्मत**
2. **हडाऊ–मैरी की रम्मत**
3. **शाहजादी नौटंकी तथा सांगमैरी की रम्मत**
4. **फक्कड़ दाता री रम्मत (बारह गुवाड़ चौक)**

बीकानेर की रम्मतों का दो प्रकार से वर्गीकरण किया जाता सकता है:–

1. **कथा प्रधान रम्मते या ख्याल**
2. **बिना कथानक लावणी–चौमासा, ख्याल पर अधारित रम्मते।**

कथा प्रधान प्रचलित रम्मते:–

अमर सिंह राठौड़ की रम्मते, हड़ाऊ–मैरी तथा शाहजादी नौटंकी

2. लोकनाट्य रम्मतों की वर्तमान स्थिति –

एक समय था जब लोकनाट्य ही लोकनुरंजन के एकमात्र साधन थे। जब भी, जहाँ भी लोकनाट्य होने की सूचना मिलती, जनता उमड़ पड़ती थी। हजारों नर–नारी, आबाल–वृद्ध, रात–रात भर इन आयोजनो का आनन्द लेते थे दूरियों और समय की परवाह न करते हुए लोक इन आयोजनों में पहुंच जाते थे। जीवन की गति धीमी एवं सहज थी, लोक सहृदय एव रसिक थे। गाँवों में ही नहीं, कस्बों व शहरों मे भी लोकनाट्यों के प्रति गहरा आकर्षण था। लोकनाट्य प्रारम्भ होने से घंटों पूर्व लोग स्थल पर जा पहुँचते थे। एक अनोखा क्रेज।

पर धीरे–धीरे दृश्यपटल बदला। शिक्षा आई, व्यस्तता आई। भौतिक सभ्यता आई, रुचियाँ एवं अनिवार्यताएं बदली। जीवन का दृष्टिकोण बदला। शिक्षित वर्ग का मनोविज्ञान बदला। बड़प्पन की भावना पनपी। पढ़ा–लिखा एवं पैसे वाला वर्ग लोक से हटता गया, एक आभिजात्य भावना लोक मे खाई पैदा करने लगी। ''जी'' की जगह वह ''साहब'' बन गया। साहब के लिए जन या लोक–अनपढ़, गंवार, असभ्य मात्र रह गया। अतः वह लोक से जुड़ी हर बात से अपने को दूर रखने लगा। यही परिणाम लोकनाट्यों–रम्मतों–ख्यालो, नौटंकियों का हुआ।

फिर सिनेमा आया, दूरदर्शन आया, वी.सी.आर. आया, इन्टरनेट आया और ये तथा कथित अभिजात्य एवं शिक्षित लोगो को ही नहीं, आम आदमी को भी लोक कलाओं से काटते गये। लोकनाट्य भी इस संक्रमण से बच न सके। आज लोकनाट्यों की लोकप्रियता धीरे–धीरे कम होती चली जा रही है।

लोकनाट्य रम्मतें भी ऐसे ही दौर से गुजर रही है। आज रम्मतों के प्रति न तो जनता की रुचि रही है और ना ही कलाकारों–आयोजकों की। बस मात्र औपचारिकता का निर्वहन हो रहा है। इसके निम्नलिखित कारण संभव हैं–

1. जीवन व्यस्तताएं, आर्थिक–उपार्जन की भागम–भाग, बढ़ते फासले।

2. मीडिया का प्रभाव। ओडियों–विडीयो सुविधाओं तथा सैल्यूलाइउ मीडिया के कारण घर बैठे मनोरंजन उपलब्ध कराना। बढ़ते चैनल्स के कारण चौबीसो घन्टे कार्यक्रम उपलब्ध होना। सस्ते में सुविधा–सहित मनचाहा मनोरंजन मिलना। विविध प्रकार का मनोरंजन मिलता। सस्ते स्तर का मनोरंजन मिला। भव्य सैट, पल–पल बदलते आकर्षक दृश्य, सुदर्शन कलाकार, मधुर संगीत, आधुनिक संगीत एवं नृत्य सहज मिलना। तरह–तरह के कथानक एवं घटनाएं देखने को मिलना, साउन्ड एवं लाइट इफैक्टस के अनोखे–आकर्षक प्रभाव मिलना। अविश्वसनीय घटनाएं, रोमांचक दृश्य देखना, प्रचार माध्यमों द्वारा इन मीडियाज के प्रति ग्लैमर पैदा करना आदि ऐसी अनेक बातें एवं साधन है– जो लोकनाट्यों की तरफ नजर डालना भी नहीं चाहती। बालकों के लिए बनने वाली कार्टून फिल्में–कामिक्स, टी.वी. गेम्स आदि बालकों की रूचियाँ बदल रहे है। अतः रम्मतें अपना आकर्षण खोती जा रही है।
3. लोकनाट्यों के आनुष्ठानिक स्वरूप ने भी लोकप्रियता में कमी पैदा की है। लोकनाट्य यदि व्यावसायिक रूप से नियमित मंचित होते रहते, तो जन–जुड़ाव रहता पर वर्ष में एक बार विशेष अवसरों पर ही प्रस्तुति होने के कारण दर्शक अभ्यस्त नहीं हो पाता। बीकानेर की रम्मतें–ख्याल तथा नौटंकी बस होली पर या कोई–कोई शीतलाष्टमी या शरद पूर्णिमा को ही होती हैं– अतः दर्शकों में देखने की आदत नहीं पड़ती।
4. लोकमंच व्यावसायिक न होने कारण आर्थिक–उपार्जन का साधन नहीं बन पाता। अतः कलाकार आर्थिक–उपार्जन को छोड़कर, इसमें समय लगाना नहीं चाहता। जो परम्परागत रूप से इनमें भाग लेते थे–उनका शौक तथा निष्ठा भी आर्थिक चक्की में पिस गए। नये कलाकार इनमें वैसे ही जुड़ना नहीं चाहते।
5. सिनेमा के संगीत, चटपटे रूपानियत भरे गीत, गजलों, पाप संगीत को छोड़कर कोई युवा लोक–रम्मतों की रागों को, टेरों को क्यों अलापेगा ?
6. समयाभाव एवं घटती रूचियों के कारण रम्मतों का पूर्ण अभ्यास नहीं होता। अतः न तो कलाकारों के पास वह बुलन्द आवाज हैं, जो हजारों लोगों तक पहुँचकर प्रभावित कर सके तथा न वह सुरीलापन तथा बुलन्दगी है, जो जनता को जोड़–जुटा सके। रम्मतों के पास केवल नगारा, ढ़ोलकी तथा कभी–कभी बांसुरी तथा छमछमों का ही प्रयोग होता हैं– जो मीडिया के अनेक एवं विविध प्रकार के साजों एवं संगीत प्रभावों के सामने अप्रभावशाली रहते है।
7. स्टेज तो स्क्रीन के लिए जम्पिग बोर्ड बन रहा है, पर लोकनाट्य यह चमचमाता द्वारा नहीं खोल सकता। अतः कलाकार इधर आना पसंद ही नहीं करता।
8. पुराने कलाकार वृद्ध हो गये या चुक गए, नये कलाकार रूचि नहीं लेते हैं, जो कर रहें है, वे बस रस्म निभा रहे हैं–ऐसे में लोकनाट्य एवं लोक–रंगमंच धीरे–धीरे लोकप्रियता खो रहा है।
9. संगीत एवं नृत्य की स्कूलों एवं प्रशिक्षण संस्थानों में विधिवत् प्रशिक्षण लेने वाले–लोकनाट्यों में भाग लेना नहीं चाहते। लोकनाट्य गायन उनके लिए न तो सरल है और न ही उनके

आभिजात्य अहं की तुष्टि कर पाता है। अतः लोकनाट्य मूलतः सांगीतिक विधा है—वह गायकों के बिना कैसे आगे बढ़े।

10. लोकनाट्य के लिए सरकारी या गैर—सरकारी किसी भी क्षेत्र में कोई प्रशिक्षण की व्यवस्था नहीं।
11. लोकनाट्य का, पब्लिसिटी मीडिया की उपेक्षा का शिकार होना। न पैसा, न पब्लिसिटी, न भविष्य—तो कौन करे समर्पण इस माध्यम के लिए।
12. लोकनाट्य आयोजकों की कमी होना।
13. लोकनाट्य खुले रंगमंच की प्रस्तुति हैं, जिसे एक खुला—चौड़ा स्थान चाहिए जबकि स्थान सिकुड़ते जा रहे हैं। कहाँ हो आयोजन—कहाँ बैठे दर्शक।

3. राजस्थान की सांस्कृतिक विरासत ''लोकनाट्य रम्मत'' के संरक्षण व संवर्द्धन की आवश्यकता क्यों —

लोक नाट्य की अपनी समृद्ध परम्परा के रहते सैकड़ो वर्षो से राजस्थानी जन जीवन को आकर्षित करने वाले ये लोक नाट्य रूप आज बिख्राव की स्थिति में है इसमें राजस्थान के लोक नाट्य ''रम्मत'' की स्थिति भी कुछ ऐसी है।

ये लोक नाट्य रम्मत प्राचीन काल से ही राजस्थानी समाज के मनोरंजन का माध्यम रही है। किन्तु आधुनिक काल में जनसंचार के बढ़ते माध्यमों से इस विद्या के नष्ट होने का खतरा पैदा हो गया है आधुानिकता की अंधी दौड़ में हम अपनी परम्परागत लोकानुरंजक कलाओं को नकारा कहकर अस्वीकार करने लगे है।

इन लोक नाट्य रम्मत को देखकर हम यह जान सकते है कि यहां का लोक समाज किन सामाजिक मूल्यों को पोषित करता रहा है, उनके साथ जीता रहा है। परन्तु आधुनिक कहलाने की होड़ में हम अपने मूल्यों का क्षरण करने लगे है। ये लोक नाट्य इन्ही मूल्यों की रक्षा करने का प्रयास करते है।

राजस्थान की अधिकतर रम्मते काव्य प्रधान लोक नाट्य है। ये लोक नाट्य पद्यात्मक भी है। इन लोक नाट्यों में राजस्थान के समृद्ध साहित्य की झलक दृष्टिगोचर होती है। लोक साहित्य की परम्परा को बनाये रखने व इसके संवर्धन के लिए रम्मतों के साहित्य के सयोजन एवं प्रकाशन की आवश्यकता है।

रम्मतों की भवभूमि यहा की सांस्कृतिक चेतना की अभिव्यक्ति रही है इनके नायकों में वीरता, समाज के हित रक्षक, वचनबद्धता स्वामी धर्म, देशहित, सत्य, स्त्री रक्षक आदि आदर्श मूल्यों की झलक देखने को मिलती है जो आज की युवा पिढ़ी के लिए प्रेरणा दायक है। परन्तु सामाजिक स्तर पर आज ऐसे आदर्शो की अवहेलना हो रही है ऐसे समय में इन चरित्रों से सजे लोक नाट्य समाज के लिए अतिआवश्यक है।

इन लोक नाट्यों में सगीत की प्रमुख भूमिका होती हैंइनमें कलाकारों की भावना एक दूसरे की रचनात्मकता में बढावा देने की होती है। गुरू–शिष्य परम्परा यहा कायम रहती है। इनसे परम्परागत लोक वाद्य, लोकधुन व लोकनृत्य की पहचान व परम्परा बनी रहती है।

अतः प्राचीनकाल से चली आ रही है। राजस्थन की सास्कृतिक विरासत ''लोक नाट्यरम्मत'' के सामने आज संकट है। सांस्कृतिक और सामाजिक धरोहर ये लोक नाट्य रम्मत का अस्तित्व जनसंचार के बढ़ते माध्यमों से खतरे में है आज आधुनिकता की अन्धी दौड़ में फंसकर हम अपनी परम्परानुगत लोकरंजनकारी कला ''रम्मत की अनदेखी कर रहे है। बाजार के दर्शन को नहीं समझ पाने के कारण लोक नाट्य रूप रम्मत आज विलुप्त होने की कगार पर है नष्ट होती हमारी ये सांस्कृतिक थाती को बचाने के लिए प्रस्तोता एवं प्रेक्षक सभी को मिलकर प्रयास करना पड़ेगा।

इसके लिए आवश्यक हैं इसके संरक्षण, संवर्धन, प्रलेखन एवं एकीकरण की जिससे ये सांस्कृतिक विरासत लोक नाट्य रम्मत बची रह सके।

5. राजस्थान की सांस्कृतिक विरासत ''लोकनाट्य रम्मत'' के संरक्षण एव संवर्धन हेतु किए जाने वाले क्रिया कलाप –

1. रम्मतों के कलाकार व दलों को चिन्हित कर सूचिबद्ध करना।
2. कलाकार, दल व प्रस्तुति देने वाले समुह के व्यवसाय, प्रस्तुति के क्षेत्र, जीवन–वृत्त व प्रस्तुतियों और उपलब्धियों का प्रलेखिकरण कर एक पुस्तक के रूप में प्रकाशित करवाना।
3. रम्मतों के उस्ताद व गुरूओं को चिन्हित कर सूचिबद्ध करना।

4. रम्मतों के उस्ताद व गुरूओं की लोक नाट्य क्षेत्र में पहचान बनाने के लिए उनके जीवन वृत्त, अनुभव, उपलब्धियों और प्रस्तुतियों को प्रकाशित करवाना।
5. रम्मतों की प्रस्तुति के लिए संशाधन, स्थान व अवसर उपलब्ध करवाना।
6. लोक सृजन धर्मी, लोकनाट्य विशेषज्ञ, साहित्यकार, नाट्यकार व लोककला के क्षेत्र में कार्य करने वाले शोधकर्ता, प्रस्तोता एवं प्रेक्षक की उपस्थिति में कार्यशाला, सेमिनार, एवं गोष्ठियों का अयोजन।
7. रम्मतों का व्यवसायिक करण हेतु विशेषज्ञों एवं उस्ताद और गुरूओं के द्वारा कलाकारों के प्रशिक्षण करवाना।
8. अभ्यास एवं प्रशिक्षण के उपरान्त रम्मतों का विभिन्न स्थानों पर प्रस्तुतिकरण करवाना।
9. राजस्थान की रम्मतों पर शोधपरक कार्य कर प्रकाशित करवाना।
10. रम्मतों के मंचन की विडियोग्राफी कर इस पर वृतचित्र (Documentry) बनाना जिससे इन रम्मतों की पहचान देश विदेश स्तर पर हो सके।
11. रम्मतों के प्रचार–प्रसार के लिए सामाचार पत्र, इलेक्ट्रोनिक मिडियाव अन्य प्रचार–प्रसार के साधनों द्वारा अधिकतम प्रचार–प्रसार करवाना।

6. माह फरवरी 2016 से माह नवम्बर 2016 तक किये जाने वाले क्रिया कलापों का चरणबद्ध विवरण (Time Frame of the Project)

प्रथम चरण – (01 फरवरी 2016 से 30 मई 2016 तक)

1. बीकानेर की रम्मतों के दल (मण्डलों) को चिन्हित कर सूचिबद्ध करना
2. बीकानेर की रम्मतों के कलाकारों को सूचिबद्ध करना।
3. बीकानेर की रम्मतों के दल (मण्डल/अखाड़ों) व प्रस्तुति देने वाले कलाकारों के व्यवसाय, प्रस्तुतियों और उपलब्धियों का प्रलेखिकरण कर पुस्तक रूप प्रदान करना। बीकानेर की रम्मतों के उस्ताद व गुरूओं को चिन्हित कर सूचिबद्ध करना।
4. बीकानेर की रम्मतों के उस्ताद व गुरूओं के व्यवसाय, अनुभव उपलब्धियों और प्रस्तुतिओं को पुस्तक रूप प्रदान करना।

5. बीकानेर की रम्मतों के अभ्यासी और प्रस्तुति करने वाले अखाड़ों मण्डलों के साथ रम्मत के उस्ताद व अनुभवी व्यक्तियों को निमंत्रित कर अभ्यास और कार्य शालाओं का आयोजन करना।

6. बीकानेर की रम्मतों के कलाकारों के कौशल संवर्धन हेतु रम्मतों के कलाक्षेत्र जैसे–गायकी, अभिनय संवाद और साहित्य पर अभ्यास व कार्यशाला का आयोजन।

7. होली के अवसर पर मंचित होने वाली रम्मतों की विडियोंग्राफी कर (डाक्यूमेन्ट्री) वृत्त चित्र निर्माण हेतु श्रव्य–दृश्य सामग्री एकत्रित करना।

8. बीकानेर की रम्मतों के व्यावसायिकरण हेतु विशेषज्ञों, उस्ताद एवं कला क्षेत्र के अनुभवी व्यक्तियों द्वारा प्रशिक्षण करवाना।

9. होली के अवसर पर होने वाली रम्मतों की प्रस्तुति में सहयोग व प्रचार–प्रसार करना।

10. होली के अवसर पर होने वाली रम्मतों पर शोध परक कार्य कर प्रलेखन करना।

द्वितीय चरण – (1 जून 2016 से 31 अगस्त 2016 तक)

गत चरण में किए गये कार्य की समिक्ष व शेष रहे कार्यों को पूर्ण करते हुए इस चरण में निम्न क्रिया कलाप किए जायेंगें।

1. लोक सृजन धर्मों, लोक नाट्य विशेषज्ञ साहित्यकार, नाट्कार व लोक कला के क्षेत्र में कार्य करने वाले शोधकर्ता, प्रस्तोता एवं प्रेक्षक की उपस्थिति में कार्यशाला, सेमीनार एवं गोष्ठियों का आयोजन।

2. बीकानेर से बाहर राजस्थान की अन्य रम्मतों पर शोध परक कार्य जैसे –
   1. रावलों की रम्मत
   2. मेघवालों की रम्मत
   3. जैसलमेर की रम्मत

3. बीकानेर की अन्य रम्मतों जो कि होली पर्व के बाद मंचित होती है पर शोध परक कार्य।

4. बीकानेर की रम्मतों पर वृत्त चित्र निर्माण हेतु गुरूओं (उस्ताद) व कलाकारों और सम्बन्धित लोक कला विशेषज्ञों के साक्षात्कार।

तृतीय चरण – (01 सितम्बर 2016 से 30 नवम्बर 2016 तक)

उपरोक्त दोनों चरणों में किए गये क्रिया कलापों की समिक्षा व आगामी माहों में किए जाने वाले कार्यों की रूप रेखा।

1. बीकानेर की रम्मतों को विभिन्न स्थानों पर प्रस्तुति करवाना।
2. बीकानेर की रम्मतों पर वृत्तचित्र (डाक्यूमेन्ट्री) का निर्माण कर प्रचार–प्रसार करना।
3. तीनों चरणों में किए गये शोध परक कार्य को पुस्तक रूप प्रदान करना।

4. बीकानेर की रम्मतों के प्रचार प्रसार हेतु इलेक्ट्रोनिक मिडिया व अन्य प्रचार प्रसार साधनों द्वारा प्रचार–प्रसार करना।

5. रम्मतों के उस्ताद (गुरूओं) और कलाकारों की पहचान हेतु सम्मान समारोह का आयोजन

उपरोक्त टाईम फ्रेम ऑफ प्रोजेक्ट में किए गए चरणबद्ध क्रियाकलापों में लचिलापन निहित है। आवश्यकता अनुसार क्रिया कलाप कम व अधिक तथा चरणों में फेर–बदल सम्भव है।

प्रथम चरण

(01 फरवरी 2016 से 31 मई 2016 तक)

प्रथम चरण में किए गए क्रिया कलापों का प्रतिवेदन –

1. बीकानेर की रम्मतों के दल (अखाड़ों) व कलाकारों को सूचिबद्ध व पुस्तक रूप प्रदान करना–

इस हेतु संस्थान द्वारा एक प्रपत्र का निर्माण किया गया व संस्थान के कार्यकत्ताओं द्वारा विभिन्न दलों (अखाड़ों) से सम्पर्क कर रम्मत के अभ्यासी कलाकार, गुरूओं और दलों (अखाड़ों) को पहचान कर उनका व्यक्तिगत विवरण एकत्रित किया गया इस प्रकार बीकानेर में लोकनाट्य रम्मत के निम्न दल (अखाड़ों) व कलाकार सूचिबद्ध हुए जिनका अलग से प्रलेखन कर पुस्तक रूप में प्रकाशन किया जाएगा।

उपरोक्त दल (अखाड़ों) की उपलब्धियां इनके कलाकारों का व्यवसाय, अनुभव एवं रम्मत के क्षेत्र में गए कार्यों का प्रलेखन किया जा रहा है एवं इन्हे एक पुस्तक के रूप में प्रकाशन किया जाएगा।

बीकानेर के रम्मत के दल (अखाड़े) उस्ताद व कलाकार

1. अमरसिंह राठौड़ की रम्मत

स्थान– आचार्यों का चौक, बीकानेर (राज॰)
उस्ताद– मेघराज आचार्य
आचार्यों का चौक, बीकानेर (राज॰)
मुख्य कलाकार

1. दीनदयाल आचार्य
2. सूरजकरण बिस्सा
3. श्याम लाल आचार्य
4. अंबजी नाई
5. सागरदत्त पुरोहित
6. दाऊजी जोशी
7. शिवकिशन आचार्य
8. बद्रीजी जोशी

ये सभी आचार्यों का चौक, बीकानेर राजस्थान के निवासी है।

2. हेड़ाउ मैरी की रम्मतः–

स्थान– बारहगुवाड़ चौक, बीकानेर (राज॰)

उस्ताद– शांतिलाल पुरोहित

मुख्य कलाकारः–

1. जमनादास सेवग
2. ब्रृज मोहन
3. भंवर लाल
4. शिव शंकर
5. बाबूलाल
6. भैरू रतन
7. विजय कुमार
8. मूलचन्द

ये सभी बारहगुवाड़ चौक, बीकानेर (राज॰) के निवासी है।

3. हेड़ाऊ मैहरी की रम्मतः–

स्थान– मरूनायक चौक, बीकानेर।

उस्ताद– अजय कुमार देराश्री, मरूनायक चौक, बीकानेर (राज॰) 9929670309

मुख्य कलाकार–

1. प्रभु लखाणी
2. घेवरचन्द
3. शिव शंकर
4. मेघसा जोशी
5. दारसा जोशी
6. सुशील जोशी

ये सभी मरूनायक चौक बीकानेर के निवासी है।

4. सुनारों की रम्मतः–

स्थान–सुनारों की बड़ी गुवाड़, बीकानेर।

उस्ताद–रामेश्वर लाल सोनी, सुनारों की बड़ी गुवाड, बीकानेर। 0151–2546122

मुख्य कलाकार–

1. जगदीश सोनी
2. किसन सोनी
3. भगवान दास सोनी
4. सेवा राम सोनी

5. जमनादास कला की रम्मत (नौटंकी शहजादी):–

स्थानः– बिस्सों का चौक, बीकानेर।

उस्तादः– मदनगोपाल, चौथानी औझाओं का चौक, बीकानेर। 8560084032

6. नौटंकी शहजादी की रम्मतः–

स्थान– बारहगुवाड़ चौक, बीकानेर।

उस्ताद– भंवरलाल जोशी, नथानीयों की सराय, बारहगुवाड़ चौक, बीकानेर।

7. भक्त पुरनमल की रम्मतः–

स्थान– बिस्सों का चौक, बीकानेर।

उस्ताद– कृष्ण कुमार बिस्सा, बिस्सों का चौक, बीकानेर। 8107934070

मुख्य कलाकार–

1. रामकुमार बिस्सा
2. गोविन्द गोपाल
3. मनोज कुमार
4. विष्णुदत्त

उपरोक्त दल (अखाड़ो) की उपलब्धियों, इनके कलाकारों का व्यावसाय, अनुभव एवं रम्मत के क्षेत्र में किये गये कार्यों का प्रलेखन किया जा रहा है एवं इन्हें एक पुस्तक के रूप में प्रकाशन किया जायेगा।

2. रम्मतों के अभ्यास व प्रस्तुति हेतु संस्थान के प्रयास –

1. रम्मत के चरित्रानुसार परिधान (Costume) उपलब्ध करवाई गई।
2. संस्थान के प्रयास से रूप सज्जा (मेकअप) के दक्ष व्यक्तियों द्वारा रूप सज्जा का प्रशिक्षण दिया गया।
3. अभ्यास हेतु स्थान संशाधन उपलब्ध करवाये गये।
4. रम्मतों के अनुभवी उस्ताद, लोकनाट्य निर्देशक व विशेषज्ञों द्वारा अखाड़े के कलाकारों को अभ्यास करवाया गया।

3. अभ्यास हेतु कार्यशालाओं व गोष्ठियों का आयोजन –

1. <u>अमर सिंह राठौड़ की रम्मतः–</u>

स्थान :– आचार्यों का चौक बीकानेर

अमर सिंह राठौड़ की रम्मत के अभ्यास व कौशल विकसित करने हेतु उस्ताद मेघराज आचार्य एवं लोक नाट्य के वरिष्ठ निर्देशक राम सहाय हर्ष के निर्देशन में दिनांक 10.03.2016

से 14.03.2016 तक पांच दिवसीय कार्यशाला का आयोजन संस्थान के सहायोग से किया गया। इस कार्यशाला में–

1. इसके अन्तर्गत रम्मत के उस्ताद, वरिष्ठ रम्मत कलाकार, नाट्य कलाकार, लोक नाट्य समिक्षक एवं नये कलाकारों के साथ ''अमर सिंह राठौड़ की रम्मत'' के अभ्यास के साथ–साथ अलग–अलग विद्याओं में प्रशिक्षण दिया गया।

2. समस्त कलाकारों को रम्मत की विशेष गायन शैली का अभ्यास एवं प्रशिक्षण दिया गया। जिसमें विशेषतः ख्याल, चौमासा, लावणी, ध्रुपद, कली, मेरी, टेर, झेला आदि का गायन शैलियों का अभ्यास कराया गया।

3. कार्यशाला में रम्मत में किए जाने वाले विशेष पद संचालन, गति–संचालन एवं भंगिमाओं का प्रशिक्षण व अभ्यास करवाया गया।

4. रम्मत में प्रयुक्त अभिनय शैलियों आंगिक, वाचिक का अभ्यास करवाया गया।

5. रम्मत के आलेखों का वाचन, संवादों की लय–ताल व गायन शैली का अभ्यास करवाया गया।

6. रूप सज्जा, परिधान मंच सज्जा व मंच व्यवस्था व प्रस्तुति प्रक्रिया का प्रशिक्षण व अभ्यास करवाया गया।

अमरसिंह राठौड़ की रम्मत की अभ्यास कार्यशाला

उपरोक्त कार्यशाला में बीकानेर के वरिष्ठ नाट्य निदेशक श्री राम सहाय हर्ष श्री रोहित बोड़ा, पठकथा लेखक श्री विजय शर्मा, संगीतकार श्री जयदीप उपाध्याय और नृत्य निर्देशक श्री विकास शर्मा ने विशेषज्ञ की भूमिका निभाई।

2. <u>हेडाऊ मैहरी की रम्मतः–</u>

स्थान मरूनायक चौक बीकानेर।

''हेडाऊ मैहरी की रम्मत'' की प्रस्तुति प्रदर्शन में गुणात्मक सुधार हेतु मरूनायक चौक, बीकानेर में दिनांक 16.03.2016 से 20.03.2016 तक पांच दिवसीय ''रम्मत प्रस्तुति प्रदर्शन गुणात्मक सुधार कार्यशाला'' का आयोजन किया गया।

हेडाऊ मैहरी रम्मत की अभ्यास कार्यशाला

उस्ताद श्री अजय कुमार देराश्री और वरिष्ठ लोकनाट्य निर्देशक श्री राम सहाय हर्ष के निर्देशन में ''हेडाऊ मैहरी की रम्मत'' में गुणात्मक सुधार हेतु।

i. हेड़ाऊ मैहरी रम्मत का सबसे प्रमुख अंग इसका ''समूह गायन'' है। जिन्हे अन्य रम्मतों में टेरिये भी कहा जाता है। इन टेरियों की दक्षता बढ़ाने के लिए संगीत निर्देशक श्री जयदीप उपाध्याय के निर्देशन में रम्मत की गायकी का अभ्यास करवाया गया।

ii. श्री राम सहाय हर्ष और उस्ताद अजय कुमार देराश्री के निर्देशन में इस अभ्यास मूलक कार्यशाला में ''हेडाऊ मैहरी की रम्मत'' के सभी पक्षों का अभ्यास व प्रशिक्षण कलाकारों को कराया गया।

iii. इस रम्मत में नगाड़ों की दो जोड़ी का प्रमुख स्थान रहता है साथ ही मंजीरों का उपयोग भी किया जाता है। कार्यशाला में नगाड़ा वादकों व मंजीरा बजाने वालों के साथ टेरियों का अभ्यास कराया गया।

iv. रम्मत में गाये जाने वाले राजस्थानी गीत और दोहों का संकलन कर वर्तमान घटनाओं पर आधारित कथानकों के आधार पर रचना की गई।

उपरोक्त कार्यशाला में उस्ताद अजय कुमार देराश्री, वरिष्ठ लोक नाट्य एवं रंग निर्देशक राम सहाय हर्ष, श्री जयदीप उपाध्याय लोक वादक इस्माईल आजाद व साहित्यकार श्री विजय शर्मा ने विशेषज्ञ की भूमिका निभाई।

4. बीकानेर में होने वाली विभिन्न रम्मतों जैसे अमर सिंह राठौड़ की रम्मत, हेड़ाऊ मैहरी की रम्मत, नौटंकी शहजादी की रम्मत, भक्त पूर्णमल की रम्मत आदि की पटकथा, दोहे, गीत व अन्य साहित्य का संकलन संस्थान के प्रयास द्वारा किया गया और उन्हें एक सूत्र में पिरोकर पुस्तक रूप प्रदान कराया जाएगा।

5. अमर सिंह राठौड़ की रम्मत और हेड़ाऊ मैहरी की रम्मत की प्रस्तुति में संस्थान द्वारा पूर्ण सहयोग प्रदान किया गया जिसमें–

i. कलाकारों की रूपा सज्जा

ii. कलाकारों के परिधान

iii. मंच सज्जा

iv. ध्वनि विस्तारक यंत्रों का आयोजन

v. प्रचार–प्रचार आदि।

बिस्सों का चौक (बीकानेर) में रम्मत का आनन्द लेते दर्शक

स्वांग मैहरी रम्मत का मंचन करते कलाकार

चौथाणी औझा चौक (बीकानेर) की रम्मत का मंचन

6. रम्मतों की विडियोग्राफी एवं उस्ताद व कलाकरों के साक्षात्कार –

अमर सिंह राठौड़ की रम्मत, हेड़ाऊ मैहरी की रम्मत, नौटंकी शहजादी की रम्मत एवं भक्त पूर्णमल की रम्मत की वीडियोंग्राफी की गई एवं गुरूओं और कलाकारों तथा लोक कला मर्मज्ञों के साक्षात्कार बीकानेर की रम्मतों पर वृत्त–चित्र बनाने हेतु लिए गये। इन रम्मतों के कथानक नाट्य शैली एवं गायन शैली व विशेष प्रदर्शन को देश्व्यापी पहचान बनाने हेतु वृत्त–चित्र का निमार्ण श्री रामसहाय हर्ष के निर्देशन में संस्थान द्वारा करवाया जा रहा है।

रम्मत के उस्ताद का साक्षात्कार लेते हुए संस्थान के कार्यकर्ता

7. बीकानेर की सांस्कृतिक विरासत लोकनाट्य रम्मत (अमरसिंह राठौड़ की रम्मत व हेडाऊ मैहरी की रम्मत) पर शोधपरक कार्य –

बीकानेर की रम्मतें

बीकानेर दूसरी काशी। सारस्वत भूमि। यह शहर रणबंका ही नहीं, रसबंका, रंगबंका भी रहा है। यहां मेले–मगरिये, पर्व–उत्सव, तीज–त्यौहार, रास–फाग, खेल–तमाशा, व्रत–उपवास, हरजस–कीर्तन, रातीजोगा–जागरण, उपासना–अनुष्ठान लोकजीवन की सांसे रही है। सोनलिया धोरों की यह धरती रंग–रस–रूप की धरती है। राजस्थानी के वरिष्ठ कवि श्री कन्हैयालाल सेठिया ने इस धरती का गुण–गान सही किया है :

आ तो सुरगां नै सरमावै
ई पर देव रमण नै आवै
ई रो जस नर–नारी गावै
धरती धोरा री।

सचमुच सावन–फागुन में बीकानेर की धरती देव रमण की धरती बन जाती है। जैसा रसीला यहाँ का सांवन है, वैसा ही रंगीला यहाँ का फागुन है। इस मौसम में बसन्त यहाँ बरसता है। प्रकृति पीले–पतझड़ी पैरहन उतार हरियल चुनरी में लिपट जाती है। बाग–बगीचे इन्द्रधनुषी फूलों–कलरवी संगीत गुंजते है, तो चंचल पशु थिरक–थिरक नाच उठते है। धरती रग में डूब जाती है–प्रकृति रस से छलक जाती है। हवा नशीली हो जाती है–दिशाएं खुमार में डूब जाती है। ऐसे में बीकानेर के बालुई स्वभाव व कोमल प्रकृति वाले नर–नारी भला खामोश कैसे रह सकते है? वे भी प्रकृति के इस रंगोत्सव में रंग–रस जाते है। डूब जाते है अन्तर्मन से इस रंग–रस रूप के त्यौहार में। गुनगुना उठते है–पराग के गीत, करने लगते है होली के हुडदंग। तन–मन झूम उठता है–रोम–रोम पुलक जाता है।

इसी मस्ती के आलम में रंगीले–रसीले–सुरीले वातावरण में मंचित होते है बीकानेर के लोकनाट्य। बीकानेर मे पहिले तुरकिलंगी आदि लोकनाट्य भी होते थे पर अब रम्मत, ख्याल और नौटंकी लोकनाट्य ही मंचित होते है।

बीकानेर के लोकनाट्यों के कथानाक मुख्यतः ऐतिहासिक, सामाजिक, धर्मिक संयोग–वियोग, प्रकृति–चित्रण, सौन्दर्यमूलक, सुधार–भाव, राजनैतिक व्यंग्य, सता–व्यवस्था पर प्रहार, सम–सामयिक जीवन के अभाव–अभियोग, भ्रष्टाचार–मंहगाई पर कटाक्ष, बिखरते

परिवार–टूटते रिश्तों के दंश, सूखती संवेदना–मरती मानवता के दर्द, कुरीतियों–अंधविश्वासो के संकट, व्यापार सगाई–शादी के कष्ट आदि भावनाओं पर आधारित होते है।

''अमरसिंह राठौड़ की रम्मत''

कथा प्रधान रम्मतों में एक प्रमुख रम्मत है–अमर सिंह राठौड़ का ख्याल। इस रचना का सृजन संवत् 1911 में बीकानेर के मोतीलाल सैन ने इन्दौर में किया था–

संवत् उन्नीस सौ ग्यारहवें, अमरसिंह को ख्याल।
सुभग नग्र इन्दौर में ज्योड़यो मोतीलाल।।
मोती सुत है गंद को, सब गुणियन का दास।
सैन बंस ऊपनो बसे बीकाणे बास।।

यह रम्मत फाल्गुन शुक्ला 12 की रात को आचार्यों के चौक में लगभग 125–150 वर्षों से की जा रही है। रम्मतों या ख्यालों के प्रारम्भ होने का वर्ष बताने वाला अब कोई नहीं है। बस सभी यही कते है कि 150–200 वर्षों का इतिहास ही है इनके आयोजित होने का। इसकी निश्चित तिथि या वर्ष तय करने वाला कोई अभिलेख उपलब्ध नहीं हो पा रहा है।

कथानाक :

अमरसिंह के ख्याल का कथानक ऐतिहासिक आधार लिए है। अमरसिंह राठौड़ नागौर के राजा तथा वीर पुरूष थे। उनकी वीरता, शौर्य एवं पराक्रम की शोहरत उस काल से लेकर आज तक पूरे भारत में फैली हुई है। अमरसिंह बादशाह शाहजहां के दरबार में सुप्रतिष्ठित मनसबदार थे। उन्होंने मुगल दरबार के लिए दूर–दूर के किल फतह किए थे। उनका हाथ सदा तलवार पर रहता था और पाँव पागड़े में। जीत उनकी संगिनी थी उनके पराक्रमी–प्रभावशाली व्यक्तित्व तथा उनकी सफलता व दिनों–दिन बढ़ती प्रसिद्धी के कारण अन्य कई दरबारी और विशेषतः बादशाह शाहजहां का साला सूबेदार सलावत खां उनसे ईर्ष्या रखता था। वह इसी फिराक में था कि कब अमरसिंह कोई चूक करें और वह उन्हें अपने हाथ दिखाए।

अमरसिंह का हाडौती के हाडाराव की कुंवरी से आषाढ़ सुदी नवमी को विवाह होने वाला था। अतः वे शाहजहां के पास एक माह का अवकाश लेने गए। बादशा ने पहिले तो कहा कि सूबेदार सलावत खां से अनुमति लो जो सतर खान बहत्तर उमराव का सूबेदार है। इस पर अमरसिंह उनके बुरे व्यवहार का हवाला देते हुए उसके पास जाने से इन्कार कर देते हे। उन्हें सिर्फ सात दिन की छुट्टी दी जाती है। पर चौदह दिन बीत जाने पर भी नव–विवाहित अमरसिंह

व्यस्तताओं के कारण नहीं लौटे। सलावत खां को अवसर मिल गया। उसने भरे दरबार में बादशाह को भड़काया कि अमरसिंह हाडी रानी से विवाह करके मगरूर हो गया है– नारी के जाल में फंसकर फर्ज को, हुक्म को भूल गया है। वह तो सदा खुद को आपके बराबर समझता है। इस बात का भी डर था कि अमरसिंह फौज को फौड़ लेगा तथा दरबार में बीड़ा डालकर चुनौती दी जाती है कि कोई मर्द हो तो इसे खाओ तथा अमरसिंह को मार डालो। पर यह भी डर है कि मारवाड़ के वीर राजपूत मिलकर जंग छेड़ देंगे। अतः बादशाह अपना हरकारा अमरसिंह को बुलाने भेजता है।

हरकारा बादशाह का परवाना अमरसिंह को देकर आगरा चलने का अनुरोध करता है। पूछने पर दरबार के हालात बताता है, सलावत खां का इरादा समझाता है तथा लड़ाई को टालने का प्रयास करता है। सलावत खां के कपटी व्यवहार के प्रति सतर्क करता हुआ साथ में सेना लेने का सुझाव देता है क्योंकि वहां आप अकंले हांगे तथा उधर हजारों तुरक होंगे। अमरसिंह जवाब देता है कि बीस हजार भेड़ें भी इस सिंह का क्या बिगाड़ लेगी? हरकारा समझाता है कि वीर पुरूष तो सदा बेपरवाह–गाफिल रहता है और नीच अवसर देखकर झुक कर मार करता है। आप अपना बदन बचाएं।

नवविवाहिता हाडी राणी यह समाचार सुनकर अत्यन्त दुःखी हो जाती है तथा देवी–देवताओं से अमरसिंह को बादशाह के कोप से बचाने की विनती करती है तथा पहली नवल री तीज–त्यौहार छोड़ आगरा न जाने का निवेदन करती है, बिलमाती है। पर सिंह शूर टरसी नहीं की मान्यता वाले अमरसिंह नहीं मानते तो रानी बादशा के कपटी व्यवहार से सावधान रहने की चेताती है। दगाबाजों से सावधान रहने का कहती है। अपशकुन पर अपशकुन होने पर प्रभात जाने का अनुरोध करती है। अमरसिंह कहते है कि नाराज बादशाह चार लाख का दण्ड मांगेगा, तो हाड़ी रानी अपने हार की चार लाख की एक लड़ तोड़ कर देने का प्रस्ताव रखती है पर नमक हलाल अमरसिंह – ''सेन चून के कारणे स सिर आवे काम'' परम्परा में विश्वास रखने वाला राठौड़ नहीं मानता। वह कहता है।

लड़े एकला खेत भेड़ां भाग सी
शेर पड़े ललकार कवेड़ी जाग सी।

रणबंका राठौड़ कचेड़ी जाकर दहाड़ता हैः–

हलकारे हेलो करयोस म्हे आया रातो–रात
बंध्याज कांकण–डोरड़ा म्हारे देणी रह गई जात
निजरां देख्यां चुगलनेस म्हे तुरत दिखावां हात।

सलावत खां से विवाद बढ़ने पर अमरसिंह कटारी से उसका पेट चीर देता है। भरी कचहरी कांप उठती है। बादशाह के सिंहसन का पकड़कर पाया हिलाया, बादशाह डर कर हरम में भाग गया। सब डरते भाग गए।

अपने इकलौते भाई सलावत खां की सरे कचहरी हत्या तथा बादशाह के डरकर भाने का सुन हुरम गरज उठी – धिक्कार उसने बादशाह को :

इस जीने से मरणा अच्छा सुणो बादशा बात
बीबी बणकर बैठो महल में ज्यूं तिरिया की बात
हात में चूड़ी पहनो एक ज्यूं बैठों दोनों।

बादशाह कहता है–मैं अपने दरबार के ''शूरवीर मीर बंका'' को एकत्र कर एक–एक सिपाही को पाँच–पाँच हथियार दे, सब हाट–बाट और नाके बन्द कर अमरसिंह को पकड़ाऊँगा, चिमटे से खाल खिंचा कर चक्की में पिसवाऊँगा। खूटे से बंधवाऊँगा, चाक पर चढ़वाऊँगा तथा उसकी खाल में भूसा भरवाऊँगा–तभी खाना खाऊँगा।

बादशाह अमरसिंह के साले अर्जुन गौड को पाँच लाख का परगना–सत्तर पीढ़ी तक भोगने का ताम्रपत्र देने का प्रलोभन देता है। अर्जुन गौड़ अमरसिंह का सीस काटकर लाने का बीड़ा उठाता है। वह अमरसिंह को कहता है कि मुझ पर भरोसा करो–हम मिलकर बादशाह का सर्वनाश करें।

मैं साला और तू बेन्योई बेन परणली मेरी
कुंभी पाक नरक में जावे बुरी करू जो तेरी।
सालग राम सीस पर मेरे गंगा गीता हाथ
तिरिया सहित नरक में जावे करे दगे की बात।

इस पर अमरसिंह अर्जुन गौड़ के साथ चल देता है। महल का दरवाजा बन्द था खिड़की खुली र्थी स्वाभिमानी सर काट सकता है पर झुक नहीं सकता – इसलिए अमरसिंह ने खिड़की में पहले पाँव रखे। अर्जुन इसी अवसर की ताक में था, उसने धोखे से अमरसिंह का शीश और

धड़ अलग–अलग कर दी। पर मरते–मरते अमरसिंह ने कटार से अर्जुन के नाक–कान काट डाले। अमरसिंह के साथ आये किसने नाई ने जाकर अमरसिंह के भतीजे रामसिंह को सारा हाल सुनाया। सामंतों को मारकर लाया हुआ अमरसिंह का कटा शीश दिखाया। बारह वर्ष का रामसिंह क्रोध से कालावतार बन गया तथा आगरा की ईंट से ईंट बजाने को तैयार हो गया। उसने अमरसिंह की रानी – अपनी चाची से आगरा मिटाने और बादशाह का सर्वनाश करने की अनुमति चाही। हाड़ी राणी ने कहा – अभी तुम बारह वर्ष के हो बादशाह के पास नवलख नेजा है तथा दसलख तंबूर फरूकते है। इस पर रामसिंह ने कहा–छोटो कांई सांप को.....

मैं बेटा राजपूत का स माजी जहर जरा मत जाण
पकड़ लेऊँ शहजहान पहराऊ घाघरो।

इस पर हाड़ी रानी स्वयं मर्दाना वेश धारण कर आगरे पर आक्रमण करने का मानस बनाती हे। पर रामसिंह और भाई जसवन्तसिंह रहते वह इसे कलंक मानता है। हाड़ी रानी उसे मुगलों की कपट से सावधान रहने की सीख देती है।

शेर खां पठान अमरसिंह का पगड़ी बदल भाई था। अतः हाड़ी रानी सारे हालात बताते हुए सहायता के लिए मार्मिक पत्र लिखती है। शेर खां ''भाया हंदी भीर'' को चल पड़ता है। वह अपने पुत्र को साथ ले आगरे के दरबार में जा बादशाह को ललकारता है। बादशाह ने धमकाया–डराया पर पठान नहीं डरे–मरने–मारने को तैयार। लोभ–प्रलोभन भी नहीं झुका पाया।

ल्यावो जसवंत सिंह कूं स मैं बखत देऊँ नागौर तो जवाब मिलता है :

उतनदार नागोर का स जी तू क्या बखसे अंधा
गली–गली में तुझे नचाऊं डाल गले में फंदा।।

रामसिंह राठौड़ों, चांपा, कूपा और मेडतियों की सेनाओं के साथ वीर–योद्धा ऊदा–जेता–अखेसिंह को लेकर आगरा पर आक्रमण करने चला। शेर खां भी अपनी फौज लेकर आ मिला। दोनों में ठन गई कि पहले हमला कौन करें? फिर तय हुआ कि एक साथ ही हमला बोल दो। हमला किया, बादशाह हार गया। हिन्दुओं की गाय समझकर जान बख्श दो ऐसी गुहार की कहा–

'जीत तुम्हारी हुई रामसिंह अब हुई हमारी हार।'

शेर खां पठान और रामसिंह जीत गए। बादशाह को माफ कर वापस चले आए। रामसिंह को नागौर का राजा बनाया गया।

लोक नाट्य रम्मत अमरसिंह राठौड़ की प्रस्तुती देते कलाकार

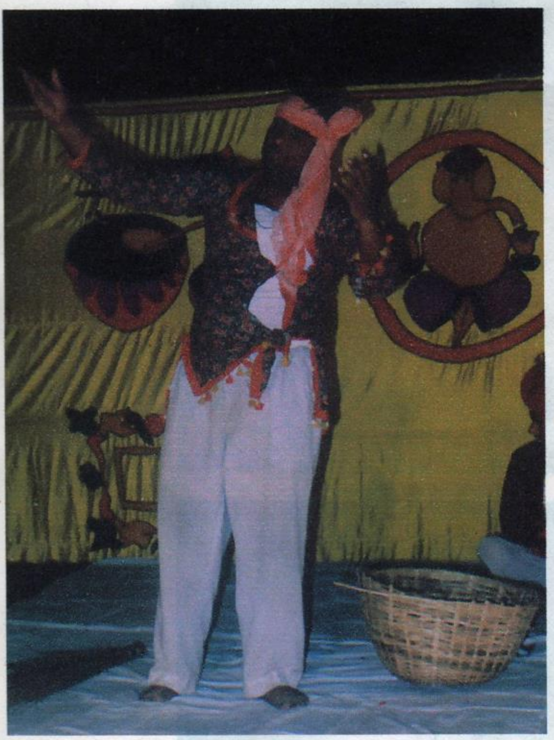

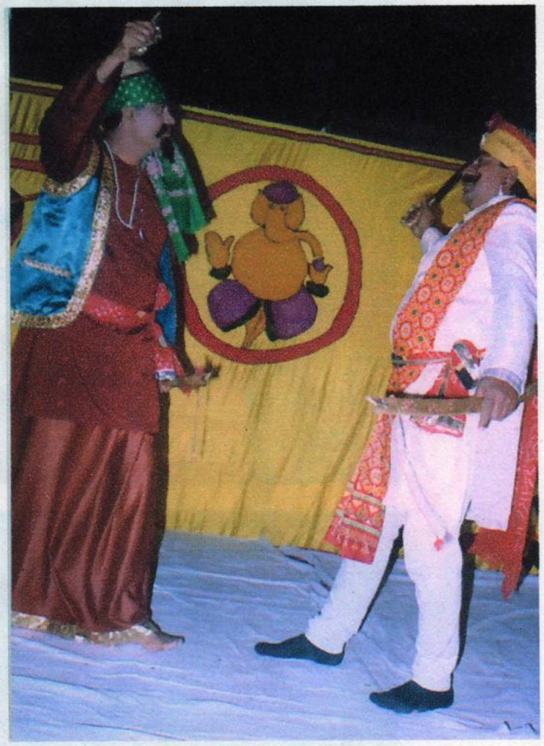

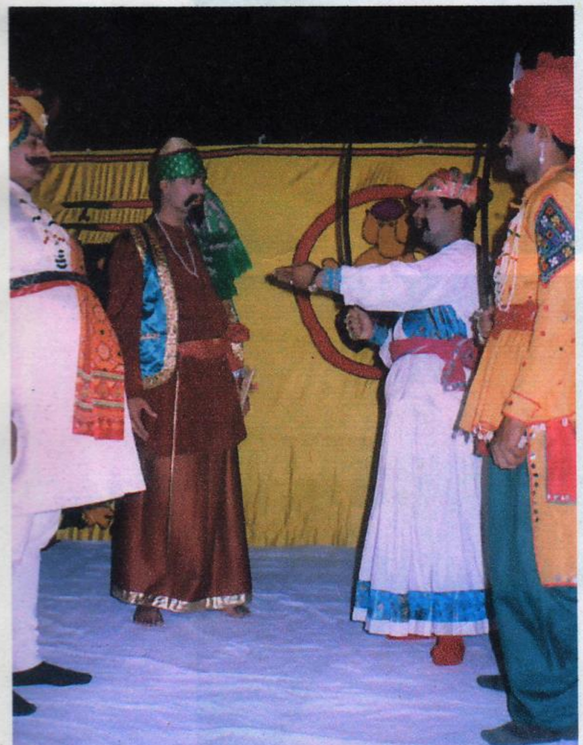

श्री देवीलाल सामर ने लिखा है, ''लोकधर्मी ऐतिहासिक नाट्यों के लिए यह बिल्कुल आवश्यक नहीं है कि वे अपनी विषय सामग्री किसी लिखित इतिहास या तथ्य सिद्ध स्त्रोतो से प्राप्त करें। जो गाथा समाज को हृदयंगम हो चुकी हो तथा जिसका जन–जीवन से धनिष्ठ लगाव हो, वही इन नाट्यों का इतिहास बन जाता है। विश्वास एवं श्रद्धा पर आधारित ये पात्र तथ्य–अतथ्य से कोई सम्बन्ध नहीं रखते है।'' यह बात इस लोकधर्मी ऐतिहासिक नाट्य पर भी लागू होती है।

कथानक नागौर के राजा तथा शाहजहां के काल से संबंधित है। अतः ऐतिहासिक आधार लिए है। एक सांगीतिक कृति एवं लोकनाट्य की रचना की दृष्टि से कथानक लचीला होते हुए भी कसावट बनाए हुए है। श्री देवीलाल सामर का अभिमत है। कि ख्यालों का कथानाक की गुथा हुआ नहीं होता। पर मेरे मत में इस ख्याल का कथानक काफी गुंथा हुआ है। कथा सहज प्रवाहशील है तथा प्रभावशाली है। कथानक में कहीं अस्वाभाविक झोल या झटका नहीं आता। धीरे–धीरे विकसित होती कथा चरमबिन्दु तक पहुँचती है। लोकनाट्य के कथानक की जो विशेषताएँ एवं गुण होते हैं वे लगभग सभी इसमें समाहित है। कथानक काफी इतिहास सम्मत है। कई जानकारियों पर शोध की आवश्यकता है। श्री देवीलाल सामर ने ख्याल ने कथानकों के बारें में लिखा, राजस्थानी ख्याल में प्रधान कथानक के चहूँ ओर प्रासंगिक कथानक घूमते है, जो कभी–कभी एक दूसरे से संबंधित भी नहीं होते और कभी मूल नाट्य–प्रसंग को क्षति भी पहुंचाते है।'' पर इस रम्मत में कोई प्रासंगिक कथानक नहीं। कथासूत्र कसे एवं जुड़े है।

लोकनाट्य विद्या के अनुसार ही दृश्य बदलते जाते है तथा कथा में कही बाधक नहीं बनते। प्रभाव की दृष्टि से भी कोई व्यवधान नजर नहीं आता।
पर संवादों एवं वर्णनों को बार–बार दोहराने से कथावधि का विस्तार हो जाता है अतः कभी–कभी प्रस्तुति करते समय कहीं–कहीं कटौती करनी पड़ती है। एक दो स्थलों पर अश्लीलता झलकती है अतः उन स्थलों को छोड़ देना ही श्रेयस्कर है।

चरित्र :

चरित्र चित्रण की दृष्टि से यह रम्मत सफल कृति है। अमरसिंह राठौड़, रामसिंह तथा शेर खां पठान सभी वीर पुरूष है। सभी कर्तव्यनिष्ठ एवं नमक हलाल है। वे स्वाभिमानी, निर्भीक एवं पराक्रमी है। आन–बान–शान पर मर मिटने वाले है। जुल्क और अन्याय का विरोध करने

वाले तथा प्राणों की परवाह न कर निरंकुश सता से टकराने वाले हे। हजारों दरबारियों–सिपाहियों के बीच सिंह की तरह चुनौति देने वाले तथा लड़कर उन्हें पराजित करने वाले महाबलि है। अमरसिंह ने भरे दरबार में अकेले ने बादशाह के साले कपटी, चुगलखोर सलावत खां को कटार से मार डाला पर बादशाह या किसी भी दरबारी–सामन्त की उसका सामना करने की हिम्मत नहीं पड़ी। अमरसिंह अपनी शक्ति एवं साहस के बारें में स्वयं कहता है–

धरती धूजे पग धरयांस रे खांडे आग झरन्त
मदमाता गज घूमता सरे ज्यांरा तुरन्त उखाडां दन्त
चिमठी सूं चूरा करांसजी रूपया रा सब अंक
केहरि मारां कांकरीस कोई सामा पगां निसंक।।

उन्होंने अपने शोर्य–शक्ति से अनेक गढ़–किले–स्थान जीते।

प्राण जाय पर वचन न जाहि – में विश्वास करने वाले अमरसिंह को नवविवाहिता रूपसी हाड़ी रानी रोकना चाहती है, तो अमरसिंह का कथन–

बिलमांया बिलमां नहीं तो सो बुरी बलाय

सिंह शूर टरसी नहीं बोली ऊपर जाय।।

अमरसिंह ने नमकहलाली का प्रमाण देखिए।

सेर चून के कारणे स राणी ओ सिर आवे काम।

वे भावना से कर्तव्य को ऊँचा मानते है अतः हाड़ी रानी को विदा के समय समझाते है–

नैणां नीरज थामलो मानो म्हारी बात
कायर मत होय कामणी राजपूती लाजै जात।

हिन्दू कभी नारी पर हाथ नहीं उठाता। अतः बीबी के यह कहने पर कि तू अकेला है–तुझे पकड़कर ''भूस भराऊ खाल'' तो अमरसिंह ने कहा–

हिन्दू धरम जिससे नहीं घालूं तिरिया ऊपर घाव।

शेर खां पठान का चरित्र भी प्रभावशाली है वह बारह हजार घोड़ों का धारक है पर अपने को सिर्फ मर्द सिपाही मानता है। वह मानवीय रिश्तों को सबसे ऊपर मानता है। वह हिन्दू राजा अमरसिंह का पगड़ी बदल भाई है–इससे दूसरे दरबारी उससे खार रखते है पर उसकी मान्यता है :

''बखत पड़े पर हाजर होवे वो है सच्चा भाई।''

वास्तव में उसने अमरसिंह की हत्या के बाद हाड़ी रानी ने बुलाया तो वह बादशाह का सब खैफ छोड़कर आया तथा अपने बेटे सहित दरबार में जाकर ललकारा। बादशाह ने पुकारा देखो पठान भाग न जाय। तो शेर खां ने कहा–

भागणवाले हम नहीं स रे सुण मादर कम जात।

बारह हजार सूं ले ऊं मोरच देख हमारा हाथ।

बादशाह समझाता है तू पागल होकर मेरी नौकरी छोड़ देगा तो भूखों मरेगा। पर भाईपन का कर्ज–फर्ज अदा करने के लिए वह सर्वस्व त्यागने को तत्पर था।

शेर खां भाई अमरसिंह की मौत का बदला लेने के लिए अपनी सेना सहित रामसिंह की सेना में आ मिला और दोनों चाहते है बादशाह पर पहले वार वह करें तो शेर खा ने कहा :

पहली हाथ पठाण का सरे करे बादशा जंग

बदला लेऊँ अमरसिंह का शिर पगड़ी का संग।

अपनी जान पर खेल कर भी शेर खां पठान ने हिन्दू राजा के साथ भाईपन निभाने के लिए मुगल बादशाह को हराया। मानवता और भाईचारे का श्रेष्ठ उदाहरण पेश कर अपना उज्जवल चरित्र पेश किया।

अमरसिंह का भतीजा 12 वर्षीय रामसिंह भी नरसिंह था।

म्हाने जाणै पृथ्वी स रे ओर जंगल का शेर

केई जंग म्हे आगे जीत्या लिया पुराना बैर।

अमरसिंह की हत्या का बदला शेर खा पठान के साथ मिलकर उसने बड़ी वीरता से लिया–

ओळा ज्यूं गोला बरसाऊ बिजली ज्यूं समशेर

तीन घड़ी झड़ी लगाऊं करो बादशाह जेर।

रामसिंह की राजपूती आन–बान की खुद बादशाह ने प्रशंसा की :

रंग है राठौड़ कूं काट करी नहीं भंग

रखा तखत का कायदा फिर क्या करते जंग।

श्रेष्ठ चरित्र वही है, जिसकी दुश्मन भी तारीफ करें।

ऐसा ही निडर, कर्तव्यनिष्ठ, मर्यादापालक पितृ–आज्ञा पालक शेर खां पठान का बेटा–जो अपनी जान की परवाह न करते हुए अपने अब्बा हुजूर के पगड़ी बदल भाई के धोखे से की

हत्या का बदला लेने अपने अब्बा के साथ दरबार में जाकर बादशाह को ललकारता है। युद्ध करता है। किसना नाई भी सच्चा वीर तथा राजभक्त हे। अपने स्वामी का कटा सिर, अनेक सामंत मारकर दरबार से ले आता है। हरकारा भी समझदार है तथा अमरसिंह को सतर्क करता है–समझाता है–

रजी तो सिर पर चढेस
राजा टोला ठोकर खाय
मोटा सोही जाणियेस
राजा छोटे से गम खाय।

बड़ी हुरम का इकलौता भाई सलावत खां–दंभी, घमंडी तथा ईर्ष्यालु था। वह कपटी तथा चुगलखोर था। उसकी सोच थी–

सबी मुलक में जमीं हमारी डरते नमक हराम

मेरी बराबरी करने वाला राजा नहीं नवाब।।

अमरसिंह का वर्चस्व उससे सहा नहीं जाता। वह उसे हटाना चाहता है–

अमरसिंह से आंट हमारी बीत दिनों की बात

कभी क आवे चूक मेंतो तुरत बताऊं हाथ।

वह चालक तथा कांइया भी है। अमरसिंह को कहता हे कि चुगली किसी और ने खाई है, मैने तो बात सुधारी है। फिर विवाद बढ़ने पर सलावत अमरसिंह के हाथों मारा जाता है। हाड़ी राणी की नजर में बादशाह :

मुख मीठो कपटी घणों घाले पीठ पर घाव।

अमरसिंह का साला अर्जुन गौड़ एक सता का भूखा चरित्र है। पाँच लाख के परगने के लिए उसने अपने सगे बहनोई को धोखे और कपट से हत्या कर दी।

बादशाह शाहजहां का चरित्र इस लोकनाट्य में स्तरीय नहीं है। वह कान का कच्चा है तथा सलावत खां के हाथों नाचता है। बड़ा ही डरपोक तथा कायर है। सलावत की हत्या के बाद अमरसिंह से डरकर हरम में भाग जाता है। रामसिंह और शेर खाँ पठान से हारने के बाद वह बिलबिला उठता है।

कहे तो लिख दूं मुलक परगना अबके जान बचाय

मुझ कूं छोड धरम के खातिर हिन्दू तेरी गाय।

इज्जत मेरी हाथ तुम्हारे मुख में लेऊँ घास।

अपनी जान बचाने के लिए वह सारा दोष सलावत खां पर डाल देता है।

इस रम्मत में दो नारी पात्र है– हाडी रानी और शाहजहां की बेगम बड़ी हुरम।

हाड़ी रानी अट्ठारह वर्षीय नवयौवना तथा नवविवाहिता थी। वह लक्षण बतीसी गुणघणा वाली अति सुन्दर तथा सुस्वभाव की थी उसके विवाह को अभी पखवाड़ा भी नहीं हुआ कि शाहजहां के दरबार का हरकारा बुलाने आ गया–अमरसिंह को। हाड़ी राणी गणेश–सरस्वती की पूजा–वन्दना कर आए संकट को टालना चाहती है। उसके मन में पति के साथ नवल तीज का त्यौहार मनाने की तथा संग में यौवन बिताने की स्वाभाविक प्रबल कामना है। वह पति प्रेम की प्यासी है :

प्रीत बिना प्यारी किसी जला घंट बिन नाद

निमक बिना सुण सायबा भोजन किस्सा स्वाद।

पर **''निरपत जाग्यो नींद में ऊपर आधी रात''** हाड़ी रानी ने जागने का कारण पूछा। अपने फर्ज के प्रति वफादारी प्रगट करते हुए अमरसिंह ने कहा :

सुण हाडी तो सूँ कहूँ थे हो चतुर सुजाण

चाकर चकवो चतुर नर तीनों के घर हाण।

मुझे नौकरी पर जाना पडेगा। वहां चुगलखोरों का राज्य है, कपट का साम्राज्य है। तो अपनी मन की समस्त भावनाओं–कामनाओं को दबाकर अरदास करती है।

कपट भरयो गढ आगरो सरे कोय रह्यो बदसाय

कांई भरोसो सांप रो स रे बिन छेड़यां डस जाय।

अमरसिंह को हर हालत में जाना था। रानी के दिल पे जो गुजरी वर्णनातीत है:

सीख ज मांगे सायबो लागी बदन बिच लाय

बोलूं ये दासी जीभ ने किण विध कहूँ सिधाय।

उसे यह भी चिन्ता खाये जा रही है कि – ''आप अकेला राजवी जी, वहां छै तुरक हजार।'' तो अमरसिंह समझाते हैं– **''मिनकी मूसे ना डरे सरपां मींडक अहार।''**

फिर वह धीरज धार पति को सावधान रहने की सलाह देती है। वहाँ शराब, अमल, भगतण, भांड, कलालण्यां में न बिलमने का समझाती है। वह सामने आए अपशकुनों को देख घबराती है। वह पतिव्रता है, पति पर सर्वस्व न्यौछावर करने को तैयार है। नवलखे हार की एक

लड़ तोड कर बादशाह का दण्ड चुकाने तथा सरदारों को साथ भेजने के लिए पिता से निवेदन करने का प्रस्ताव करती है। अमरसिंह द्वारा रूकने का न मानने पर उसमें छिपी नारी फुफकार उठती है। क्योकि अभी तो कांकण डोरड़ा नहीं खुले–जातें भी नहीं लगी–

मरजो बाबल छत्रसाल अर दूजी म्हारी माय
चाकर चरवादार केस म्हाने दीनो पल्ले लगाय।
दीनी पल्ले लगाय जमारो हारिया।

कितना दर्द, कितनी आग, कितनी प्यास भग रही थी नववधू। ऐसे में ऐसा विस्फोट स्वाभाविक है। फिर वह अपनी भावनाओं को दबाकर अपनी कटार ले जाने का कहती है जो **"सजना री रखवाल क दुरजन साल है।"** अमरसिंह रवाना होना चाहता है तो रानी का हृदय फट पड़ता है।

आवण–जावण कर रह्या जीव धरे नहीं धीर
छाती फाटे रावजी म्हारा नैण थमे नहीं नीर।

अट्ठारह वर्ष की हाड़ी रानी मनाविज्ञान को भी समझाती है, तो उस समय की सामाजिक–राजनैतिक बुराइयों को भी समझती है–

बरण–बरण में फेर है बिस–बिस को खाय
मोती कहे महाराज सूं सगोई दगो कर जाय।

ऐसा ही होता है सत्ता लौलूप हाडी रानी का भाई अर्जुन गौड़ अपने बहनोई अमरसिंह की धोखे से हत्या कर देता है। वह नीति की सीख भी देती है।

गुड़ दीना मर जाय विष क्या दीजिए।

हाडी रानी रूपसी नवयौवना ही नहीं वीरांगना भी है। अमरसिंह की उसी के भाई द्वारा धोखे से हत्या हो जाने पर वह अति दुःखी होती है। पतिभक्त रानी अपने ही लालची भाई को गुस्से से शाप देती है–

"लालच करके नाक कटायो मोटो कियो पाप
निरवंश जाज्यो बीर को लागे बेन शराप।"

वह पति के साथ सती भी होना चाहती है पर बारह बरस के छोटे रामसिंह को देख–वह मर्दाना वेश में युद्ध करने को तैयार है। रामसिंह से कहती है :

तखत करौ चकचूर वा चढ चालूं थारी साथ

माथे बाँधू पागड़ी स मैं लेऊँ दुधारा हाथ।''

लेऊँ दुधारा हाथ क घोड़े मैं चढूं

जाय पडूं रण खेत क फौजां बीच लडूं।''

हाडी राणी कवि हृदय भी है। वह अमरसिंह के पगड़ी बदल भाई शेर खां पठान को मार्मिक पत्र लिखती है।

तन का कागद मैं किया स अर नैणा भरी दवात

सुरमा की स्याही करी स कलम लिखे जूं हाथ।

देवर शेर खां को वे दिन याद दिलाती है, जब वह बिन भाई अमरसिंह के रह ही नहीं सकता था। वह प्रीत याद दिलाती है। बड़ा मनोवैज्ञानिक प्रभाव डालती है। वह विवेकशील भी है–शेर खां की मजबूरी समझती हुई लिखती है–

तुम नौकर शहाजान का स म्हाँसू रूठ्यो राम।

आओ तो ओ बखत है नहिं तो भली सिलाम।।

ऐसा भावपूर्ण पत्र पढ़ने के बाद भला शेर खां कैसे रूक सकता था?

शाहजहां की बेगम का चरित्र भी प्रभाव डालता है। सलावत खां की कत्ल के बाद बादशाह डर कर हरम में भाग जाता है, तो हुरम उसकी तथा उसके दरबारियों की कायरता पर झल्ला उठती है। वह पूछती है तेरी बादशाही कहाँ गई? मेरी बहोतर मर गये, कहाँ गये सतर खान ? वह ललकारती है :

इस जीने से मरणा अच्छा सुणो बादशा बात

बीबी बण कर बैठो महल में जू तिरिया की जात।

हात में चूड़ी पहनो, एक ज्यू बैठों दोनों।''

फिर वह बादशाह की कायरतापूर्ण झूठी योजनाएं सुनकर गरज कर कहती है–

''बेगम की सुन ले बात और समशेर दे मेरे हाथ।''

वह स्वयं नागौर पर हमला कर उसकी धूलधाणी करने को तैयार हो जाती है।

अमरसिंह से भी वह करारे सवाल–जवाब करती है। वह अमरसिंह को ललकारती है–

देख हात तिरिया तणांस मैं खेंच खड़ी तलवार।

रामसिंह की वीरता देख वह उसकी प्रशंसा करती है—

रामसिंह कूं रंग है स रे रख दिय तेरा मान

रख दिया तेरा मान तखत पर ना चढा।

सब राठौड़ो के गुणों की सराहना करती है।

"रंग है उन राठौड़ कूं कार करी नहीं भंग।"

वह अर्जुन गौड़ के दुर्गुणों की भी निन्दा करती है, उसकी दगाबाजी पर लानत फेरती है—

दगा किसी का सगा नहीं है गौड हुवा जुग भांड

नाक कटायो आपको करी बैन कूं रांड।

वह अमरसिंह की भी प्रशंसा करती है। इस प्रकार बीबी का चरित्र स्वाभाविक व प्रभावशाली है।

साहित्यक स्वरूप :

ऐतिहासिक कथानक पर तथा एक अमर वीर के जीवन पर रचित "अमरसिंह राठौड का मारवाड़ी खेल" एक स्तरीय लोकनाट्य एवं उत्तम साहित्यिक कृति है। इसमें लोकनाट्य की सभी विशेषताओं के साथ—साथ अच्छा साहित्यक स्पर्श भी मिलता है। राजस्थानी भाषा में रचित पद्यात्मक कृति प्रबन्ध काव्य है। बीकानेर के वरिष्ठ कवि श्री गौरीशंकर आचार्य "अरूण" इसे खण्ड कार्य मानते है। उनका अभिमत है कि अमरसिंह की रम्मत में खण्ड काव्य के अधिकांश तत्व मिलते है। डा. मदन केवलिया इसे राष्ट्रीयता की भावना—प्रसारक लोकनाट्य स्वीकारते है। उनका मत है कि इसकी रचना ऐसे समय में हुई जब भारत स्वतन्त्रता के लिए आन्दोलन करने को कसमसा रहा था। राजस्थानी के वरिष्ठ कवि श्री शिवराज छंगाणी वीर रस काव्य ही नहीं, अपितु रसों का त्रिवेणी—संगम मानते है। उनका कथन है कि इसमें साहित्य—सम्मत कई रसों का सांगोपांग परिपाक है।

साहित्य—सुषमा :

अमरसिंह नाराज हुए शाहजहां के उस दरबार में अकेले जा रहे हैं, जहां "सब ही राजा करे नौकरी हाजर खड़े नवाब।" अमरसिंह की शक्ति एवं वीरता का कैसा सुन्दर वर्णन किया है—

"काई करे सौ सिंह कोस रे भेड़ां बीस हजार
हाथ्यां पर हाथल फिरे स कुण लेवे सिंह न मार।"

सोन्दर्य और यौवन का ज्वार शीघ्र ही ढल जाता है। इस शाश्वत सत्य को नवयौवना हाडी रानी किस चतुराई से अभिव्यक्त करती है–

है जोबन री बहार क दूध उफाणज्यों
जात न लागे बार यही कन्थ जाण ज्यो।

उद्दाम यौवन की उपमा व समानता अत्युत्तम बन पड़ी है :

"आभै इन्दर गड़हड़े रण में गरजे सूर
गौरी गरजे सेज में जोबन में भरपूर।"

हाडी रानी के अनुपम सौन्दर्य का बखान भी अनुपम है :

मुख पर बरसे नूर के चनके दामणी
ऐस सुघड़ रची रूपक चतुर चानणी।

जोबन में भरपूर हाल नादान है
ज्यूं पूनम रो चाँद क उग्यो भान है।

प्रेम जीवन का आधार है–प्रेम बिना सब शून्य है–द्रष्टव्य है–

प्रीत बिना प्यारी किसी जलो घंट बिना नाद
निमक बिना सुण सायबा भोजन किसा स्वाद।

प्रेम जीवन की सार्थकता है, बिना प्रेम अंधा कुंआ है, सुखा पनघट है :

कुवे पनघट ना चढ़े जाको सूखे नीर
चौपड़ में पासा नहीं, सतरंज बिना वजीर।।

सावन–भादवा प्रेम का उत्सव है, मिलन का त्यौहार है–अंग से अंग लगायलो की पुकार है–प्रकृति का गान है :

भादू बरसे सायबा पगां विलूंबी गार
दरखत मीठी बेलड़ी पिव ने प्यारी नार।

"ज्यांका पड्या सुभाव क जासी जीव सूं" सच हे दुष्ट, नीच, निंदक, कभी अपना स्वभाव नहीं त्यागते–उनका हृदय–परिवर्तन असंभव है। असंभव घट सकता है पर नीच नहीं बदल सकता :

“तुम्बा कड़वाई तजे राजा लहसन तजे कुबास

मीठा पण मिसरी तजे राजा चन्दन तजे सुवास

चन्दन तजे सुवास चुगल तो ना तजे।”

वीर पुरूष हजारों शत्रुओं से कभी नहीं डरता। वह तो बीस हजार भेड़ों के बीच स्वयं को सिंह समझता है। वीर सदा निर्भीक है–शत्रु तो उसकी शिकार है। भला बिल्ली चूहों से, सांप मेंढ़क से कब डरे है ?

पोंछा फिरेज बापड़ी कांई लेवे शेर ने मार

मिनकी मूसा ना डरे सरपां मींडक अहार।

हाडी राणी मुगल दरबार जाते अमरसिंह को सुरक्षार्थ अपनी बून्दी की कटार पेश करती है। कटार की धार का अनोखा वर्णन है।

“मिसरी जी को नाम है जाणे जुग संसार।

तीन पाठोती लोवण्यो दोय पठी दूधार।।

दोय पठी दूधार क माला बीच जड़ी।

जबर खुल्यां इण भांत सावण की लगी झड़ी।।

जैसे आकाश की बिजली धरती को चीरती पताल तक पहुँच जाती है, जैसे कालका शत्रुओं का सर्वनाश कर देती है, वैसे ही कटार शत्रुओं के लिए नखराली नागिन व बिच्छनी का डंग है। अनुपम वर्णन है कटार का।

सलावत खाँ ने भूल से सोये शेर को जगा दिया है, इस बात को अनूठी उपमा देकर चमत्कार पैदा किया है :

“मूंग भरोसे बापड़ो स बो काली मिरचां खाय।”

सलावत खां की हत्या के बाद बादशाह डर कर हरम में हुरम के पास भाग गया। इस पर क्रोधित हुरम की टिप्पणी बड़ी सटीक है :

तखत को लग गई स्याही, डूब गई पातसाही।

उक्ति गागर में सागर है।

बादशाह के सामने अकेले खड़े अमरसिंह के पराक्रम ओर आत्मविश्वास की अभिव्यक्ति अति सुन्दर है :

देख अकेला मैं खड़ा सरे डालूंगा भाड़

मेरी पीठ लाख सूर मानो कोटि मारवाड।

सारा दरबार कायरों का वास है। यह बात अमरसिंह हूरम को अनोखे अंदाज में बताता है :

देर–देर तू क्या करे स हुई फजर से स्याम

भटियारों से भरी कचेरी धुनियां और गुलाम।

अमरसिंह की हत्या के बाद हाडी रानी द्वारा शेर खां को लिखा पत्र साहित्यक उत्कृष्टता सिद्ध करता है। परम्परागत उपमान होते हुए भी कैसा नयापन है :

तन का कागद में किया स अब नैणां भरी दवात

सुरमा की स्याही करी स कलम लिखे जूं हाथ।

भाषा :

भाषा की दृष्टि से यह राजस्थानी भाषा की अच्छी कृति है। इसमें राजस्थानी भाषा का ऐसा स्वरूप है कि इसे समझने मे कठिनाई नहीं आती। राजस्थानी भाषा–भाषी के सिवाय अन्य भाषा के लोग भी इसे काफी समझ सकते है। भाषा पात्रानुकूल एवं भावनानुकूल है। जिस भाव एवं रस का प्रसंग है–भाषा ढल जाती है। भाषा में राजस्थानी के सिवाय–ब्रज, हिन्दी, उर्दू आदि के शब्दों के साथ–साथ संस्कृत के तत्सम शब्दों का भी प्रयोग हुआ है। राजस्थानी भाषा की लोकोक्तियां, मुहावरे एवं सूक्तियों के कारण भाषा प्रभावशाली बन गई है। पद्यात्मक रचना होने के कारण लयात्मक, गत्यात्मकता, धन्यात्मकता ने भाषा को कोमलता एवं सरसता प्रदान की है। भाषा कसावट लिए है पर कहीं–कहीं तुक मिलाने या छन्द के कारण अनावश्यक शब्दों का भी प्रयोग करने की मजबूरी रही है। भाषा में बिम्ब–विधान भी द्रष्टव्य है। वीर काव्य होने के कारण भाषा ओजगुण प्रधान है।

संक्षेप में यही कह सकते है कि भाषिक दृष्टि से यह रचना स्तरीय है तथा इसका स्वरूप ऐसा हे कि इसे बीकानेर के सिवाय राजस्थान में तथा अन्य प्रदेशों में भी प्रस्तुत किया जा सकता है।

संवाद :

अमरसिंह की रम्मत के संवाद गेय–संगीतात्मक व लयात्मक होते हुए भी कसे हुए एवं प्रभावशाली है। इनका गूंथन बेहतर है। संगीतात्मक होने पर भी कभी–कभी संवाद ढीले तथा लम्बे हो जाते हैं, अतः सही समय पर उचित शब्द या कथन या भाव प्रगट न होने से वांछित प्रभाव व असर कम हो जाता है, पर इस लोकनाट्य में ऐसा कम हुआ है। हाँ, छन्द–मात्राओं या टेर आदि को पूरा करने के लिए कई स्थलों पर अनावश्यक शब्दों का प्रयोग चाहे संगीत पक्ष की ताल–लय में सहायक हो, पर संवादी प्रभाव पर विपरीत प्रभाव डालते है। कई जगह तुक मिलाने के लिए भी उपयुक्त शब्द की बजाय अनुपयुक्त या अनावश्यक शब्द भी लगाना पड़ता है, जो प्रभाव को घटाता है। ऐसा इस लोकनाट्य में भी कई स्थलों में मिलता है। हलकारे का संवाद द्रष्टव्य है :

हजरत आप लिखा परवाना करके मन में सोर
भेजा आया हुकम के ताबे सावधान राठौड़।।

''करके मन में सोर'' संदर्भ से टूटता है। इसी प्रकार ''सरे'', ''कसरे'', ''स'', ''हा'', रे आदि का प्रयोग गाने में सहायक है, संवाद में नहीं।

कांई करे सो सिंह को सरे भेड़ां बीस हजार
हाथ्यां पर हाथल फिरे सकुण लेवे सिंह ने मार।

झेला में ऊपर की पंक्ति का आधा भाग दोहराने से संवाद ऊपर के संदर्भ से जुड़ कर प्रभाव में वृद्धि करता हैः

रेशम कसियो ढोलियौ कमर कसी तलवार
कामम कस रही कांचली कर सोले सिणगार।।
झेला–कर सोले सिणगार क हाजर मैं खड़ी
फूलां छाई रात क हीरा मांग जड़ी।

रम्मत से संवाद में कसाववट व स्फूर्ति के उदाहरण कई स्थलों पर मिलते है–यथा दरबार में टेर सलावट एवं अमरसिंह में, सलावत की हत्या के बाद–टेर बादशाह और हूरम जबानी बादशाह की में, टेर अमरसिंह और बीबी की में, टेर अर्जुन गौड और अमरसिंह की में, टेर रामसिंह और हाडी रानी के तथा टेर पातशाह और शेर खां के लड़के की आदि में संवादों में रवानी है–ओज

है–जोश है। कई स्थलों पर संवाद बड़े चुटकीले है। हां कहीं कहीं संवाद लम्बे अवश्य हो गए है–जो नाटकीय दीठ से ठीक नहीं है। संवादों में प्रयुक्त मुहावरे–सूक्तियां, व्यावहारिक अनुभव नाटक के प्रभाव को अच्छा बनाते है तथा गंभीरता प्रदान करते है।

सूक्तियाँ :

इस रम्मत में ऐसे दोहे या कुंडलियांश है, जो जीवन के गहरे अनुभव, जीवन का यथार्थ एवं सत्य से साक्षात्कार कराते है। शेर खां पठान कहता है।

वखत पड़े पर हाजर होवे वो है सच्चा भाई

हरकारे का कथन :

रंजी तो सिर पर चढ़ेस राजा ढोला ठोकर खाय
मोटा सोही जाणियेस राजा छोटे से गम खाय।

इसी अंजाद में वह पूर्व कथा के माध्यम से सावधान करता है :

सिंह फसायो स्यालियो स राजा देख कुए के बीच
मोटा तो गाफल रहे स राजा निबकर मारे नीच।

पति वियोगिनी तथा प्रेम विहीन नारी का रूपः

कुवे पनघट ना चढ़े जा मो सूखो नीर
चौपड़ में पासा नहीं, सतरंज बिना बजीर।

नीच एवं चुगलखोर आदमी के स्वभाव का कैसा सटीक चित्रण है :

तूम्बा कड़वाई तजे स राजा लहसन जे कुवास
मीठा–पण मिसरी तजे स राजा चन्दर तजे सुवास
चंदन तजे सुवास चुगल तो ना तजे।

ज्यांका पड्या सुभाव क जासी जीव सूं।

जीवन का कंटका कीर्ण मार्ग प्रशस्त करने की सीखः

मारग मां ही रूंखड़ो बंवल बोरड़ी थोर
इतरा तो काट्या भला बैरी, मारग, चोर।

अपने पराया का आज पता लगाना बड़ा कठिन है :

बरण–बरण में फेर है बिस–बिस को खाय
मोती कहे महाराज सूं सगोई दगो कर जाय।।

प्रकृति वर्णन :

लोकनाट्य ख्याल–रम्मत में परम्परागत रूप में लावणी, चौमासा, बारहमासा होली आदि का समावेश होता है। इस वर्णन में प्रकृति के बदलते रूपों का लोकजीवन एवं दाम्पत्य जीवन पर पड़ने वाला प्रभाव दर्शाया जाता है।

अमरसिंह की रम्मत में भी इसके अन्त में सुखान्त वर्णन करते हुए बादशाह–हुरम के माध्यम से प्रकृति वर्णन का पैबन्द की तरह समावेश हुआ है। प्रकृति का उद्दीपन रूप में चित्रण किया गया है। लयात्मकता एवं ध्वन्यात्मकता इसका मुख्य सौन्दर्य है। यह वर्णन साहित्य की दीठ से महत्वपूर्ण नहीं हां लोक भावना को तुष्ट अवश्य करता है।

जहँ च न न न न न न न खुले चस्म सी भारी
तहां फ न न न न न न न चले पवन अति प्यारी।

ग्रीष्म ऋतु का वर्णन :

जहँ ज ल ल ल ल ल ल ल लहर उठी येक ज्वाला
खस–खस के पर्दे डाल जड़ी बिच लाल चित्र मतवाला
जहँ भ ल ल ल ल ल ल ल हो रह्या उजियाला।
जहँ फूटे फुंवारा ऊँदजडे शोताला, चमन, गुलचाला
बसन भये आला
जहँ ख ल ल ल ल ल ल ल खुले नीर के नाला।

वर्षा ऋतु :

अजी बिजली चमकी डर लाग सी भारी
अकेली खरी जिया मोरा भारा।
जहँ हर र र र र र र र र र र हींड रहे हिंडोरा।

शरद ऋतु :

आया सियाला मास पिव मेरे पास
सहज सुख रास सुनो दिल जानी
अब उठी ठेठ की लहर नीर भया जहर
कलेजे लहर कंपने लागी

होली के वर्णन में थोड़ा साहित्यिक स्पर्श अवश्य है :

चलना बीबी तेरे महल में हम सेती खेलो होरी।
चोहा चन्दन और अरगजा होद भरे केसर घोरी
उड़े अबीर गुलाल कुमकुमा भर के भर डारे झोरी।

रस :

अमरसिंह राठौड़, रामसिंह एवं शेर खां की वीरता, पराक्रम, साहस, दृढ संकल्प निर्वहन, निर्भीकता आदि वीरोचित गुणों का प्रदर्शन करने के लिए रचित इस रम्मत में वीर रस प्रधान रस है। वीर रस के साथ–साथ श्रृंगार–रस के संयाग एवं विप्रलंभ दोनों रूपों का कलात्मक प्रयोग है। अमरसिंह की मृत्यु के बाद हाडी रानी, रामसिंह के संवादों एवं शेर खां पठान को लिखे पत्र में करूण रस उफन रहा है। शान्त रस व हास्य रस का भी उपयोग हुआ है।

छन्द–अलंकार :

रम्मत में मुख्यतः दोहा एवं कुण्डलीयां छन्द का प्रयोग हुआ। अलंकारों में उपमा, अनुप्रास, उत्प्रेक्षा, रूपक आदि साहित्यिक सोन्दर्य बढ़ते है।

साहित्य मूल्यांकन :

वैसे तो लोकनाट्य में अधिक साहित्यिक एवं शास्त्रीयता तलाशने में अधिक सार्थकता नहीं है। पर इस रम्मत में साहित्य में विभिन्न पक्षों एवं तत्वों का समावेश हुआ है। कला पक्ष एवं भाव–पक्ष दोनों का अच्छा निर्वहन हुआ है।

सांस्कृतिक पक्ष :

रम्मत के मुस्लिम एवं हिन्दू, दोनों संस्कृतियों का वर्णन हुआ है। विशेषतः राजपूती संस्कृति का। बादशाह मुगल था, अतः दरबार से संबंधित सभी सत्तर खानों–सूबेदारों–मनसबदारों एवं अन्य कर्मचारियों की बादशाहत थी और वे उसी संस्कृति का अनुसार करते थे, जो एक विजेता की पराजित समाज के साथि होती है। सलावत खां एवं शाहजहां इसके प्रतीक है। अपने स्वार्थ के कारण वे हिन्दुस्तान के राजा–महाराजाओं से संबंध तो रखत थे, पर अमरसिंह राठौड़ जैसा स्वाभिमानी मस्तक उनकी आँखों का काँटा था। धर्मान्तरण, अत्याचार तथा अन्याय उनकी राजनैतिक संस्कृति थी। दरबार से संबंधित सभी बड़े–छोटों की आर्थिक दशा अच्छी होने एवं उनकी सता व शक्ति के कारण वे आभिजात्य संस्कृति जीते थे। मुगल दरबार में चलने वाले

भेदभाव, ऊँच–नीच तथा ईर्ष्या, द्वेष, अहं का वातावरण स्पष्ट दिखता है। खुश होकर मरजीदानों को गाँव–परगना बख्शना, नाराज होने पर आर्थिक दण्ड देना, आदि का भी प्रचलन था। निन्दा–चापलूसी, कान भरना आदि दुर्गुण भी व्याप्त थे। हिन्दू–राजाओं ने दरबार के समक्ष सर झुका लिया था तथा वफादारी दिखाने की होड़ सी लगी थी। उच्च पद तथा सता पाने के लिए राजपूत राजा अपने प्राणों की बाजी लगाकर मुगलिया सल्तनत के प्रसार में लगे थे। कारण स्पष्ट है–

''महलस मांहि मजा उड़ावै बैठा करें आनन्द।''

नवाबों की ऐशो–आराम की प्रवृति का प्रतीक है–लखनऊ का नवाब :

''मोदी मला फिरे भटकता सिर पे रखे देना।
ओढ़े–पहने मजा उड़ावे करें खजाना खाली
पाँच रूपया का एक निवाला खाय जावे ताली
गुंडे गप्पी संग हमारे लौंडेबाजी करते।
गाने का शौक हमारा हजरत से नहीं डरते।''

ये सभी अपने मजहब के पाबन्द थे। कुरान–कलमा, पीर–पैगम्बर, खुदा पर पूरा एतबार रखते हुए इस्लामी सरीयत के मुताबिक जिन्दगी गुजारते थे। बहु विवाह करते थे तथा औरत का दर्जा दोयम था। बुरे का बुरा फल और गुनहगार को दोजख मिलता है, ऐसी मान्यता थी। मुजरा प्रथा प्रचलित थी।

हिन्दू एवं राजपूत संस्कृति का इस रम्मत में अधिक वर्णन हुआ है। वीरता, पराक्रम, शौर्य, निर्भीकता, निडरता, स्पष्टवादिता, स्वाभिमान, वफादारी, कर्तव्य पारायणता, मैत्रीभावना, भाईचारा, दुष्ट एवं दुश्मन–दमन, विजय प्राप्त करना, युद्ध करना, भावना से कर्तव्य को ऊँचा मानना, दरबार में नियमित उपस्थिति देना, हुक्म अदायगी करना, परस्पर सम्बन्ध निभाना, धैर्यशील होना, ईश्वर में आस्था, नौकरी का पाबन्द होना, प्रणवीर होना, रणवीर होना, रैकारा री गाळ मानना, रण झूझण रजपूत होना, रण में मरने पर स्वर्ग, मिलना, जुझार होना, असंख्य शत्रुओं से अकेला लड़ना, तख्त पर मेख मारना, केसरिया बाना पहनना, हारने पर मुँह में घास लेना, औरत पर हाथ न उठाना, स्वामी के लिए मर मिटना, शत्रु को चोली–चूड़ी पहनाना, घाघरा पहनाना, माथा मूंडना आदि परम्परागत हिन्दू–राजपूती गुण एवं विशेषताएं अभी भी राजपूत समाज में विद्यमान

थी, हालांकि उन्होंने मुगलों की अधीनता स्वीकार ली थी। पर अर्जुन गौड़ जैसे सता–पिपासु भी थे, जिन्होंने सता–सम्पति के लिए अपने बहनोई तक को मार डाला।

राजपूतों की टीका प्रथा, विवाह का सावा निश्चित होना, पतिव्रता धर्म का पालन, पूजा–उपासना करना, पति प्रेम, दाखां रो दारू पीना, कसूंबा अरोगना, तीज–त्यौहार मनाना, मेले–मगरिये जाना, काजली माता पूजन, सज–धजना, पालकी पर जाना, सीख मांगना, पति के लिए सर्वस्व न्यौछावर करना, शकुन–अपशकुन में विश्वास करना, दान–दक्षिणा देना, व्रत–उपवास करना, बालक छोटा होने पर राणी द्वारा राज्य करना, राजपूतानी की कायरता को कलंक मानना, कांकण–डोरड़ा बांधना, जात देना, गीता पर हाथ रखना, निरवंश होने का शाप देना, सती होना, पति से जन्म–जन्म का साथ मानना, वीरांगना का खुद युद्ध में मर्दाने वेश में जाकर लड़ना, शूरां घर शूर और सिंहा घर सिंह जन्मना, पिता के बैर का बदला लेना आदि अनेक परम्पराओं एवं मर्यादाओं का इस रम्मत में समावेश हे।

इसे तत्कालीन मुस्लिम व हिन्दू समाज का स्वरूप स्पष्ट प्रगट होता है।

संगीत :

संगीत की दृष्टि से अमरसिंह राठौड की रम्मत अच्छी कृति है। लोकनाट्य होने के कारण इसमें शास्त्रीयता की जटिलता कम है। इसकी अपनी लोक धुने है, लोक रागें है, लोक ढाले है। सीधे–सीधे आरोह–अवरोह है। लम्बी–ऊँची टेर तथा आलाप इसके नाद सौन्दर्य में एक अनूठाा आकर्षण एवं सौन्दर्य भर देते है। झेला में वाक्यांश की पुनरावृति, गान को प्रभावशाली बनाती है तथा संवाद–अदायगी एवं भाव–संप्रेषण में सहायक होती है। कुंडलियां, दोहे आदि छन्दों में निबन्द्ध यह रचना संगीत तथा तालबद्ध होने की दृष्टि से सफल एवं सहज है। एकल तथा समवेत स्वरों में ऊँचे आलाप एवं टेर के साथ प्रस्तुत होने वाली ये रम्मते एक अजीब सा रोमांच एवं मस्ती पैदा कर देती है।

यह बात सही है कि इन रम्मतों या ख्यालों को शास्त्रीयता के निकष पर कसने से उनके साथ न्याय नहीं होगा–फिर भी यह तो सही है कि इनमें शास्त्रीय रागों का समावेश है।

विभिन्न संदेश :

लोकनाट्य लोकजीवन के वीडियो–ओडियों कैसेट होते है। इनमें समाज का सही स्वरूप नजर आता है, समझ आता है। लोकनाट्य देखकर हम उस समय की विभिन्न स्थितियों एवं

दशाओं से परिचित हो सकते है। लोकनाट्य में लोकजीवन सही रूप में अभिव्यक्त होता है। श्रेष्ठ लोक नाट्य में अपने समय की सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक आदि अनेक स्थितियाँ प्रगट होती है।

वैसे अमरसिंह की रम्मत ऐतिहासिक लोकनाट्य है– पर इसमें भी लोकजीवन के विभिन्न पक्ष मुखरित होते है। बहुत से स्थलों पर तो ये लोकनाट्य समसामयिक एवं प्रासंगिक हो जाते है। अमरसिंह राठौड़ की रम्मत से अनेक संदेश प्राप्त होते है।

हितचिन्तन :

लोकनाट्यों में सर्वमंगल एवं हित–चिन्तन की भावनाएं निहित होती है। इस भावना की गूंज इस रम्मत में भी परिलक्षित होती है :

"अमन–चैन बस्ती बसेस रे सभा भरी गुलजार।
खाजे पीर रहमान कूं ध्यावां कर संपत में सीर।
सरसत माय शारदा सिवरूं कर सम्पति में सीर।
खटदर्शन को भाव राखज्यों द्यो दुरबल ने दान
दान देऊँ सब देश में सिवरूं बारम्बार।
मेरी बादशाही को रखेगा ईलाही, आलम जहान का करे भल्ला।

सर्वधर्म समभाव :

इस नाट्य में धर्म को लेकर कोई विवाद नहीं है मुसलमान पात्र हिन्दू देवी–देवताओं की वन्दना कर सम्मान देते हे तो हिन्दू पात्र मुसलमान मजहब तथा उनके ख्वाजा, पीर–रहमान को पूरी–पूरी इज्जत बख्शते है :

दाउद मेहतर कहता है :

"सरसता माय शारदा सिवरूं पूरे मन के काम।"

साथ ही वह :

ईसा–मुसा–दाउद सीफी मुख मेले पीर मदार
मोतीलाल कूं सात सिलाम कर दो बेड़ा पार।

इलाही भिश्ती गवरी पत्र गणेश को मनाता है, चोपदार बाबा आदम आद–अनादि धर वल्लभ को ध्यान कर काम प्रारम्भ करता है। शेर खां पठाण सरसत माय सारदा सिंवरूं परे मन

की बात कह मन से वन्दना करता है। इसी प्रकार सलावत खां, भी हिन्दू धर्म के प्रति उदारता प्रगट करता है। इस सम्बन्ध में बादशाह शाहजहां का कथन :

''सरसत मांय शारदा सिवरूं कर सम्पति में सीर
हिन्दू के सब देव मनावें मुसलमान के पीर।''

इसी प्रकार हिन्दू पात्र भी कहीं असहिष्णुता प्रगट नहीं करते।

हिन्दू–मुस्लिम एकता :

मुगलों ने भारत को अपना घर समझ यहीं जीना–यही मरना स्वीकार कर लिया, तो समय ने दोनों के बीच का फासला काम कर दिया। दोनों मजहब के लोग मिल–जुल कर एकता से रहने के प्रयास करने लगे। इस प्रक्रिया की छाप इस रम्मत में भी साफ दिखती है :

खुदा कहेंगे पाक रहेंगे तसबी हात कुरान
अमन चमन सब बसो मुलक में हिन्दू–मुसलमान।–बादशाह
हिन्दू, मुसलमान क मिलकर चालणा
आपस में इखलास घाव नहीं धालणा।''–बादशाह
''जोगनीम कोई चढ़कर आवे जिसकूं देवे जवाब
एक बाँह रजपूत कीं स जी दूजी मुगल पठाण।''–बादशाह
मित्र देख मोती कहे अन्तर नहीं राठौड़
जैसा दिल पठाण जैसा ही राठौड़।'' शेर खां पठान
अमरसिंह की करी दोसती जाणे खलक जहान
पगड़ी बदल हुये थे भाई, बिच में धरी कुरान।
काजी पढ़े कुरान कूं स रे पण्डित पढ़े पुरान।
जिन शहसां ने रंग छे देवे बखत पर जान।
जान हमारी नहि है न्यारी पाडे पीछे क्या होय
अमरसिंह हम एक है तू मत जाणे दोय।।–शेर खां

पठान शेर खां ने हिन्दू राजा अमरसिंह राठौड के साथ भाईपन निभाते हुए मुगल बादशाह से युद्ध किया। शेर खाँ पठान के सैनिक ही नहीं उसका बेटा भी अमरसिंह की हत्या का बदला

लेने आया। शेर खां ने बादशाह की नौकरी पर मानवीय मुहब्बत के लिए लात मार दी। शेर खाँ ने यह भी सिद्ध किया कि प्रेम और भाईचारे के बीच ऊँच–नीच, राजा–रंक का भेद नहीं रहताः

अमरसिंह से मोहब्बत मेरे पगड़ी बदल है भाई
वो राजा है मारवाड़ का मैं तो मरद सिपाई।
''वखत पड़े पर हाज होवे बो है सच्चा भाई।''

शेर खां हाडी रानी के पत्र को पढ़ते ही चला आया। वह हाडी रानी को भाभी मानता है, तो हाडी रानी उसे सच्चा देवर। शेर खाँ अमरसिंह के भतीजे रामसिंह को बादशाह पर पहिले आक्रमण करने को मना करता है। पहला हमला वह खुद करना चाहता है। इससे बड़ा एकता–प्रेम, भाईचारे का उदाहरण क्या हो सकता है? शाहजहाँ के दरबार में राजा मानसिंह, अर्जुन गौड़ आदि अनेक दरबारी है, जो मुगल बादशाह के लिए अनेक युद्ध राजाओं से भी लड़ते है।

कर्तव्य–परायणता :

रम्मत में कर्तव्य–परायणता पर बहुत जोर दिया गया है। सभी पात्र–बादशाह से लेकर मेहतर तक सभी अपने–अपने कर्तव्य के प्रति सचेष्ट है। बादशाह न्याय करता है इसमें कहीं पक्षपात नहीं–

''आये बादस्याह बैठ तखत पर न्याय करे मालक सबका।''

''सच्चा न्याय करे दुनिया का किसकी न रक्खे काण।''

किला बना है आगरे स जी चार चख्त है पांव

जिस पर बैठे बादशाह करे दुनिया का न्याव।

अमरसिंह का शासन एवं ऐसी सुव्यवस्था है कि–

''राजा थारा देश में अब चोरी करे न चोर''

अमरसिंह कर्तव्य–पालन को प्राणों से अधिक प्यार करता है। कर्तव्य–पालन वश वह अपनी ''बरस अठारा कामणी को'' मुख पर बरसे नूर के चमके दामणी के, ऐसी सुघड़ रची रूपक चतुर कामणी'' तथा लखण बतीसी–का लख राणी–ठुकराणियां के बीच एक ऐसी हाड़ी रानी को नवल की तीज पर भी छोड़कर चल देते है जबकि विवाह को अभी एक पखवाड़ा भी नहीं हुआ है–अभी तो कांकण डोरे भी नहीं खुले है–जातें भी नहीं लगी है। पर कर्तव्य–कर्तव्य ही होता है। नवयौवन–रूपसी हाडी राणी के मनाने–बिलमाने पर भी वे नहीं मानते कहते है :

सिंह शूर टरसी नहीं बोली ऊपर जाय।

अमरसिंह नामक हलाल है। राजपूत जिसका अन्न–नमक खाता है–उसके लिए सर कटाता हैः

सैर चून के कारणे स राणी ओ सिर आवे काम।

महिमा बधसी मुलक में स म्हारों होय जगत में नाम।

और कर्तव्य एवं आन–बान–शान के लिए जूझते हुए मरने पर–

धड़ जूझे माथा पड़े स राणी फेर स्वर्ग में वास।

शत्रु का सामना राजपूती कर्तव्य है–

बैरी बसै जिण देस म्हे पावणा

साले कलेजे बोल लागे अणखावणा।

दरबार में सलावत खां द्वारा अमरसिंह को पकड़ मंगावों–लूट लेवो नागौर–''डाले पाँव बिच बेड़ी'', तू रुस्तम दिन तीन का स ''राजा हुआ गँवार'' अपमान भरे शब्द सुनकर अमरसिंह ने ''राजपूत नै रैकारे री गाळ'' स्वाभिमानी धर्म को निभाते हुए सलावत खाँ को सतर खान उमराव बहत्तर से भरे दरबार के बीच मार डाला।

इसी प्रकार बारह वर्ष का रामसिंह जिसे पृथ्वीस और जंगल का शेर कहते है अपने चाचा की हत्या का बदला लेने का कर्तव्य–पालन करता है क्योकि :

''जो जलमें रजपूत बैर ले बाप रो।''

शेर खां पठान तथा उसका बेटा–मित्र धर्म व भाईचारे के लिए सत–सम्पति की परवाह न कर मुगल बादशाह से लड़ कर अपना कर्तव्य–पालन करते है। हाडी रानी अमरसिंह को जाने ''सीख'' देकर क्षत्राणी–कर्तव्य का पालन करती है। किसना नाई अपने स्वामी का सिर जान पर जूझ कर लाता है। शाहजहां का हरकारा जहाँ बादशाह का परवाना व हुक्म अमरसिंह को सुनाता है, वहाँ मानवीय धर्म का पालन करते हुए दरबार में रची कपट के बारें में सूचना भी देता है तथा अमरसिंह को अपनी सुरक्षा के लिए भी समझाता है। उसका कथन है कि जहाँ तक संभव हो खून–खराबा टालो। वह विघटन एवं शत्रुता की बजाय प्रेम–एकता पर विश्वास रखता है।

दोय किया सूं दुख हुवेस राजा एक हुयां में सार

सबसे हिलमिल चालणो स राजा मोबत की मनुहार

राजनैतिक छल–कपट :

सता नाश करती है, सर्व सता सर्वनाश। अमरसिंह की रम्मत से भी यही सिद्ध होता है कि ईर्ष्या, बैर, छल–कपट, खून–खराबा,–पछाड़, निंदा–स्तुति, चापलूसी–भड़काना, दल–फूट सता के आवश्यक दुर्गुण होते है। इस रम्मत में शाहजहां के साले सलावत खां और अमरसिंह राठौड़ के बीच विवाद है। अमरसिंह की यश–र्कीति, शक्ति–सामर्थ्य तथा दरबार में बढ़ता दबदबा सलावत खां को फूटी आँख नहीं सुहाता। उसे अपने पद तथा बादशाह का साला होने का अहं है :

मेरा नाम सलावत कहिये बड़े हुरम का भाई
पूरब और दक्षिण के बीच में मेरी फिरै दुहाई।।
मेरी बराबरी करने वाला राजा नहीं नवाब
हम पर मरजी है हजरत की सब कूं दे दें जवाब।।

वह अपने को सबसे ऊँचा और बड़ा मानता है–बराबरी करने वाले को तुरंत राह से हटाना चाहता है :

जो कोई हमसे करे बराबर छीन लेऊँ ग्राम
जाय कहूँ हजरत के आगे तुरत कटावे नाम।

स्वाभिमानी, निर्भीक एवं वीर अमरसिंह से वह ईर्ष्या भाव पाले है। वह अवसर की तलाश में है–

अमरसिंह से आँट हमारे बोत दिनों की बात
कभी क आये चूक में तो तुरत दिखाऊँ हाथ।

अमरसिंह का साला अर्जुन गौड़ सलावत के इस खेल की प्यादी है।

अमरसिंह का भतीजा रामसिंह सलावत के इस दुर्गुण के लिए कहता है :

सलावतियों करे ठेवरी दिन में सौ–सौ बार।

दरबार के अन्य दरबारी भी सलावत से परेशान है–

छोटा–मोटा सभी पुकारे लग्यो सलावत लार
शहाजान के राज में स रे कब बाजे तलवार।

यह तलवार बजी और अन्याय, जुल्म, शोषण तथा अत्याचार का अन्त हुआ, सलावत खाँ अमरसिंह के हाथों मारा गया।

सता के गलियारों में रचे जाने वाले छल–कपट की तरफ बादशाह का हरकारा भी संकेत देता है :

इधर–उधर की मैं कहूँ सरे होय मुलक में जहार

भरी कचेरी अन्दर राजा तुरत चले तलवार।

सता की गोद में पलने वाले कंटकों को भी कभी–कभी नहीं रहती। इस तरफ अमरसिंह का इशारा :

मोखत सूं मुख चाट सी सरे कूकर भरी कचेरी

चांडालों री मिली चौकड़ी चुगली तेरी मेरी।

भटियारों से भरी कचेरी करे पिजारा न्याव।

भटियारों से भरी कचेरी धुनियाँ और गुलाम

यह स्थिति इस रम्मत को समसामयिकता से जोड़ देती है। सत्ता का दरबार सदा ऐसा ही रहता है।

आर्थिक असमानता :

उस समय भी आर्थिक असमानता थी। कुछ लोग सता के सहारे गुलछर्रे उड़ाते थे तो कुछ लोग दयनीय स्थिति में जीते थे। सिंहासन के प्रिय मालामाल थे–बड़े सत्ताधारी थे।

सत्तर मेरे महल मुदा रे बावन नौपत बाजे

छै करोड़ का सोबा मेरा खड़ा इन्द्र क्यों गाजे।

तीन लाख घोडों पर काठी दस हजार का हलका

पैदल सुतल पालखी म्याना ठाठ बना है दरका।

साढे तीन सौ किल्ले मेरे एक–एक से आले

पर दूसरी तरफ यह हाल था :

बादशाह की करें नौकरी खरची का है तोड़ा

खाली देगा बबर्ची खाने, भूखा खास घोड़ा।

रैत हमारी है नादारी दोब खोद कर ल्यावै

चणे भूंगडे सतू परमल खाकर गुजर चलावै।

और निरंकुश बादशाह जिसकों चाहे पल में राजा से रंक बना दे। सलावत खां जिसका चाहे दरबार से नाम कटवादे, बाहर निकलवादे। सता के यह अंधा अन्याय सदा साथ रहता है।

उधर जनता से अनेक कर वसूलने वाली केन्द्रीय सत्ता जन–धन पर मौज–मस्ती मार रही थीं उनसे दुःख–दर्द बहुत दूर थे :

अमन चमन सब मुल्क हमारा दुनियां दौलत पूर

खासन खजाने बहुत भरे है जगमग जोत जहूर।

खावे–पीवे मजा उड़ावें दुःख दालीहर दूर।

केन्द्रीय सत्ता ने सदा जनता के कोष से सुख भोगा है–मजे मारे है–चाहे करदाता जनता दुःख सहे–भूखों मरे। लखनऊ का नवाब कहता है :

''ओढे पहने मजा उड़ावे करें खजाना खाली

पाँच रुपये का एक निवाला खाय जावे ताली।

पाप कर्म :

सत्ता–सम्पति, स्वार्थ–अहं–पाप के प्रेरक है। पर पाप का महल कभी न कभी ढहता है। इस रम्मत से भी यही सीख मिलती है। सत्ता एवं शक्ति के मद में चूर अन्यायी सलावत खाँ को अमरसिंह राठौड़ के हाथों मरना पड़ा। लोभी पदलौलुप अर्जुन गौड़ को अपने नाक–कान कटवाने पड़े। सत्तान्ध बादशाह–कानों का कच्चा बादशाह, जो सगर्व कहता था :

''मेरा हुकम फिरे नहीं पीछा, धूजे हिन्दुस्तान''

वही पाप कर्म का सहयोगी बन कर मुँह में घास डालने को मजबूर हुआ। दरबार से भाग हरम में छिपा, खुद ने रामसिंह से हार स्वीकारी, हिन्दू तेरी गाय–अबके जान बचाय' कहना पड़ा।

स्वयं बादशाह की बेगम स्वीकारती है कि अर्जुन गौड़ ने किए का फल पाया, अपना नाक–कान कटाया :

करी बैन कूं रांड बैनाई मारियो

डूबो कुटुंब समते जमारो हारियो।

सत्ता–सम्मत्ति का भूखा कितना नीचे उतर आता है कि अपने स्वार्थ के लिए आदर्श, सिद्धान्त, मानवता, नैतिकता, धर्म–कर्म, सगा–सम्बन्धी, सब कुछ भुला देता है पर अन्त में क्या पाता है ?

ऐतिहासिकता :

अमरसिंह 'नवटंकी मारवाड़' के यशस्वी राजा थे तथा यह कथानक उन्हीं के जीवन पर आधारित है। मुख्य सभी घटनाएं उनके जीवन में घटी। पर इसमें जितने राजपूतों के वंशो का वर्णन किया है, उनके मूल स्थान बताए गए है, उनकी वंश–परम्पराएं प्रगट की गई है, उनके परस्पर सम्बन्ध बताये गये है, उनकी आर्थिक स्थितियां तथा सत्ताएं बताई गई है–ये सब शोध का क्षेत्र है। स्थानाभाव के कारण तथा मोनोग्राफ का उद्देश्य देखते हुए इस पर अधिक विस्तार नहीं दिया जा सकता। पर साधारण लेखक ने इतना ज्ञान इसमें अभिव्यक्त किया–साधुवाद है।

लोक–विश्वास :

लोक–साहित्य में लोक–आस्था एवं लोक–विश्वास की बड़ी भूमिका रहती है। अमरसिंह राठौड़ की रम्मत में सभी पात्र चाहे हिन्दू है या मुसलमान आस्थावन है। वे अपने देवी–देवताओं की वन्दना करते है। गणेश, सरस्वती, वल्लभ, मुरलीधर, भवानी, सालगराम आदि को पूजते है। गंगा में आस्था रखते है।

''शारदा पूज्यां सुख घणां टाले विघ्न गणेश''

वे दान और व्रत में भी आस्था रखते है :

इसी प्रकार मुसलमान पात्र हिन्दुओं के देवी–देवताओं के साथ–साथ ख्वाजा पी, रहमान, बाबा आदम, बाबा बूढण, बिसमिल्लाह रहमान में आस्था रखते है। बादशाह कहता है।

मेरी बादशाही को रखेगा इल्लाही

''खुदा कहेंगे पाक रहेंगे तसबी हात कुरान''

शकुन–अपशकुन भी लोक जीवन का एक अंग है। आज भी लोक–समाज इसमें विश्वास करता है। जब अमरसिंह मुगल दरबार में जाने को तत्पर हुए तो हाडी रानी ने अपशकुनों के कारण मना किया। उसने कहा–

''सुमन नहीं छै सायबा राजन मानो बात।''

वह कहती है–सन्मुख छोकरी छींक रही हैं, डांई मृगां की डार है, बांई कोचरी बोल रही है, सन्मुख मोर उड़ रहे है, तीतर आते दिखाई दे रहे है :

''इन सगुना सिरदार कोई नहीं जावता।''

वे, जोश, पचांग, दान, चारा डालने आदि में भी विश्वास करते है।

प्रस्तुतिकरण :

सामान्यतः बीकानेर की रम्मतों का पूर्वाभ्यास बसंत पंचमी से प्रारम्भ कर दिया जाता है, पर जीवन की व्यवस्तताओं एवं भागमभाग ने पूर्वाभ्यास की अवधि कम कर दी है। गायन और वादन तथा नृत्य भाव–भंगिमाओं पर आधारित अभिनय के लिए सभी के लिए कठोर अभ्यास की आवश्यकता रहती है। यह रम्मत प्रति वर्ष फाल्गुन शुक्ला 11 को आचार्यों के चौक में प्रस्तुत की जाती है।

मंच :

इस रम्मत का मंच यानी अखाड़ा प्रारम्भिक दौर में जमीन पर ही रचाया जाता था। पर धीरे–धीरे पाटों का मंच बनना शुरू हो गया। आगे चलकर तो यह मंच दो मंजिला एल आकार का भी बनाया गया–जहां पाटों पर पाटे रख दिए जाते थे तथा अन्तिम छोर की तीसरी मंजिल पर बादशाह आदि कई सहायक पात्र बैठते थे। अब यह मंच न तो इतना बड़ा रहा है और न ही मंजिलों वाला मंच इस प्रकार से बनाया जाता है कि अभिनेता तीनों–चारों तरफ अपने संवादों की अदायगी सरलता से कर सके तथा दर्शक उसके संवाद को भली प्रकार से सुन सके तथा अभिनय देख सके। रम्मत प्रारम्भ होने से पूर्व मंच की सुरक्षा तथा रम्मत निर्विध्न चले इस हेतु नींबू काट कर चारों दिशाओं में फैंके जाते है।

गायक मंडली जिन्हें ''टेरिया'' कहा जाता है पूर्व की तरफ मुँह रखते हुए मंच के नीचे बैठते है। इनकी कोई निश्चित संख्या नहीं होती–पर काफी संख्या में होते है–ताकि हजारों की भीड़ को रम्मत सही तरीके से सुनाई दे सके। ये सभी गायक बुलन्द आवाज वाले होते है। कभी–कभी टेरियों की संख्या 50 तक हो जाती है। रम्मत की स्वरावली सरल है, तथा संवाद एक ही धुन पर आधारित है।

इनकी संगत के लिए चार–चार नगाड़े तथा दो ढ़ोलकियां भी होती है। ये भी कुशल वादक होते है तथा वाद्य बजाकर एक अनोखा वातावरण सृजित कर देते है–रम्मत में रंगत ला देते है। कभी–कभी नृत्य के साथ बांसुरी का प्रयोग भी कर लिया जाता है।

प्रारम्भ :

रम्मत प्रारम्भ होने से पूर्व रघुनाथ जी के मंदिर में राय भवानी को तैयार करते है। राय भवानी सदा से ही 10–12 वर्ष के सुन्दर बालक को बनाते है। उसे सुर्ख लाल लहंगा–ओढ़णी

पहनाए जाते हैं। लटें बिखरी व सिर पर तुर्रे बांधे जाते है। ललाट पर तिलक होता है। एक हाथ में चांदी की कटार तथा दूसरी में लाल कपड़ा रहता है। आभूषण शुद्ध सोने के पहनाये जाते है। सभी खिलाड़ी वहां से रायमाता को चौक में लाते है।

वहाँ भैरूजी के मन्दिर के सामने भैरूजी की पूजा की जाती है तथा रायभवानी भैरूजी के समक्ष नचती है। ''जय भैरव लाला' की आरती भी काफी देर तक चलती रहती है।

फिर राय भवानी मंच पर जाकर लगभग घंटे भर तक नाचती रहती है। टेरिये बुलन्द आवाज में श्रद्ध–उमंग के साथ गा उठते है : म्हारी राय भवानी जागै, नवदुर्गा जागै, लटियाल हे खेजड़ली री राय। राय–भवानी में के चारों तरफ नाचती हुई घूमती रहती है। टेरिये गाते है ''शरण भुज अष्टादश तेरी, लाज रख जगत बीच मेरी। ''यह दाता–दयाराम जी आचार्य स्तुति परम्परा रूप से गायी जाती है।

मुख्य पात्रों को छोड़कर अन्य पात्र पहिले से ही मंच पर रखी कुर्सियों पर आ बैठते है। मंच पर चढ़ने से पूर्व हर अभिनेता अखाड़े को नमन कर वहाँ की पावन माटी अपने सिर पर लगाता है।

पहिले मुख्य पात्र दूर से आते–यथा अमरसिंह–हाड़ी रानी, रामसिंह आदि तो पात्र के आगे आधी ऊँचाई तक पर्दा रखा जाता था–आगे–आगे ढोलक बजता था–मशालची मशाल लेकर चलता था (संभवतः विद्युत व्यवस्था न होने के कारण)।

रात के लगभग 12 बजे रम्मत का शुभारम्भ होता है। सर्वप्रथम मेहतर आता है जो टेर गाकर अपना परिचय भी देता है, उस्ताद को सात सलाम भी करता है। वह अपने साथ रंगीला झाडू–टोकरी रखता है–मंच की सफाई का अभिनय करता है–नाचता–गाता हुआ फिर अन्त में टोकरी की पावन माटी किसी बड़े पात्र या टेरियों पर बिखेर देता है। फिर इलाही भिश्ती आता है – छिड़काव करता है अब्दुल फर्राश बिछायत करता है। हलकारा नवरंगी छड़ी या तलवार लेकर आता है. बादशाह का हुक्म अदा करता है। चोबदार सबको यथा–स्थान बैठाने का कर्तव्य निभाता है।

ये सभी सहायक पात्र है। इनमें कभी–कभी कटौती भी कर दी जाती है।

फिर शेर खां पठान, शाहजहां का साला सलावत खां, अर्जुन गौड़ मानसिंह जैपुर वाले, लखनऊ नवाब, हैदराबाद नवाब, कंवर रामसिंह, अमरसिंह राठौड तथा बादशाह शाहजहाँ क्रमशः मंच पर आते है आगे चलकर हाडी रानी, हुरम आदि पात्र आते है।

कई पात्र मंच पर रखी कुर्सियों पर पूर्व से बैठे रहते है–उठकर आते है, अपना गायन–अभिनय करके जाकर कुर्सियों पर बैठ जाते है। भूमिका आने पर पुनः आ जाते है। सहायक या गौण पात्र अखाड़े से बाहर भी चले जाते है। कई बार एक अभिनेता एक से अधिक भूमिकाएं भी निभाता है।

अभिनय :

रम्मत में आंगिक–वाचिक व आहार्य अभिनय ही अधिक होता है। सात्विक अभिनय कम ही होता है। प्रत्येक पात्र अखाड़े में आते ही सबसे पहिले ईष्ट देवता तथा उस्ताद का स्मरण करता है। फिर एक–एक दोहे या संवाद को अखाड़े के चारों तरफ जा जाकर बोलता है। साथ ही नृत्य के हाव–भाव भी प्रगट करता है। जहाँ वह अपना दोहा या संवाद पूरा करता है टेरियों के पास जाकर झुक कर संके करता है–टेरिये टेर को झाल या संभाल लेते है। टेर खत्म होने तक पात्र आंगिक हाव–भाव, पद संचालन के साथ करता रहता है। टेर खत्म होने के बाद वह पुनः गाना शुरू कर देता है। यह क्रम अन्त तक चलता रहता है। बीच–बीच में नृत्य भी रख दिया जाता है।

पात्रों के संवाद की स्थिति में वे आमने–सामने खड़े होकर बोलते है। रम्मत में अभिनय की बजाय हाथ–पाव संचलन पर बल रहता है।

वेशभूषा :

पहिले इस रम्मत में वेशभूषा पर अधिक ध्यान दिया जाता था–पात्रानुकूल वेशभूषा पहनी जाती थी। थोड़ा मैकअप, दाढ़ी–मूंछे भी लगाई जाती थी। अधिकांश पात्र राजस्थानी वेशभूषा पहिनते थे। शेरवानी, अचकन–बिरजिस, राजस्थानी साफे आदि पहनते थे। तुर्रे–कलंगी भी बाँधे जाते थे। गले में हार आदि भी पहने जाते थे। भाले तथा तलवारें हाथ में होती थीं पीछे ढाल बाँधी जाती थी। अखाड़े में जूते नहीं पहने जाते थे। कई पात्रों के पाँवों में घुंघरु बाँधे जाते थे। आभूषण पुरूष भी पहनते थे, वे शुद्ध सोने के होते थे। फिर बन्द गले के शूट भी पहने जाने लगे।

अब वेशभूषा या मैकअप आदि पर अधिक ध्यान नहीं दिया जाता, कुछ भी चलता है।

नारी पात्र राजस्थानी लहंगा–चोली–कुर्ता, घाघरा आदि पहनती थी। शुद्ध सोने के गहनों व मोतियों के हारों से लाद दिया जाता था। सोलह सिंगार किया जाता था। मुस्लिम महिला पात्र भी राजस्थानी वेशभूषा ही पहनती थी। आजकल बुर्का आदि भी पहना देते है। टेरिये साधारण वेशभूषा पहनते रहे है।

दर्शक :

पहिले यह रम्मत इतनी लोकप्रिय थी कि प्रवासी बीकानेरी–कलकत्ता, मुंबई, मद्रास, आसाम आदि से बीकानेर आ जाते थे। आस–पास के गाँवों के लोग दो दिन पूर्व ही बीकानेर चले आते थे। स्थान–पाने के लिए लोग शाम को ही आकर बैठ जाते थे। रातभर बैठे रहते थे। कभी–कभी भीड़ इतनी हो जाती थीं कि दर्शक बाहर निकल ही नहीं पाता था। चौक में पाँच से सात हजार तक लोग एकत्र हो जाते थे।

मुख्य उस्ताद एवं अभिनेता :

अखाड़े में आते ही हर पात्र उस्ताद को स्मरण करता है। इस रम्मत के मुख्य उस्ताद रहे है :

1. लेखक : मोतीलाल सेन
2. जेठमल जी आचार्य
3. मेघ सा उस्ताद

अमरसिंह राठौड़ : कुछ लोगों का कहना है कि तेज कवि जैसलमेर से आए थे तथा उन्होंने ही यह रम्मत शुरू की आचार्यों के चौक में तथा प्रथम अमरसिंह बने। पर रम्मत परम्परानुसार–भीखजी जोशी, पुरोहितयों भा, श्रीगोपाल जी आचार्य नन्दलाल जी आचार्य, शिवकिशन जी आचार्य, हनुमानदास जी आचार्य, सागर मलजी पुराहित आदि समय–समय पर अमरसिंह की भूमिका निभाते थे। कई अम्बियोजी नाई को प्रथम अमरसिंह बना मानते है।

वर्तमान में राजनारायण जी आचार्य, मेघराज जी आचार्य, दीनदयाल जी आचार्य यह भूमिका निभा रहे है।

हाडी रानी : सूरजकरण जी बिस्सा, शिवकिशन जी आचार्य, अमरचन्द जी पुरोहित, गाडमल कुम्हार तथा वर्तमान में राजनारायण जी आचार्य, रमणलाल आचार्य, श्यामलाल आचार्य आदि यह भूमिका अदा करते है।

रामसिंह : मेघसा उस्ताद, सागरदत्त जी पुरोहित, सेठ भा, भैरूं जी पुरोहित, मदनलाल जी आचार्य, नरेन्द्र आचार्य आदि।

बादशाह : अंबजी नाई, गोविन्दलाल आचार्य, गुसांई महाराज, मनीराम जी आचार्य, मेघराज जी आचार्य आदि।

सलावत खाँ : दाऊजी जोशी, राजनारायण जी व्यास, कालूराम जी आचार्य, भैरूदान जी पुरोहित, गिरधर आचार्य, बद्रीजी जोशी, श्यामलाल जी आचार्य, गिरिराज जी आचार्य, गेवरचन्द जी आचार्य आदि।

बीबी : की प्रमुखतया भूमिका निभाने वाले रहे है – मुरली जी अग्रवाल, हलजी नाई, मोहन जी नाई, गेवरचन्द जी आचार्य, डॉ. ओमजी आचार्य, शिवकिशन जी आचार्य, पप्पू जी आचार्य आदिं

शेर खाँ : शिवकिशन जी आचार्य।

टेरिया : टेरिया रम्मत जी जान होते है। टेरियों के बिना रम्मत का मजा किरकिरा हो जाता है। अमरसिंह राठौड़ की रम्मत के प्रमुख टेरिये रहे है– इडोजी, नथमलजी पुरोहित, जगन्नाथ जी आचार्य, बुलोजी रंगा, राधाकिशन जोशी, कजलसा आचार्य, अखेराज जी पुरोहित, देवकिशन जी पुरोहित, नृसिंह बाबा आचार्य, जुगल किशोर आचार्य, कालू जी आचार्य, जेठमल जी आचार्य, पूचिया महाराज व्यास आदि।

स्व. मोहनलाल जी पुरोहित का मत है–''जैसलमेर के लोकप्रिय जनकवि श्री तेज (उपनाम गौरीशंकर सेवग) यहाँ आए हुए थे। उनके सहयोग से स्व. बुधालाल जी पुरोहित ने इस रम्मत को प्रारम्भ किया।''

स्व. मोहनलाल जी उस्ताद परम्परा इस प्रकार मानते है–स्व. बंशीधर जी पुरोहित, मेघराज जी आचार्य (मेघसा उस्ताद) श्री नन्दलाल जी आचार्य (नन्दूसा) श्री जीवनलाल जी आचार्य (कचुबाजी) नन्दूसा का स्वर बहुत ही मधुर एवं बुलन्द था। नगाड़ा वादन करते है – श्रीघमजी तथा श्री रणदत्त जी सेवग।

विशेष :

बीकानेर के महाराज गंगासिंह जी के पौत्र अमरसिंह जी के जन्म के बाद इस रम्मत में अमरसिंह राठौड की मृत्यु का दृश्य दिखाना बन्द कर दिया गया।

समापन :

प्रातः 9—10 बजे तक चलने वाली रम्मत का समापन मंगल—कल्याण की भावना से सीवलमाता का गीत गाकर किया जाता है—

माता हे म्हारे टाबरिये ने ठंडड़ा झोला देई है

नोखे री है राय

म्हारे टाबरिया ने ठंडड़ा झोला देई म्हारी माय।

इसमें कामना की जाती है कि राजा का मोलिया, रानी का चुड़ला, कंवराणी की चुन्दड़ी अक्षय रखे। साहुकारों की कलम सवाई हो, नगर वाले सदा सुरंगे रहें, चुड़ले वालियाँ सदा सुहागन रहे, मंडली वालों को लक्ष्मी मिले, प्रजा में गहरा प्यार बढ़ता रहे, बीकाणे में सुख—सम्पति रहें।

अमरसिंह की रम्मत इतनी लोकप्रिय है कि यह राजसीान में ही नहीं अपितु प्रदेश के बाहर भी वहाँ के लोकनाट्य के रूप में प्रस्तुत की जाती रही है। बीकानेर में ही यह रम्मत बीकनेर के जूनागढ़ में, आचार्यों के चौक में, मोदियों में, मशालची नाइयों में कुछ परिवर्तनों के साथ होती रही है।

हेड़ाऊ–मेरी री रम्मत–बारह गुवाड़ का चौक

बारह गुवाड़, लाल फौज का सांस्कृति चौक। जहाँ पाटों, घूणियों, गवरों, बरनाटी, चन्दों, नावी सभाओं, तरयों औरचासों व मस्ती का आलम पूरे वर्ष में जमता ही रहता है, वहीं बसन्त पंचमी से गूंज उठते हैं–रम्मतों के पूर्वाभ्यास के बुलन्द समवेत स्वर। देर रात तक बासन्ती हवाओं में घलते रहते हैं चौमासे–लावणी–ख्याल के स्वर, हेडाऊ–मैरी के साहित्यिक दोहों की गूंज–दाम्पत्य–जीवन के श्रृंगार का रसीला काव्य। बारह गुवाड़ का चौक ही नहीं, उससे लगते चौक एवं गलियाँ भी रस से सिक्त हो जाते हैं। जुबानें गुनगुनाने लगती है–पाँव थिरकने लगते हैं।

बारह गुवाड़ में सबसे अधिक चार रम्मतें होती हैं– फक्कड़दाता की रम्मत, सुवा माराज की रम्मत, सराय वालों की रम्मत, हेड़ाऊ–मैरी की रम्मत बहुत ही लोकप्रिय रही है। इन चारों रम्मतों के उस्ताद थे स्व. तनसुखदास जी रंगा।

इतिहासः

हेड़ाऊ–मैरी की रम्मत प्रतिवर्ष होली की पूर्व रात्रि चतुर्दशी को बारह–एक बजे से प्रारम्भ होकर दूसर दिन सुबह 10 बजे तक चलती है। यह रम्मत कब से शुरू हुई इसका सही संवत् या सन् बताने में बुजुर्ग से बुजुर्ग भी अपने को असमर्थ बताते है। हाँ, उनका अभिमत है कि इस रम्मत को बारह गुवाड़ में होते हुए कम से कम 100 वर्ष से अधिक ही हुए है। इस रम्मत के श्रेष्ठ एवं सबसे बजुर्गवार कलाकार श्री देवकिशनजी पुरोहित के मातनुसार इसे 100 वर्ष तो हो ही गए। पर कुछ लोग इसे 125 वर्ष पुरानी मानते है। इस रम्मत के उस्ताद स्वर्गीय तनसुखदास जी रंगा थे तथा हेड़ाऊ–मैरी की रम्मत का बारह गुवाड़ के चौक में सूत्रपात किया था–स्व. जवाहरमलजी पुरोहित ने।

स्वर्गीय तनसुखदासजी संगीत में अति कुशल थे तथा उनकी आवाज बहुत ही बुलन्द तथा प्रभावशाली थी। उनके गायन को लेकर कई किंवदन्तियाँ प्रचलित है। भीतरी शहर के लोग और विोषतः पश्चिमी भाग के लोगों से अक्सर सुनने में आया कि तनसुख दा जी रंगा–जब अपने नाल स्थित खेत से घर रवाना होते तो गाना शुरू करते थे। उनकी आवाज इतनी बुलन्द थी कि बीकानेर में बारह किलोमीटर दूर घर पर बैठी माँ उनकी आवाज सुनकर भोजन बनाना

शुरू कर देती थी। एक और किंवदन्ती है कि तत्कालीन महाराजा अति दूर से उनका गाना सुनकर इतने प्रभावित हुए कि इन्हें राजमहल में गाने को आमंत्रित किया। कहते हैं कि आपके गाने के प्रभाव से भवन की छत में दरार आ गई। महाराज अति प्रभावति एवं प्रसन्न हुए तथा जमीन–जायदाद मांगने का कहना पर रंगाजी ने मना कर दिया। मस्त–मौलाओं के इस शहर ने कभी इतिहास लेखन को गंभीरता से नहीं लिया–इसलिए ऐसे लोगों की किसी भी घटना या बात को पुष्ट करने के लिए इतिहास उपलब्ध ही नहीं है–सिर्फ जनश्रुतियों के सिवाय।

कथानकः

हेड़ाऊ–मैरी का कथानक दाम्पत्य जीवन के सात्विक प्रेम–प्रसंगों एवं घटनाओं से बुना हुआ है। यह श्रृंगार रस प्रधान रम्मत है। वसंत ऋतु ही श्रृंगार ऋतु है। प्रकृति, पशु–पक्षी और सम्पूर्ण वातावरण भी श्रृंगारयुक्त होता है। ऐसे ''कामणगारे'' मौसम में भला सरस–सरल मानव–मन, प्रेम–श्रृंगार, उल्लास–उमंग से भरे बिना कैसे रह सकता है ? ऐसे मस्ताने मौसम में गीत–संगीत, नृत्य–अभिनय उक्त ''हेड़ाऊ–मैरी'' कीरम्मत लोकजीवन में आनंद एवं उमंग का रस घोल देती है। इस रम्मत में श्रृंगार का संयमित एवं मर्यादित रूप प्रस्तुत किया गया है। इस रम्मत को सर्वप्रथम (निश्चय ही सन् 1914 से पूर्व) छापने का दावा करने वाले बीकानेर के कलकत्ता प्रवासी श्री रामरतन दास करनाणी (माहेश्वरी) का इस रम्मत के बारे में अभिमत– ''यह पुस्तक क्या है ? विषय कैसा है ? इसके बताने की कोई आवश्यकता नही, क्योंकि प्रत्येक बीकानेर सज्जन इससे परिचित है। बाल, वनिता, युवा, वृद्ध सभी इसको सुनकर आनन्दित होते है। इन गीतों के गाने में किचित मात्र भी साम्प्रदायिक भेद–भावना नहीं हैं, नीच से नीच और उच्च से उच्च तक इससे प्रीति करते तथा गाते हैं। सारांश यह है कि यह सभी नमुष्यों के लिए मनोरंजनप्रद है।''

बीकानेर के सुप्रसिद्ध समाज–सुधारक एवं कलाप्रेमी स्वत्र रामगोपाल जी मोहता के मतानुसार–''यद्यपि इसके (हेड़ाऊ–मैरी की रम्मत में) श्रृंगार रस की प्रधानता हैं और कुछ हास्य रस भी होता है, परन्तु अन्य माशों कीक तरह इसमें इश्कबाजी या कृत्सित श्रृंगार नहीह", किन्तु पति–पत्नी के विशुद्ध प्रेमयुक्त, हिन्दू दाम्पत्यजवन का अच्छा खांचा गया है।'' (सन् 1940 में) इसी रम्मत पर कलकत्ता के बालमुकुन्द डागा ने संवत् 1996 में अपना मत इस तरह प्रस्तुत किया–''कहने को तो यह ''हेड़ाऊ–मैरी की रम्मत' के गीत हैं, किन्तु यह गीत ''रमत'' के सिवा

रम्मत का मंचन करते कलाकार एवं आनन्द लेते दर्शक

हमारे हर एक सुखमय अवसर पर गाये जाते है। पुत्र–जन्म से लेकर जीवन के अन्तिम हर्ष की घड़ियों तक यह हमारा उल्लास बढ़ाते हैं।'' स्व. श्री मोहनलाल जी पुरोहित का इस रम्मत के संबंध में विचार–''इसकी कथा–वस्तु श्रृंगार रस पर आधारित है।'' डॉ. मदन केवलिया ने इस रम्मत को–''यह सर्वाधिक लोकप्रिय रम्मत हैं और इसकी कथा–गद्य एवं पद्य दोनों में ही प्रचलित हैं।'' माना है।

इस रम्मत की कथा कुंभलनेर के कटारगढ़ स्थान के ठाकुर हेड़ाऊ औरउनकी दो पत्नियां मैरी से संबंधित हैः

कुंभलनेर कटारगढ़, पोणी अवला फेर
जाय कहूँ इण साज ने, बससों कुंभल नेर।।
''हो गढ़ कुंभलियोरे वासी रे हिड़ाऊ ठाकुर....''

श्री देवीलाल सामर के मतानुसार यह कुंभलनेर–कटारगढ़ मेवाड़ के है। बीकानेर के रम्मतकर्ता इसे जैसलमेर का मानते है। सामरजी के कथनानुसार ''हैड़ाऊ–मेरी'' की रम्मत का नाम पहिले ''बीकलाडा की रम्मत'' था, जो बीकानेर नरेश करणसिंह जी के राजकुमार अमरसिंह राठौड़ के नाम पर था। डॉ. रामेश्वरानन्द के अभिमत में यह नाम ''बीकालाडा की रम्मत'' ही रहा होगा। अमरसिंह राठौड़ अपने अग्र स्वभाव के कारण बीकानेर छोड़कर मेवाड़ के महराणा प्रताप के पुत्र अमरिंह की सेवा में ले गए थे। महाराणा के राजकुमार का नाम भी अमरसिंह था, अतः शायद बीकानेर के अमरसिंह का नाम ''बीकालाडा'' रख दिया था। बीकालाडा घोड़ो के उच्च कोटि के पारखी थे। रम्मत में इसीलिए घोड़ो का अच्छा वर्णन मिलता है। अमरसिंह राठौड़ को ही हेड़ाऊ यानी शौर्यवान–संघर्षशीलमान, रम्मत रची गई। ठाकुर को अपने कर्तव्य निवर्हन के लिए जाना जरूरी है। मैरियाँ उसे जाने से रोकती है। पर उसका जाना जरूरी हैं, इसलिए हेड़ाऊ नहीं मानता। मैरी हठ करती है–पर हेड़ाऊ नहीं मानता। परस्पर वाद–विवाद तथा समझाइस होती है, पर मैरियाँ नही मानती। रूठ कर अपने पही चली जाती है। हेडाऊ अपने साले नुरसे के माध्यम से उन्हें मनवाता है। वे आती हैं–फिर संयोग के प्रेम–गीत, दाम्पत्य जीवन के उछूते भाव भरे गीत–फिर बेटे का जन्म–खुशियाँ–आनन्द भरा जीवन।

इस रम्मत में कथानक का सूत्र बहुत ही झीना है। क्रमिक कथा का अभाव है। घटनाएं भी बहुत कम है। कथा का सूत्र झलक देकर लुप्त हो जाता है। पूरी रम्मत विभिन्न अवसरों–ऋतुओं, मेरे–मगरियों या लोकजीवन में समय–समय पर गाए जाने वाले गीतों से गुंथी हुई है। यह गुंथन भी काफी ढीला है। गीत–संगीत, वाद्य–नृत्य और आंगिक–वाचिक अभिनय ही इस रम्मत के प्राण है। ये भी लोकगीत–लोकजीवन से इतने जुड़े है कि इन्हें सुनने में दर्शक इतना तल्लीन हो जाता है कि उसे कथा का अभाव अखरता ही नहीं–वहस्वयं ही कथा सूत्र जोड़ता रहता है।

साहित्यः

रम्मत और ख्याल में लोकभावना की अभिव्यक्ति, बहुत ही मर्मस्पर्शी, स्वाभाविक, सहज और सरल लोकभाषा में होती है। लोकमन से उपा विचार और भाव, लोक–भाषा का सहारा पाकरन लोक–जगत् पर जादू का असर कतरा है। रम्मत और ख्याल लोकभाव के ही नहीं–लोकभाषा के अमरकोष है। मानव–मन के सुख–दुःख, आशा–निराशा, हताशा, उल्लास–वेदना, प्रेम–द्वेष, संयोग–वियोग सभी भाव अति स्वाभाविक एवं पारदर्शिता से लोकभाषा के माध्यम से प्रगट होते है। लोक रचनाओं की भी अपनी एक विशिष्ट साहित्यकिता है।

हेड़ाऊ–मैरी कीरम्मत संयोग एवं वियोग–हास्य एवं करूण रस पर आधारित एक स्तरीय साहित्यिक कृति हैं इसमें नारी–सौन्दर्य, प्रकृति–सौंदर्य का अच्छा चित्रण है। राजस्थानी लोकगीतों के समावेश ने इसके प्रभाव को व्यापक कर दिया है। इस रम्मत के विभिन्न पक्षों का विश्लेषणः

डांण गायन में हेड़ाऊ की प्रशंसा का राजस्थानी अंदाज निराला हैः

हो रेशमीयों रो रेजो रे, फूलों रो रे भारो

डांण मांगे हो राज।

हो लाखों रो लड़ाऊ रे हेड़ाऊ ठाकुर

डांण मांगे हो राज।

प्रीतम इता प्रिय है कि उसे दूर रखा नपहीं जा सकता–नायिका उसे :

नैणों में घुलाय राखूं हो भंवरा जीहो।

नैणों में लुभाय राखूं हो भंवरा जीहा।

वह उसे हिवडे से लगाया रखना, छाती से चिपकाय रखना, बुरगट में छिपाय रखना, घूंघट में लुकाय रखना चाहती है, ताकि वह उससे दूर न जाय, जुदा न होय। भंग का सेवन प्रायः किया जाता था, अतः भांग भी छठनवाती हैं, सेज भी बिछाती हैं–संवारती है। अपने भंवर बालम सा के लिए।

भंवर साजन घोड़े चढ़ आ गए हैं–नायिका दासी को आदेश देती है :

उठ दासी कस ढोलियों हे दासी, गहरो दीप संजोय

घर आयो हड़बड़ हुसी हे दासी, अरे मो रीस राजन होय

अपने पति के स्वभाव का पूरा–पूरा ध्यान रखती हुई नायिका दासी से सारी साज–व्यवस्था पूर्व में ही करने का कहती है।

पति का आना–सुखो का उत्सव–खुशियों का त्यौंहार। पति के आने से तन–मन ही उमंगित नहीं है–

साजन घरे पधरसी हे दासी, ज्यों री जोऊं बाट

थम्भा हंसे अर घर बसै, म्होरां खेलण लागा खाट।

नायिका अपने पधारे पति की एक झलक के लिए तरसती है–निरखणा चाहती है–

किलंगी सोहे जी ओ तुर्रो हद फाबे, हे सहेली

म्होंरी हे उगतो सूरज, छण में निरखण दीजो जी।

'जोड़ी रै सैलोनी', पन्ना मारूड़े 'रायजादे बनड़े' आलीजे को निरखने के लिए वह–

इन्द्रगढ़ां सू ऊतरी कियो जरी को साज

महलों साजन आविया ज्यूं आलि छूटत है गजराज।

हाथों मेंहदी सायबा पाँवों मेंहदी

लोंग सुपारी मुख बिड़ला रो पान

पन्ना थेंने निरखण आई रे नादान।

फिर निरखने के लिए विनती करती है :

किलंगी सोहे जी ओ तुर्रो हद फाबे हे सहेली

म्होंरी उगंतो सूरज धणने अरे निरखण दीजोजी।

'मारूड़ा पहलों में', 'बादीलो अमलों में' है तो ढोला की मरवण मिलन को तड़प उठती हैं—नदी समंद मिलन को उफन पड़ती हैः

रमझम कर महलो चढ़ूं रमू पिया के संग
ज्यूं चन्दन रे पेड़ में आंटा खाय भुजंग।

पत्नी का पति से लिपटना—चन्दन वृक्ष से भुजंग के आँटे खाना। नई कल्पना—नई उत्प्रेक्षा।

कामण्गारे—जादूगारे ने—जोड़ी रे ढोले ने—मृगनेंणी आवै छै रमाझमा—करै छै घणी खमा। सिरोही रे घाट, सिरोही री डौंडी पन्ना मारू रंग बाँटे, चौपट मांडे—उसी नथली के माती पर :

वारूं रे पन्ने पर मोतीवारूं राज।
मोती तो वारूं सायबा जी हो हीरा बी वारूं।

ऐसे ''नैणां रै काजल'' पर—परेम रै बादल पर साँस वारे—प्राण वारै—मन वारै—तन वारै—तभ्ळी तो आँखों से नाराजगी हैः

नैणा तुझ को पटक दूं छींट—छींट हुय जाय
म्हे नैंणा तुज कू कब कही मन पहली मल जाय।

दाम्पत्य प्रेम में नयन का तन का मिलन, मिलन नही, सच्चा मिलन है—मन का मिलन।

संयोग की किस्मत ही वियोग है। मैरी को ह पल—छिण हेड़ाऊ के चाकरी पर जाने की आशंका बनी रहीत हे। चाकरी कभी दूर दखण, कभी नरबदा की घाट दूर—बहुत दूर जाना बजबूरी है। उस समय यातायात के साधन नहीं थे, अतः आना—जाना बहुत कठिन था। फिर सावण—भदवा का रसीला—रंगीला—रूपाला मौसम, मेले—मगरिए, तीज—त्यौहार ऐसे में प्रिय का जाना :

बागों बोली कोयली आभे चमीक बीज

आप सिधाा चाकरी म्होनं कूँण रमासी तीज।

भरिये भादड़े री तीज ढोला जी रे, लो नी मजो हे

लोड़ी तीज रो

तीज की बीज डरपाती हैं, रिमझिम जान लेती है—पवन प्राण लेती है :

काली कोंठल बादली बरस बाजी बाव
होजी बुन्द लगे पीया बावरी म्होंने साथ रेवण रो चाव।

ऐसे में मैंरी साथ रहने का चाव रखती है। धण रा प्यारा मान जाता हैं, पर सुख का समय पवन—पंख लगाकर उड़ जाता है और सर्दी आ जाती है—

दिन छोटा मोटी रेन ठण्डा नीर पवन
होजी इण्रूत नेव न छोडिये थोंरो होजी बालम बड़पन।

भरपूर पाला पड़—रहा है, पंछी झूर रहे हैं, अखन—कुंवापरी झुर रही है, बीनणियां बिना वर झुर रही हैं। इसलिए हेड़ाऊ जी मत जाओ—

आज सियाले सी पड़े बन्दर मारे चीस
हेजी इणनें दिनों में गोरड़ी पीवजी अंग सूं भेले ईस।

सर्दी ऐसी भयंकर है कि—

आठ पधरणा रे हो सौले नै रे मारू सीरख्यों रे
अरे तोइ अन घण रो जाड़इयो ने जाय।

ऐसी हाड गालने वाली ऋतु में, मैं बिछड़ कर अकेली रह नहीं सकती इसलिए विनती है कि ओलंगणी धण को संग ले चलो। हे मद छकिया, हे कम धजिया मेरी हालत समझो—

नारि कहे भरतार से जल बिन रहे न मीन
एक मिनट न्यारी रह म्हारो प्राण पड़त है छीन।

चाकरी जाने को तत्पर हेडाऊ से दूरी मैरी (पत्नी) अर्ज करती है मुझे भी साथ लू चलो—

ईडरओम्बा ओम्बली रे ईडर दाड़म दाख
दाखों रो मेवो भलों जी कोई अमलो भलो परभात।
चाकर कर—कर राख लो जी लोड़ी—लाडी जी ने ली जो साथ

वह कहती है मुझे माड़पुरा ले चलो, जयपुर देखाओं। हे प्रिय हीरा सा जोबन यूं ही जा रहा है। आप मत जाओं–

पन्ना मारू पदोशों मत जाव

हो हिवड़े रा जिवड़ा परदेशों रे मत बाव।–(पन्ना मारू)

मेरी फूल–गुलाबी ओढ़णी का रंग बिन ओढ़े उड़ जाएगा, फूल–गुलाबी कांचली पर किरण–निार लगी है–मेरे सिण्गार को कौन रिखेगा, कौन करेगा दीदार ? मुझे साथ ले चलो–मेरे मन की बात कौन पूछेगा ? मेरे मन की बात कौन समझेगा, मैं किससे बात करूंगी, मेरी सा–संभ्ळााल कौन करेगा ? सुनो–

परदेशी री हो जी गोरड़ी हाँ रे म्हारा राज

मारू म्होरा ढलत–ढलत ढल जाय

हो झुरत–सुरत थक जाय। –(पन्ना मारू)

जाओ मत। हे बीकाणे के छैला मारू–पूगलगढ़ की पदमणी की बात मानो :

घोड़ा बन्धावो पायगा खूँटी धरो लगाम

चम्पा भरनी भेगवां दिन दस करो मुकाम। – (मजलिश)

मेरे हिवड़े के हार, बाग में चलो, कच्ची–कच्ची कलियाँ तोड़ेंगे, झूला झूलेगे भांग घुटवाएंगे–दोनों मिल पिएंगे। बागें में केस घुलवाएंगे–पिचकारी भर–भर भिगोएंगे–मत जाओ। (छैला मारू)

हे मेरे मन के मोर–जोधाणै से बीज मंगवाओ, बीकाणै के बाग में बोऊंगी। आँगन में नागर बेल लगाऊँगी। दूध–दही से सींचूंगी। नींबू की गहरी छाँह में भंवर बैठेंगे। ननद बाई ने नींबू के पत्ते तोड़े–इसलिए उसे ससुराल पहुचा दो। देवर ने कच्ची ''कामड़ी'' तोड़ी है, इसलिए उसे दक्षिण चाकरी के लिए भेज दो। पर नीं ननद बाई को चून्दड़ली ओढ़ाय–देवरिये नखराले ने पचरंग मोलियो।'

मन रै मोरि के साथ रात गुजारनी, एक स्वर्गिक अनुभव। पर उदमादी नींद आँखों मे ंघुल–घुल जाती है–मैरी नींद उड़ाने के लिए प्रश्न करती है–डोडा–एलची कहां बोवाऊं, कससे सिवाऊं फिर उसे दूध से सींचने का तय करती है। पर ढोला मारू की भांग ?

राज ढोला मारू दही सूँ हे सिवाऊँ म्हारे पदछकिये री भांग
नीदडली रे उदमाड़ी हे नैणों में घुल रही, होंजी म्हारा राज।

नींद लाख रोके नहीं रूकी। ज्योंही नींद आई, हेड़ाऊ चुपके से निकल गए। मैरयां जागी और नारी–सुलभ भाव से नींद को कोसने लगीः

अरे हों म्हारा जल्ला मारू सूती रे, सिराणे निस रचा हो राज
बालूरै जालू रै बैरण नींद रै हाँ रे लसकरिये ने रे
बावा कमदजीये ने रे बाली लागे चाकरी हो राज।

चले तो गए, पर चिन्ता की चिता सुलगा गए–चाकरी करना बहुत कठिन हैः

अरे हो जी मरा जल्ला मारू दोरी ने दखण री ढोला
चाकरी रे राज
दोरो ने नरबदा रो घाट रे हरि लसकरिये ने रे....

आप तो चाकरी चले गए, पर सोचा तो होता किः

अरे हो जी मरा जल्ला मारू लाख ने टका री ढोला चाकरी
रे राज
करोड़ ने मोहर री आ रात रे होर लसकरिये ने रे......

इस अमोल रात का मोल लापख अक्का समझ क आपने कैसी नादानी दिखाई है। नहीं सोचा कि मैं जब–जब :

जब–जब जोऊँ ढोला पागड़े रे राज
डब–उब नैणां भरीजे रे हाँरे–हाँरे लसकरिये ने रै।

कैसे निर्दय है आप, एक पल भी नहीं सोचा कि आपके चले जाने पर ापकी दासी का क्या हाल होगा।

पन जी रे पग पागड़े दासी हाथ रूमाल

ज्योंरा साजन चाकरी ज्योंरा कुण हवाल।

अब मन को कैसे समझाऊँ—क्या करूँ—क्या जतन करूँ :

तागो ई टूटयो हो जी साँधलूं रे ढोला, कली टूट कुमलाय मन कच्चा धागा नहीं कि टूटने पर पुनः जोड़ लिया जाए यह ो काची कली है, जो टूटने पर मुर्झा जाती है।

अब तो बीती स्मृतियाँ ही ीन का सहारा है—उसी में डूबकर खुद को बचाया जा सकता है :

साजन गूड रे ऊडावता रे ढोला, लाम्बी देता डोर

झोलो आयो हो जी प्रे रो रे वापें रो, कित गुडिया कित डोर।

आप तो परबत पूठ देकर चले गए पर मेरी दशा देखें—

साजन सिधाया चकारी दे गया परबत पूठ।

हिवड़ो काचे सूत ज्यों जासी लड़तो टूट।।

काचे सुत सा कोमल मन स्मृतियों से जीवन की परिस्थतियों से घर के वातारण से लड़ता—जूझता टूट जाएगा क्योंकि :

काचर जितरो देवरियो हे बाई जी रा रे बीरा हो

कोई ठम—ठम म्हारे ठोला देत।

'काचर जितना देवर' राजस्थानी की अपनी क्या उपमा है और परिवार का कैसा स्वाभाविक चित्रण की वह भाभी को तानों का ठोला मारता है—और—

चिरमी जितरी नणदोला ह बाईजी रा रे बीरा हो

कोई मिस—मिस म्हांने मोसा देत।

चिरमी जितनी नणद—नहीं मिलेगी ऐसा उपमाएं किसी अन्य भाषा में।

मेरे फूल गुलाब। आपके बिना इस जीवन का रस—कस कौन लेगा ? आपने बिना तो जीवन, जवानी और जोबन का रंग यूं ही उड़ जाएगा :

फूल गुलाबी हो जी ओढणों रे ढोला बिन ओढ्यां रंग काय

परदेशी री हो जी गोरड़ी रे सायबा ढलत—ढलत ढल जाय।

आंसुओं की तरह ढल जाएगा यह जीवन।

प्यार जिनता गहरा, आशंकाएं उतनी तीखी। मैरियों को आशंका सालती है कि—

उदियापुर री रै हो जी कामणी रे छैला, राखै ली बिलमाय।

सौक कलाली हे बैरन म्हारी हे, महाराजा ने राख्यो बिलमाय।

सौत भी बेचारी क्या करे—महाराज री ओंखड़ियां गुलाल रे। इसलिए सौत ने जादू से वश में किया।

सौत का वर्णन राजस्थानी लोक—साहित्य की अपनी विशेषता है। आभिजात्य जीवन में सौत प्रेम में विष घोलती ही है। हेड़ाऊ मैरी की रम्मत में भी इसका जगह—जगह उल्लेख हैः

मृगानैणी धीमो रे हेलो मत दीजो, म्हारी सोकण

मधरो हे झालो मत दीजो।

हे मेरी मृगनयनी सौत धीमे से भी मेरे प्रिय को मत पुकारना, हल्का सा भी झाला मत देना। वह उठकर तेरे पास चला आएगा। उसवे पड़ौसिन पर भी शक रहता है।

सौत के घर से पति को बुलाने के लिए क्या—क्या नहीं करती प्यारी :

म्हारै डेरे माजम री मनवारों थे दूणी—डोढ़ी लेवो।

म्हारै डेरे भंगड़ली हे घुटावों थे भर—भर प्याला पीवो।

म्हारै डेरे अमल री मनवारों थे छककर मावों लेवों।

आप जो कहो मैं करने को तैयार हूँ—बस घर चलो। मेरा मुजरा स्वीकारो मैं सब कुछ वार दूँगी आप पर—

मुजरो सायबा हे नैणों रो हे सरोधो तीखो है पलाकें रे

अरे थें पर वारी रंग रसिया।

वह अपने मनबसिये को हर तरह से मनाना चाहती है—हेड़ाऊ को छेड़ती हुई कहती है—

साजन खारा खंड सा, केशर सा कुरंग।

मैला मोती सार सा, आछा बैण सुढंग।।

विरोधाभास से कैसी ब्याज स्तुति है ? खांड सा खारा, केशर सा कुरंग और मोती सा मैला—अनुपम वर्णन राजस्थानी लोक साहित्य का ।

हेडाऊ यह सुन नाराज होकर मौन हो गया तो मनाने का ढंग :

म्हें तो हंसती में बोल्या बोल, अबोला क्यों हुआ मारूजी।

म्होंरा मीठा—कड़वा बोल, थे गुणकर मान जो मारू जी

म्होरा ओगण गोल—मथेल, बोल्यो बिना ना सरे मारूजी।

रूठे हेड़ाऊ को मैरियों के भाई नुरसे ने किसी तरह मनाया। हेडाऊ घर आए। बड़ी मेरी ने छोटी मैरी से कहा :

हे लोड़ी खालो नीं किवाड़

अरे हो ओ तो आंगणिये में ऊभो गारी रो सायबो रे

म्होरा राज मोंणी धण रंग चुवे रे।।

रंग झरतीं—रस बरसती रूप सरसती मैरी रंग में रंग की तरह घुल जाना चाहती है :

रंग आम्बा रंग आम्बली, रंग दाड़म रंग दाख

रंग महाराजा री सैज में, म्हे रमसों माँझल रात।।

पति से रंग मनुहार द्रष्टव्य है :

रंग मोणों रंगमाणो, फोज्यों रा मौजी रंगमाणों राज। तन से तन, अंग से अंग, रंग से रंग, रस से रस मिल गया और मैरी गर्भवती हो गई :

आवधान शुभ दिन हुयो, पनेट रह्यो नव मास।

मरूनायक मोटो धणी, उण पूरी मन री आस।।

पुत्र की कामना नारी की जवन–साथ मैरी कीसाथ पूरी हुई। पुत्र जन्मा तो जोशीजी को बेगा बुलाकर जन्म की सुबेला लिखने कीचाह भुवा बाई को बुलकवाकर हरख कोड करवाने कीलालसा, दरजी को बुलाकर आडण सिलवाने कीकामना, सोनी को बुलवाकरन, हँसली–कड़ा घड़वाने की ललक–नारी की सहज स्वाभाव की अभिव्यक्ति एं राजस्थानी सांस्कृतिक परम्पा की मनोवैज्ञानिक अभिव्यक्ति गीगे को लोरी दी जाती है :

लोरी म्हारा रे गीगा लोरी

हे तने देसों हो जतनो रा जाया, धाय राज लोरी।

हालरिया गाया जाता है :

जीयो जतनों रा जाया हमें हालरो

होजी हो हुलराया सों रे।

हालरिये के उल्लास में बीस लड़ी मोती लाए जाते है। एक लड़ी मोती दाई–माई को गीगलिये को झबल झुलाने के लिए। दो लड़ी मोती जोशीजी को गीगले की सुबेला निकालने के लिए। सतलड़ी मोती भुवा बाई को नवजात पुत्र के अंगल–मंल के लिए।

पुत्र जन्म पर बड़ा जीमण। नुरसो जी हेड़ाऊ जी को मनाकर लाए इसलिए :

जीमण जीमो रे, जीमो म्होरे घर रा जाचक।

हो सेर ने मिठाई अत घणी हो नुरसाजी रे

थोंरो ऊपर ढोलाऊँ बाव रे।।

सेर कलाकंद के साथ चावल–दाल, सेर जलेबी के साथ टींडसी रो झोलू–नुरसो जी को छक कर जीमाने का उछाह। नुरसे के कहने से जीमण के लिए जाचक को न्यौता देने गई तो :

जाचक नेंतण घण गई, खाधो बिच्छू गात।

इण नुरसेजी रे कारणे, म्हारे खटक्यो सारी रात।।

तो निवेदन :

फिर हरख–कोड से छैला को ''मुजमोनी'' दी जाती है और पुत्र जन्म की बधाई में फरमाइशें कि महमन्द घड़वादो, मोती पोवा दो, फीणी रतन जड़वादो, झूंटणा घड़वादों, लॅमबा पोवाप दो, झमके बनवादो, बेसर, नथ बंगडी, गजा, पायल, बिछिया घड़वादो, चुड़लो चिराय दो हस्ती दाँत रो।

हेड़ाऊ जी मैरियों की सब मनचाही बातें पूरी कर देते हे। साला नुरसा साथ देता है। तो मैरियां हेड़ाऊ पर सर्वस्व लुटाने का भाव लिए गा उठती है :

थोरा वन सुहावणा रे घण रा हो राज

थोंरा बोली मन मोहनी रे घण रा हो राज।।

इस प्रकार स्पष्ट हो जाता है कि हेड़ाऊ–मैरी की रम्मत वस्तुतः राजस्थानी लोक–साहित्य की एक श्रृंगार रस प्रधान स्तरीय लोकनाट्य है, जिसमें हेड़ाऊ–मैरी के माध्यम सेराजस्थानीदाम्पत्य जीवन का स्वाभाविक एवं मनौवैज्ञानिक वर्णन हुआ है। हेड़ाऊ–मैरी प्रतीक है–राजस्थान के पति–पत्नी के और उनके सुख–दुःख, संयोग–वियोग, हास–परिहास,आशा–निराशा मुस्कान–आँसू, हर नर–नारी के मनोभाव हैं। अतः यह रम्मत बीकानेर के नर–नारी बड़े चाव से देखते हैं और हेड़ाऊ–मैरी में अपने को अपने मन को पाते है। साथ ही हेड़ऊ–मैरी री रम्मत में राजस्थान की लोक–संस्कृति का भी सजीव चित्रण हुआ है। सबसे बडी बात दाम्पत्य जीन के अन्तरंग दृश्यों का इसमें समावेश होते हुए भी अश्लीलता कहीं प्रगट नहीं होती। दाम्पत्य जीवन के सूक्षम भाव एवं क्रियायें भी सांकेतिक एवं संयमित तरीके से चित्रित किए गए हैं। इस प्रकार कहाजा सकता है कि ''हेड़ाऊ–मैरी री रम्मत'' शुद्ध दाम्पत्य जीवन पर आधारित एक श्रेष्ठ श्रृंगारपरक लोकनाट्य हैं, जो राजस्थान के लोकनाट्यों में अपना विशिष्ट एवं अलग स्थान बनाए हुए है।

''हेड़ाऊ–मैरी की रम्मत'' में लोकनाट्य के अधिकांश तत्व समहित हैं। पर इसका कथानक ऐतिहासिक या पौराणिक अथवा वीों के जीन पर आधारित लोकनाट्यों के कथानकों की तरह कसा हुआ तथा क्रमबद्ध नहीं । इसका मुख्य उद्धेश्य दाम्पत्य जीवन के सरस, प्रसंगों को चित्रित करते हुए एक श्रृंगार प्रधान रम्मत प्रस्तुत करना है– ताकि प्रत्येक नर–नारी उसमें अपना दाम्पत्य जीवन देखते हुए इस रम्मत में डूब जाए तथा भरपूर मनोरंजन प्राप्त कर सके। दाम्पत्य जीवन एक ऐसा प्रसंग है, जो प्रत्येक नर–नारी के जीवन का अभिन्न एवं अति महत्वपूर्ण अंग है। इसलिए इसे देखना अपने निजी–जीवन के चलचित्र को देखना है।

लोकनाट्य में सांगितिक पक्ष बड़ा सबल होता है, पर वह मनोहारी बन जाता है, जबउसमें लोकगीतों एवं लोकधुनों का रंग हो। हेड़ाऊ–मैरी री रम्मत में राजस्थानी लोकगीतों का काफी समोवश है पर यह आवश्यक नहीं कि वह कथाक्रम से जुड़ा हुआ हो। इस दृष्टि सेयह रम्मत राजस्थानी लोकगीतो के सुनछर, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक उदाहरणों को एक सिलसिलेवार के रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। हाँ, उसमें एक कथा–प्रवाह जोड़ने की कोशिश की है ताकि अच्छे उदाहरण सहीतरीके से सम्प्रेषित किए जा सकें।

एक सुपुष्ट कथानक के अभाव में लोकगीतों एवं इसरम्मत के गीतों को परस्पर जोड़ने के लिए दोहों का उपयोग किया गया है। आगे आने वाले गीत की भावना से जुड़ता दोहा इसमें बालो जाता है ताकि आगे का गीत अप्रासंगिक न लगे तथा गीतों के बीच दोहा बोलने से एकरसता भी नहीं रहती। ये दोहे भी दाम्पत्य–प्रेम एवं लोक जवन से भरपूर हैं। इनमें भी श्रेष्ठ साहित्य प्रगटता है। ये दोहे हेड़ाऊ एवं नुरसे के द्वारा बोले जाते है–जिससे यह संगीत रचना लोकनाट्य का रूप धारण कर लेती है।

रम्मत के प्रारम्भ से ही हेड़ाऊ और नुरसा देवी–देवताओं की स्तुतियों में तथा अन्य प्रसंगों में दोहे या पद बोलने शुरू कर देते है। इससे बिखेर हुए गीत भी परस्पर जुड़ते से नजर आते हैं तथा कथानक के अभाव की कुछ पूर्ति कर देते है। इन दोहों–पदों मं से कई तोरम्त की पौाी में संकलित है और कुछ रम्मत करने वाली पीढ़ियों ने इधर–उधर से संकलित कर लिए है तथाउनका रम्मत में उपयोग हो रहा है। दोहों–पदों मे से कुछ प्रस्तुत हैं :

जियो चान्द और सूरज, जियो धरती अर अम्बर
जियो वेद किताब, जियो गवर वर डिगम्बर
जियो जोत और सती, जियो बैन बड़ ज्ञानी
सदा जिो इस सृष्टि पर, सो राम नाम मुख बानी।

पुरी सृष्टि एवं विश्व–कल्याण की कामना भी करती है बीकानेर की यह रम्मत।

बिना घरवाली के घर श्मशान का डेरा, इस बात को पुष्ट करने के लिए जो उदाहरण दिए गए हैं– द्रष्टव्य है : हेड़ाऊ का कथन–

शशि बिन सूनीरैन, ज्ञान बिन हृदय सुनो।
कुल सुनो बिन पूत, पात बि तरूवर सूनो।।
गज सूनो बिन दन्त, हंस बिन सागर सूनो।
सिंह बना संग्राम सुनो, घटाज सूनी दामनी
बेताल कहे विक्रम सुनो, घर सुनो बिन कामनी।।

लोक कलाकार कहाँ–कहाँ से पद संग्रह कर सदुपयोग कर लेते थे–इसका उदाहरण है यह पद।

नुरसा हेड़ाऊ का साला था और दोनों मैरियाँ उसकी बहिने। हेड़ाऊ की पत्नियाँ। हेड़ाऊ का कथन :

प्रीतम बुलाई प्यीा आई, कर केशरिया वेश
कर केशरिया वेश, चमक रही कामनी
सुन्दर भीनो गात, मृग सा दोऊ नैण है
नूरसा म्हारी नार, थारी दोऊ बहन है।

नुरसा हेड़ाऊ और दोनों पत्नियों के बीच सेतु है। वह हेड़ाऊ का संदेश मैरियों को और मैरियों के मनोभाव हेड़ाऊ को समझाता हैं। वह रूठने पर समझौता भी करता है। इसीलिए हेड़ाऊ उसे :

नुरसा थारीलायकी शोभा करे सिरहार
सोलह गाँव तने बख्शिया, ऊपर देवें सिरेपाव।।

हेड़ाऊ उसकी इसी लायकी पर, आठो पहर हाजिर रीहने पर, गुणों का गंभीर होने के नाते, प्रिय मित्र होने के काण–उसे हीरा, पन्ना, माणक–मोती, स्वर्ण मोहरें, रत्नजड़ाऊ रथ, मीनाकारी वाली पालकी, इक्यसवन हाथी, सवा सौ घोड़े आदि इस रंगभीने नुरसे को प्रदान करता है।

इन सम्बन्धों को प्रगट करने वाले दोहों–पदों के सिवाय अनेक अन्य दोहे भी साहित्यिक–सांस्कृतिक दृष्टि से सराहनीय है–

प्यारी–प्यारी ना करो, जब लग पिंजर साथ।
रूं–रूं में बस रही, ज्यूं फूलन में बास।।

हेड़ाऊ की सांस–सांस में बसी हैं मैरियां। बिना मेरियां वह रह नहीं सकता। वह नुरसा को कहता है :

सुण प्यारा सुन्दर बिना, जब ना पावे जीव।
जल बिन तड़फे मछली, क्यूँ प्यारी बिन पीव।।

दोनों का प्रेम आंगिक नहीं आत्मिक है–सात्विक है, कहीं कोई दूरी नहीं–फासले नहीं। हेड़ाऊ कहता है–

पिया मन प्यारी बसे, प्यारी मन बसे पीव।
म्है प्यारी रा जीवड़ा, प्यारी म्हारो जीव।।

नयन से प्रेम की भाषा अपढ़ी रह ही नहीं सकती। नयन प्रेम को कैसे पहचानता हैं, नई उपमाओं के माध्यम से :

पाँवों पैछाणी मोजड़ी, नैण पैछाणिया नेह
सौ कासों रो गाजबो, मोरों पैछाणिया मेह।।

प्यार की प्यासी आँखे पल–पल प्रेम पात्र को निरखता चाहती हैं–पर राजस्थान में पहिले रात्रि से पूर्व प्रिय मिलन संभव नहीं था–

सदा सुरंगी काँचली, केसर भरणो गात
आवो प्यारी पदमणी थोंनै निरखो मांझल रात।

पर प्रियताम दूर हो, रिमझिम बरतसात हो, मीठी–मधरी रसीली–रंगीली रात हो, तो हेड़ाऊ की अनुभूति मर्मस्पर्शी है :

बून्द पड़ै दामिनी खिंवै, घण माधुरी घण रात

निशकारी खरी लगै बिन प्यारी बरसात।।

तीज का त्यौहार राजस्थानी संस्कृतिका महत्वपूर्ण पावन–मन भावना पर्व है। ऐसे प्रेमपर्व पर कोई भी नारी पति के बिना नहीं रह सकती–

बागों बोली कोयली, आभै चमकी बीज

आप सिधा–साो चाकरी, म्हानै कुण रमासी तीज।

प्रवासी प्रिय से आत्मिक अनुरोध :

घर–घर चँगी गोरड्यो गावै मंगलाचार

प्यारा मती चुकायजो तीज तणो त्योहार।।

प्रियतम कमाने दून गए हैं–प्रियतमा को हीरे–मोती से सजाने के लिए–तो इधर प्रियतमा भी सर्वस्व न्यौछावर करने को लालायित–उमंग देखिएः

मोती लेवण पिव गयो, गयो समन्दरां तीर

मैं भी पिवजी पर वारसों, ओढ केसरिया चीर।।

हेड़ाऊ से मिलनातुर मैरी ने अपने को सजाया उसके दो उदाहरणः

सिर सोसणिया ओढणी, लँहगो लाल सुरंग

पिव पे आई पदमणी–सेज रमण रै रंग।।

रिमझिम पायल घूघरा, मोती मांग सँवार

पिव पे आई पदमणी, सज सोलह सिंगार।।

वियोग की अगन में चलती विरहिण कोई संदेश ने मलने पर उपालम्भ की अगन बरसाती हैः

प्यारे पतिया नहीं लिखी, बहुत गए दिन बीत

अब तो ऐसी जान ली, मुख देख्यों री प्रीत।।

बीकानेर की ''हेड़ाऊ–मैरी री रम्मत'' एक स्थान विशेष की रम्मत होते हुए भी इसमें सम्पूर्ण राजस्थान एवं रावंशों का तथा वहाँ की संस्कृति का भी सार्थक उल्लेख हुआ है। इस प्रकार इस रम्मत का सांस्कृतिक कैनवस व्यापक तथा लचीला है। राठौड़, कच्छावा, सिसोदिया, हाडा आदि राजपूतों के स्वभाव एवं सांस्कृतिक परम्पराओं का भी बखाण हैं इस रम्मत में घोड़ों

के रूप–सरूप–स्वभाव का भी वर्णन हैं। सब राजाओं को मुजरा किया गया है। दो सांस्कृतिक **बखाण :**

कच्छावां री कोटड़ी, माजम री मनवार
करो कसूम्बों चौगणो, पछै जो माँगों सो ही त्यार।
रजपूतां रचिया रै वै, कैडक थोम्भत थट्ट।
ए बचनां रा बाधा रै वे, तिके हाडा तजे न हठ।।

इससे स्पष्ट है कि हेड़ाऊ–मैरी री रम्मत साहित्यिक एवं सांस्कृतिक के साथ–साथ एक श्रेष्ठ सांगितिक रचना है। यह बात सही है कि हमें लोकनाट्यों में शुद्ध, साहित्यिकता एवं शास्त्रीयता की आशा नहीं करनी चाहिए। इस बाधार पर कहा जा सकता है कि इसरम्मत में लोक–साहित्यता एवं लोकशास्त्रीयता का पर्याप्त समोवश है। संगीत में तो शास्त्रीयता का काफी स्पर्श है।

''हेड़ाऊ–मैरी री रम्मत'' बीकानेर में कई स्थानों पर होती रही है। इनमें प्रमुख स्थान हैं–बारह गुवाड काचौक, मरूनायक जी का चौक, दर्जियों का चौक, सुनारों की गुवाड़ आदि।

इस रम्मत का टेक्सट तो लगभग यही रहाता है, पर इस टेक्सट में सयथावस्यकताएवं परिस्थ्तियों के अनुरूप कटौती या परिवर्तन किया जाता रहा है। पूर्ण टेकस्ट तो वैसे भीएक रात में प्रस्तुत नहीं किया जा सकता है।

प्रस्तुतिः

बीकानेर के प्रमुख चौक बारह गुवाड़ में हेड़ाऊ–मैरी रीरम्मत लगभग 125–150 वर्षों से होती रही हैं। इसरम्मत का अखाड़ा स्वर्गीय तनसुख दास जी रंगा के नाम से प्रसिद्ध है। कहते हैं कि इस रम्मत की शुरूआ स्वर्गीय जवाहर मलजी ने की तथा वे हेड़ाऊ बना करते थे।

यह रम्मत परम्परागत रूप से बाहर गुवाड़ में चतुर्दशी को देर रात को होती रही है। रममत का श्रीगणेश होने से पूर्व सभी कलाकार पूर्ण श्रद्धा के साथ भैरूंजी की पूजा करते हैं।

इसके बाद वे बारह गुवाड़ में स्थित जबरेश्वर महोवद की विधिवत् पूजा करते है।

शिव–पूजन के बादी कलाकार अखाड़े की पूजा करते हैं। अखाड़ा या कड़ा धरती पर ही गोलकार बनाया जाता है– जहाँ बालू रेत बिछाई जाती है। ऊपर रंगीन कागजों की फर्रियाँ एंव झण्डियां लगाई जाती है। इस अखाड़े के बाहर एक तरफ टेरिये (समूह में गाने वाले) तथा वादक लोग बैठते हैं। संगत नगाड़े एवं छमछमा (मंजीरे) के साथ की जाती है। अखाड़े के ारों तरफ गोला बनाकर दर्शक खड़े या बैठ जाते है।

रम्मत के प्रारम्भ में गणेश आगमन होता है। अभिनेता गणेशजी का मुखौटा लगाकर आता है। सभी कलाकार एवं टेरिये गणेश ूपजा एवं प्रार्थना करते हैं। इसके बाद जाट–जाटणी, बोहरा–बोहरी, बी–बीनणी आते हैं। जाट–जाटणी कई प्रकार के हाव–भाव एवं उछल–कूद से जनता का मनोरंजन करते है। बोहरा–बोहरी भी आते हैं तथा टेरिये इनके साथ गाते हैं। ये अभिनय एवं हाथ–पाँव संचालन करते हुए नृत्य का सा आनन्द देते हैं। बीन–बीनणीं आने पर ब्याह के गीत गाये जाते हैं।

इनके बाद मुख्य रम्मत प्रारम्भ होती है जब हेड़ाऊ और नुरसा (बहनोई–साला) आते हैं तथा दोहे बोलते हैं। दोहा आगे वाले गीत से संदर्भित होता है और टेरिये को गीत समवेत एवं बुलन्द आवाज में गाते हैं। टेरिये 15–20 तक या कभी–कभी इससे भी अधिक होते हैं। चौक के कई लोग भी टेरियों के साथ–साथउ गाते हैं। जब टेरिये गाते हैं तो हेड़ाऊ तथा नुरसा गोले में (अखाड़े में) गोलाकार नृत्य करते हुए चक्कर लगाते हैं। प्रत्येक दोहा वे बार–बार सब ओर घूमकर दर्शकों को सुनाते है। दर्शक भी दोहों एवं गदीतों का भरपूर आनन्द लेते हैं।

डांण, मुजरा, करेलड़ी, ओलंगड़ी, ओलूं, भंवराणी, सायबाजी आदि सभी या कभी–कभी या कहीं–कहीं कम गाये जाते हैं। इनके बीच–बीच हेड़ाऊ एवं नुरसा दोहे बोलकर सूत्र संदर्भ बनाये रखते हैं। पाँवों में घूंघरू बांधते है।

इसके बाद मैरियां अखाड़े या कड़े में रंगावतरण करती हैं। मैरियाँ सदा पुरूष ही बनते हैं तथा घूंघट निकाले रहते हैं। मैरियाँ आने के बाद अखाड़े में चार पात्र हो जाते हैं, जो रातभर अपने अभिनय, नृत्य आदि से दर्शकों को बाँधें रखते हैं। हेड़ाऊ और मैरियों के बीच संवाद नुरसा बनाए रखता हैं। हेड़ाऊ की बात मैरियों को तथा मैरियों के मनोभाव हेड़ाऊ को समझाते रहता है। उनके रूठने पर मनाता है। हेड़ाऊ या नुरसे के दोहे बोलने के बाद जब टेरिये गाते हैं तो

मैरियाँ नाचती हैं। टेरियों को विश्राम देने के लिए मैरियाँ वाद्यो एवं बांसुरी की धुन पर नाचजी हैं।

इस रम्मत में मैरियाँ आने के बाद गजानन्द, दास्यां निरखण जीो, पन्ना–निरखण, खामा, धणीखमा, महाराजा ने खमा, मोती वारूं, नेवड़लो, तीज, नरहर रा खड़िया, सियालो डोढिया, सियाले बाला लागो, सियालो, चाकरी, माडपुरो, जैणु–नारगढ़, पन्ना मारू, मजलिश, छैलामारू, नीम्बूडो, नगीनो, माँझल रात, आवा दो पण जावा, बागों झमीं, पीले क्यूनाजी, ओतो प्यालो, कोंकणियों, दारूड़ा, लींदड़ली उदमादो, जल्लो, कब घर आसी, साजन सिधाया, डेरा किती दूर, परदेशों मत जाव, सौक कलाली, बोलो–बोलो रे, औगणियों, म्हारै डेरे हालो, चलण ने देसों, बादीलो मनाय, आँखड़ियाँ गुलाल, कोमणिया, भेली ननद, मुजरा, घूँघटड़ों, पाड़ेरी पड़ोसन, काची नींद, नींदड़ली, क्यूं जगाई, रूसणी क्यूं मरोड़ी, पायल, डोढियों, मनावणो–राजन बोलो, हींडो, लोंगो केरी झारी, रंगमोंणे, रंगचुवे, गीगा–लोरी, हालरो, जीररो, मेंधी, जीमण, बिच्छूडो, मुजमानी, प्यारा–प्यारा लागों, एलची, थेंरा वचन सुहावणा रे, खेलण दो, शीलवन्त नार, खेतरपाल भैरूंजी आदि गीत हेड़ाऊ मैरी की रम्मत में हैं–इनके पूर्व में दोहे बोले जाते है। पर ये सभी गीत गाने जरूरी नहीं। अलग–अलग जगहों पर होने वाली इस रम्मत में सुविधानुसार कम कर दिए जाते हैं। रम्मत के अन्त में सुख–शान्ति एवं मंगल की कामना करते हुए ''सीवल माता'' गाई जाती है :

वेशभूषा :

हेड़ाऊ चूड़ीदार पायजामा, आडण पहने, साफा या पाग, तुर्राकलंगी, सिरपेच बाँधे तथा जूतियाँ पहने रहते हैं। पाँवों में घूंघरू। हाथो में बाजूबन्द, गले में हार आदि पहनते हैं। चौबन्दी भी प्रयोग में लेते हैं। पीछे ढाल बाँधते हैं। तलवार या कटार भी बाँधते हैं तथा हाथ में भाला रखते हैं।

नुरसा चुड़ीदार पायजामा, अचकन, साफा या पाग पहनता है। तुर्राकलंगी लगाता है। चोबन्दी–बाजूबन्द पहनता है। पाँव में जूते तथा घुंघरू तथा हाथ में रंग–बिरंगे पंखों वाले तुर्रे रखता है।

मैरियां राजस्थानी लहंगा, ओढणी तथा सभी आभूषण पहनती है। हाथ में दुपट्टे रखती हैं। मैरियां सती है। पाँव में घुंघरू। माथे पर बोरले, कानों में झुमके, नाक में नथ, गले में हार, ठुसी या तिमणिया, बाहों में बाजूबन्द, हाथों में चूड़ियां–मट रिया, कमर में कन्दोला आदि गहने पहनती है। इनमें कभी या परिवर्तन होता रहता है।

कलाकार :

125–150 वर्षों से चली आ रही इस रम्मत में समय–समय पर भाग लेने वाले लोग इस प्रकार से हैं–

हेड़ाऊ : की मुख्य भूमिका सर्वप्रथम स्वर्गीय जवाहरमल जी ने निभाई। उसके बाद स्वर्गीय चतुरभुज जी छंगाणी, देवोजी, सुरदासाणी पुरोहित, यजकिशन, बुलाकीदास, विजय कुमार एवं किशन कुमार पुरोहित।

मैरियां : स्वर्गीय ओंकार बाबा व्यास, मालीजी, बोहरा, सुखदेव बोहरा, चतुरभुजजी छंगाणी, जीवराजजी पुरोहित, बाली पणियों, चिमनचन्द पुरोहित, चांदरतन व्यास, ढिलू छंगाणी, पूनमचन्द पुरोहित, भागीरथ पुरोहित, शांतिलाल पुरोहित, चूरोजी, बंशीलाल पुरोहित, जगमोहन पुरोहित, सत्य नारायण पुरोहित, निराला रंगा, मुकुन्दलाल पुरोहित, धनराज पुरोहित, आशानन्द पुरोहित।

टेरिये : प्रमुख टेरिये रहे हैं– स्वर्गीय उस्ताद तनसुख दास जी रंगा, लालचन्द जी पुरोहित, फरसराम जी पुरोहित, उधोदास जी पुरोहित, मदनगोपाल जी पुरोहित, गोपालदास जी पणिया, मिंडूजी व्यास, सुन्दर लाल जी पुरोहित, नुक्को जी छंगाणी, दासी जी ओझा।

संगीत :

लोकनाट्य मुख्यतः पद्यात्मक एवं संगीतात्मक होते हैं। शब्द–स्वर, लय और ताल इसके प्राण शक्ति होते हैं। सारी रचनात्मक ऊर्जा संगीत से ही अभिव्यक्त होती है। संगीत भी एकल, युगल पर मुख्यतः सामूहिक स्वरों में गाया जाता है। गायन एवं वाद्य संगीत–दोनों का सहयोग कथा–प्रवाह को मिलता है। यह संगीत मुख्यतया लोक–धुनो पर आधारित होता है। संगीत का कम्पोजीशन या तो परम्परागत धुनो पर होता है अथवा उस क्षेत्र विशेष की रंगत लिए स्वयं गायकों द्वार कम्पोज होता है।

यह सच है कि लोकनाट्यों में शास्त्रीय संगीत का अधिक समावेश नहीं मिलता, फिर भी बहुत से लोकनाट्यों में कई गीत शास्त्रीय रागों पर भी आधारित होते हैं अथवा शास्त्रीय रागों की छाया या रंग उनमें सुना जा सकता है। हेड़ाऊ–मैरी री रम्मत में भी शास्त्रीय संगीत की राग–रागनियां मिलती हैं। इसमें, मांड, सारंग सोरठ, खमाच, देस आदि रागों की पधानाता है। जिसे गायक शास्त्रीय संगीत का विधिवत् ज्ञान न रखते हुए भी वर्षो से गा रहे हैं। इस रम्मत में तिताला, झूमरा, दादरा, छीपचन्दी, कवाली, कहरवा आदि भिन्न–भिन्न तालों का उपयोग होता है। इनमें टेर तथा अलाप बहुत ऊँचे स्वरों में (तार सप्तक तक) होता है। गाते वक्त रे, अरे, हे, हों, हरि, होरे आदि का प्रयोग गायन–मण्डली रस में डुबकर अपनी पूरी शक्ति एवं ऊर्जा से गाती है तभी हजारों लोगों की भीड़ के बावजूद गीत के शब्द तक स्पष्ट सुनाई देते है। इस रम्मत में दोहे बोलने का भी अंदाज पूर्णतया मौलिक एवं आकर्षक हैं– जिसमें लयात्मकता होती है। जब कलाकार अकला दोहा बोलता है तो उसे भी अपना स्वर बहुत बुलन्द रखता पड़ता है।

''हेड़ाऊ–मैरी री रम्मत'' की भाषा मुख्यतः बीकानेर के भीतरी भाग में बोली जाने वाली भाषा है। इसमें अक्षरों पर अनावश्यक ''ओंकार'' का प्रयोग किया जाता है–जैसे ''पाणी'' की जगह ''पोणी'', माँझल की बजाय ''मोंझल'', कांय सूं की बजाय कोंय सूं बाला जाताहै। इस रम्मत की पोथियां सन् 1940 या उससे पूर्व छपी हुई हैं– उस समय ''ळ'' लैटर नीं मिलता था–मुख्यतः कलकत्ता में अतः ''ळ'' की बजाय ''ल'' ही प्रयोग में आया हैं, नई की बजाय ''नहीं'' है इसमें राजस्थानी की बजाय कई शब्द हिन्दी के लगते हैं। पर गाने–बोलने वाले सही उच्चारण ही करते हैं। राजस्थानी में ''ढ'' के नीचे नुक्ता ''ढ़'' नहीं लगता, पर यहाँ सभी जगह नुक्ता लगा है। हिन्दी तथा उर्दू के शब्दों का भी प्रयोग हुआ है। राजस्थानी उक्तियों एवं मुहावरों का प्रयोग भाषा को मौलिकता के साथ–साथ सशक्त एवं प्रभावशाली बनाते हैं। भाषा में लयात्मकता, ध्यवन्यात्मकता एवं कोमलता है। लोकभावों की सही अभिव्यक्ति लोक–भाषा में ही संभव है और इस रम्मत की भाषा लोक–भाषा है।

अलंकार–रस :

उपम, उत्प्रेक्षा, अनुप्रास आदि अलंकारों का बहुतायत में प्रयोग हुआ है। श्रृंगार रस के संयोग एवं वियोग दोनों पक्षों का सफल प्रयोग हुआ है। भक्ति एवं शान्त रस के भाव भी अभिव्यक्ति हुए हैं। वीर रस का भी उपयोग कहीं–कहीं हुआ है। हास्य भी है।

अभिनय :

हेड़ाऊ–मैरीरी रम्मत संगीत–नृत्य प्रधान रचना होने के कारण इसमें आंगिक तथा वाचिक अभिनय ही प्रमुख रूप में किया जाता है। आहार्य का भी पहिले सही ध्यान रखा जाता था पर अब वेशभूषा में परिवर्तन परिलक्षित हो रहा है। सात्विक अभिनय का अल्प प्रयोग होता है।

नृत्य :

रम्मत में बार–बार नृत्य किया जाता है। पर वह नृत्य भी किसी विशेष लोकनृत्य के रूप में नहीं होता। घूमर चूंकि यहाँ का मुख्य लोकनृत्य है, अतः उसी का आधार लिया जाता है। वैसे मैरी बनने वाले संगीत एवं ताल की संगत में स्वतः स्फूर्त हो, हाथ–पाँव संचालन करते हैं। झुकते हैं–घूमते हैं, लुळ–लुळ नाचते हैं। कई कालाकार अति चित्ताकर्षक नृत्य करते हैं। लोक रीझ जाए, बस वही नृत्य है–रम्मत का।

इस प्रकार बीकानेर में अनेक मोहल्लों में वर्षो से प्रस्तुत होने वाली यह रम्मत एक लोकप्रिय लोकनाट्य के साथ–साथ एक स्तरीय सांगितिक एवं साहित्यिक कृति हैं। एक रम्मत एक शताब्दी से अधिक समय से जनता के आकर्षण का केन्द्र बनी रहे यह लोकानुरंजन कला की श्रेष्ठता सिद्ध करता है–लोक–साहित्य की प्रभावशीलता प्रगट करता है।

हेड़ाऊ–मैरी री रम्मत–मरूनायक जी का चौक

इतिहास :

मरूनायक जी के चौक की हेड़ाऊ–मैरी की रम्मत अन्य चौकों में होने वाली इन रम्मत से काफी पुरानी मानी जाती है। आजकल होने वाली रम्मत के एक शीर्ष सदस्य श्री मनका महाराज ने बताया कि मरूनायक जी के चौक में यह रम्मत लगभग 180 वर्षों से चल रही है। इस रम्मत के उद्‌गम के बारे में उन्होने बताया कि मूलतः इस रम्मत का प्ररम्भि स्वरूप देशनोक के बावरियों की प्रस्तुतियों में मिलता है। बीकानेर में ये बावरिये आए तो यहाँ` सल्ले–मल्ले सेवगों ने इसरम्मत को अपनाया और इसका रूपान्तरण करते हुए इसमें बीकानेर के लोकप्रिय लोकगीतों को शामिल कर नया रूप प्रदान किया। उनका किया हुआ संकलन–संग्रही ही हेड़ाऊ–मैरी की रम्मत कहलाया। राजस्थानी गीतों एवं लोकगीतों का संकलन होने के कारण ही इसमें कोई पुष्ट कथानक नहीं मिलता। बस हेड़ाऊ राजा या ठाकुर, मैरियां (रानियां) तथा नूरसा आदि पात्रों के माध्यम से दोहे एवं गीतों को बोल–गवाकर इसे रम्मत के स्वरूप में ढाल दिया। मूलतः यह बीकानेर में प्रचलित लोकप्रिय लोकगीतों की सामूहिक प्रस्तुति है।

इस रम्मत की स्थापना स्वर्गीय दासूरामजी ने की। वे अपने समय के प्रथम उस्ताद थे तथा सल्ले–मल्ले उस समय हेड़ाऊ–नुरसा बने। मरूनायक जी के चौक में यह रम्मत फागुन सुदी 12 की रात को हर वर्ष होती हैं। रम्मत से पूर्व डांडिया –नृत्य होता है।

मरूनायकजी के चौक कीइसरम्मत के प्रमुख उस्ताद सर्वश्री जीतामलजी सेवग, चम्पालाल जी लखाणी, बल्लभदासजी सेवग, गोकलदा जी जोशी, नीमजी जोशी, किसनलाल जी कालाणी जोशी, जीवण जोशी (गाने के उस्ताद) एवं किशन जोशी आदि। स्व. मोहनलाल जी ने लिखा है कि जीतामल जी रचित दो ख्याल ''राजा मोरध्वज'' और ''भर्तृहरि'' बड़े ही सुन्दर एवं अनूठे हैं। श्री पन्नालाल (मनजी) मूंधड़ा तथा शिवगुलाम इनके प्रमुख सहायक थे।

इस रम्मत के हेड़ाऊ की भूमिका निभाने वाले मुख्य लोग–सर्वश्री भाइयोजी गज्जाणी, गोपालदास जी करनाणी, मुरली मनोहन जी गज्जाणी, पदजी पुरोहित, लखमीचन्द जी पुरोहित, गणपतजी देराश्री, जगन्नाथ जी (मींडोजी), आंटो बाबो जोशी, छदामजी जोशी, रामजी गज्जाणी,

गणेश महाराज जी जोशी, शिवशंकर जी गज्जाणी आदि। इनमें जीतामलजी सेवग श्रेष्ठ कलाकार तथा गायक थे। लखमीचन्द जही पुरोहित भी अति प्रसिद्ध कलाकार थे। मुरली मनोहर गज्जाणी वर्षो से हेड़ाऊ की भूमिका सफलता से अदा करते रहे।

नुरसा की भूमका निभाई सर्वश्री छोटूलाल जी उपाध्याय, जवारजी जोशी, जियोजी सेवग, भाइयोजी जोशी, शिवरतन जी (मीनजी) जोशी, गोकुलदास जी जोशी आदि ने।

प्रसिद्ध मैरियाँ रही– सर्वश्री चोरजी जोशी, राधेश्याम जी जोशी, भीखजी नाई, लालजी नाई, अजयकुमार देराश्री आदि।

इन पात्रों के साथ रम्मत का सबसे प्रमुख अंग हैं–उसके ''समूह गायक'' जिन्हें दूसरी रम्मतों में टेरिये भी कहा जाता है। वैसे ये समूह गायक ही रम्मत के प्राण होते है। यदि समूह गायक श्रेष्ठ हैं, तो रम्मत श्रेष्ठ रहती है और यदि समूह गायक कमजोर होते हैं, तो रम्मत फीकी रहती है। समूह गायक अपनी गायकी में कुशल होते हैं– चाहे व शास्त्रीय संगीत या परम्परागत गाने वाले न हों, पर वे जिस बुलन्दी से गाते हैं, जितने ऊँचे स्वरों में गाते हैं, उसे गाना बड़ा कठिन काम है। खासतौर से झूमरा ताल में।

मरूनायकजी के चौक की हेड़ाऊ–मैरी री रम्मत के समूह गायक रहे हैं– सर्वश्री जीतमल जी सेवग, चम्पालाल जी लखाणी, लक्ष्मीदास जी (मींडोजी) द्वारकाणी, द्वारकादास जी जोशी, नरसिंह दास जी सेवग, मथरादास जी जोशी, छदाम जी जोशी, जवाहर जी जोशी, वासुदेव जी जोशी, राधेश्याम जी जोशी, किशनलाल जी जोशी (कालाणी), ककलोजी हर्ष, जीवण जी जोशी, गेवर जी भादाणी, शंकरलाल जी बिहाणी, किशनलाल जी बिहाणी, माधोदास जी बिस्सा, गंगादास जी सादाणी, मन्नु जी लखाणी, अर्जित की थी। आपने 1947 से महिला पात्र निभाना शुरू किया था।

वर्तमान में ''शाहजादी नौटंकी'' में भाग लेने वाले रंगकर्मी हैं– सर्वश्री कृष्ण कुमार बिस्सा, रामकुमार बिस्सा, मनोज व्यास, श्याम व्यास, बदलेव दास बिस्सा, भैरूंरतन बिस्सा, कमल किशोर बिस्सा, इन्दु कुमार बिस्सा। सर्वश्री मनोज व्यास, श्याम व्यास तथा बलदेव दास बिस्सा महिला पात्रों का अभिनय करते हैं और मास्टर गिरिराज बिस्सा बाल कलाकार हैं। इसके सिवाय भाग

लेते हैं सूर्यप्रकाश बिस्सा, अशोक कुमार व्यास, बजरंग लाल जोशी, बुलोजी व्यास। वर्तमान में उस्ताद हैं–श्री आशाराम जी जागा तथा कृष्ण कुमार बिस्सा।

संगीत पक्ष संभाला था स्वर्गीय अमरचन्द पुरोहित तथा स्वर्गीय गणेश रंगा ने। अब हारमोनियम पर संगत करते हैं श्री सांवरलाल रंगा तथा पूर्व में नगाड़ा वादनभी घमजी करते थे। वर्तमान में भी गणेशदास बिस्सा उर्फ गजानन्द नगाड़ा वादन कर रहे है। इसमें मुख्य तालें–दादरा, कहरवा, रूपक, दीपचन्दी, खेमटा, झपताल, लग्गी, हारी–सब चौगुण में लगती है।

इस रम्मत के बुजुर्ग कलाकार–उस्ताद श्री आशाराम जागा ने बताया कि बहुत पहिले नत्थाराम हाथरसी ने बीकानेर आकर शाहजादी नौटंकी का मंचन किया था। स्वर्गीय जागनाथजी, हीरालाल जी व्यास, जीतमल जी सेवग, मूलदास जी स्वामी ने इस नौटंकी को आगे बढ़ाया। संगीत कम्पोजीशन–स्व. नत्थराम जी हाथरसी का ही चल रहा है।

प्रस्तुति :

बसंत पंचमी को अभ्यास शुरू कर, यह रम्मत फाल्गुन सुदी दसमीं को बिस्सों के चौक में रात को आयोजित होती है तथा प्रातः 101–10:30 बजे तक चलती है। छः पाटे मिलकार मंच बनाया जाता है–जिस पर गद्दे–तकिये आदि लगाये जाते हैं। मंच के ऊपर फर्रिया आदि से सजावट की जाती है। पहिले इस नौटंकी में टेरिये नहीं होते थे–स्वयं कलाकार ही गाते थे। अब टेरिये पाटे पर बैठते हैं।

सर्वप्रथम रमणसा बिस्सा के घर में स्थित आशापुरा के मन्दिर में विधि–विधान से पूजन होता है तथा फिर बिना यज्ञोपवित डाले बालक को आशापुरा देवी के रूप में सजाया जाता है। मंच पर आकर आशापुरा नाचती है तथा टेरिये लटियाल गाते हैं। फिर खाखी आता है, जिसको काला रंगा जाता है, वह मूसल लेकर नाचता है। मनोरंजन करता है। उसके बाद जोशी–जोशण आकर नाचते–गाते हैं तथा सुखद भविष्य की कामना करते है।

फिर नौंटकी के सभी पात्र मंच पर आकर बैठते हैं। गुरू जागनाथ जीकी वन्दना तथा जय अम्बे गाते है।

जय अम्बे, जय अम्बिका जय जग जननी माय

लाल है दास तिहारो, जागनाथ उस्ताद मदद कर

गुण गाअला थारो।

इसके बाद नौटंकी शुरू हो जाती है। पात्र गाते हैं, टेरिये गाते हैं। बीच–बीच में नृत्य भी होता है। नौटंकी प्रातः तक चलती है। अन्त में 'माताए' गाकर सब कलाकार रमणसा उस्ताद के घर जाते हैं, वहाँ लूणा–पाणी किया जाता है। फिर सब कलाकार नृसिंह जी के मन्दिर जाते है।

वेषभूषा :

पुरूष पात्र–चूड़ीदार पायजामा, शेरवानी, साफे बांधते हैं। तलवार–ढाल बांधते हैं। नंगे पाँव रहते है। महिला पात्र राजस्थानी महिलाओं की वेशभूषा लहंगा–ओढ़णी आदि तथा आभूषण पहनती है।

कथनाक :

बिस्सों के चौक में प्रतिवर्ष प्रस्तुत की जाने वाली ''नौटंकी शाहजादी'' नौटंकी के कथानक का आधार लोककथाओं के तत्वों पर आधारित है। ऐसी लोककथाएं कई प्रान्तों में उपलब्ध हो जाती है। राजस्थान में इससे साम्य रखती प्रेम लोककथा है। लोक–साहित्य कीकोई सीमा नहीं होती। उसमें एक विलक्षण शक्ति एवं आकर्षण होता है कि वह अपने मूल स्थान से दूर–दूर

स्थानों तक फैल जाता है। कई बार तो प्रान्तों की क्या देशों की सीमाओं को भी पार करके, वहाँ का बन जाता है। इसका कारण है लोक का मन, उसकी कल्पानाएं, उसकी भावनाएं, उसकी अनुभूतियाँ उनकी अभिव्यक्तियाँ समान होती है। यही समानता लोक–साहित्य को सार्वदेशिक स्वरूप प्रदान कर देती है।

अधिकांश विद्धान मानते हैं कि नौटंकी का उद्‌भव पंजाब में हुआ था तथा फिर यह अन्यत्र फैलती गई।

''नौटंकी शाहजादी'' पंजाब की एक लोककथा पर आधारित है। श्री मोहन स्वरूप भाटिया का अभिमत है कि इस नौटंकी शाहजादी की प्रेमकथा गायन के माध्यम से इतनी लोकप्रिय हुई कि इसके पीछे इस शैली में लिखी दूसरी लोककथा लक्ष्मीनारायण जी जोशी, नरसिंहदास जी जोशी, अजय कुमार देराश्री, गिरिराज रतन जोशी, अशोक कुमार जोशी, सुशील कुमार जोशी, कस्तूर चन्द सेवग, लालजी सेवग, चतुर्भुजजी सेवग, दारासिंह जोशी, विजय कुमार व्यास, श्रीकिशन जी जोशी, चाँदरतन जोशी आदि।

पर इनमें प्रमुख गायक रहे हैं– सर्वश्री जीतामल जी सेवग, नरसिंहदास जी सेवग, चम्पालाल जी लखाणी, किशनलाल जी जोशी, जीवण जी जोशी आदि।

रम्मत में नगाड़ों की दो जोड़ी प्रमुख वाद्य रहती हैं तथा मंजीरों का उपयोग किया जाता है। कुशल नगाड़ा वादक रहे हैं– सर्वश्री शिवदयाल जी सेवग, मींड जी सेवग, चम्पालाल जी

सेवग, गंगादास जी सेवग, रघुनाथदास जी जोशी, सेवारामजी जोशी, चोरजी सेवग, भूरोजी सेवग, तुलसीराम जी सेवग, चाँदरतन जोशी आदि।

श्री मनका महाराज ने यह भी बताया कि जूनागढ़ में राजाओं–रानियों के समक्ष भी हेड़ाऊ–मैरी री रम्मत की जाती थी। राजा तथा उनके सामन्त आदि रात को तीन बजे तक यह रम्मत देखते थे। फिर रानियाँ आदि देखने आती थी। उस समय राजा आदि चले जाते थे, सिर्फ औरतें देखती थी।

अन्य स्थानों पर होने वाली इस रम्मत में थोड़ी हँसी–दिल्लगी या व्यंग्य–कटाक्ष आदि किये जाते थे। पर मरूनायकजी के चौक की रम्मत में अधिक मर्यादा तथा संयम बरता जाता था।

टैंक्स्ट व प्रस्तुतीकरण सब जगह एक जैसा ही रहता था। जिसमें सम एवं अन्य अनुकूलतानुसार कटौती कर दी जाती थी अथवा हेर–फेर किया जाता था।

उपसंहार :– प्रथम चरण के इस प्रतिवेदन में बीकानेर की रम्मतों की पहचान देश–व्यापी स्तर पर बनाने हेतु व उस्ताद और कलाकारों की व्यावसायिक स्तर पर पहचान बनाने हेतु कार्य का प्रतिवेदन है।

बीकानेर की रम्मतों पर **''वृत्त चित्र''** निर्माण का कार्य सतत चल रहा है। इसका सम्पूर्ण निर्माण द्वितीय चरण के उपरान्त होगा।

द्वितीय व तृतीय चरण में किये जाने वाले क्रिया कलाप निम्न है –

द्वितीय चरण – (1 जून 2016 से 31 अगस्त 2016 तक)

गत चरण में किए गये कार्य की समिक्ष व शेष रहे कार्यों को पूर्ण करते हुए इस चरण में निम्न क्रिया कलाप किए जायेंगें।

1. लोक सृजन धर्मों, लोक नाट्य विशेषज्ञ साहित्यकार, नाट्कार व लोक कला के क्षेत्र में कार्य करने वाले शोधकर्ता, प्रस्तोता एवं प्रेक्षक की उपस्थिति में कार्यशाला, सेमीनार एवं गोष्ठियों का आयोजन।
2. बीकानेर से बाहर राजस्थान की अन्य रम्मतों पर शोध परक कार्य जैसे –
    1. रावलों की रम्मत
    2. मेघवालों की रम्मत
    3. जैसलमेर की रम्मत
3. बीकानेर की अन्य रम्मतों जो कि होली पर्व के बाद मंचित होती है पर शोध परक कार्य।
4. बीकानेर की रम्मतों पर वृत्त चित्र निर्माण हेतु गुरूओं (उस्ताद) व कलाकारों और सम्बन्धित लोक कला विशेषज्ञों के साक्षात्कार।

तृतीय चरण – (01 सितम्बर 2016 से 30 नवम्बर 2016 तक)

उपरोक्त दोनों चरणों में किए गये क्रिया कलापों की समिक्षा व आगामी माहों में किए जाने वाले कार्यों की रूप रेखा।

1. बीकानेर की रम्मतों को विभिन्न स्थानों पर प्रस्तुति करवाना।
2. बीकानेर की रम्मतों पर वृत्तचित्र (डाक्यूमेन्ट्री) का निर्माण कर प्रचार–प्रसार करना।
3. तीनों चरणों में किए गये शोध परक कार्य को पुस्तक रूप प्रदान करना।
4. बीकानेर की रम्मतों के प्रचार प्रसार हेतु इलेक्ट्रोनिक मिडिया व अन्य प्रचार प्रसार साधनों द्वारा प्रचार–प्रसार करना।
5. रम्मतों के उस्ताद (गुरूओं) और कलाकारों की पहचान हेतु सम्मान समारोह का आयोजन

उपरोक्त टाईम फ्रेम ऑफ प्रोजेक्ट में किए गए चरणबद्ध क्रियाकलापों में लचिलापन निहित है। आवश्यकता अनुसार क्रिया कलाप कम व अधिक तथा चरणों में फेर–बदल सम्भव है।

ICH SCHEME 2015-16

File No./email letter no. 28-6/ICH-Scheme/92/2015-16
Date. 29 January 2016

सचिव
गूंज कला एवं संस्कृति संस्थान
बीकानेर।

परिशिष्ट

दैनिक भास्कर

बीकानेर, बुधवार 23 मार्च, 2016

बीकानेर की रम्मतों पर बनेगा वृचित्र

सिटी रिपोर्टर|बीकानेर

गूंज कला एवं संस्कृति संस्थान बीकानेर की ओर से शहर में होने वाले लोक नाट्य रम्मत पर वृत चित्र बनाया जाएगां। समन्वयक जयदीप उपाध्याय ने बताया कि भारत की अर्मूत कला सांस्कृतिक विरासत और विविध सांस्कृतिक परंपराओं का संरक्षण 2015-16 की योजना के तहत केन्द्रीय संगीत नाटक अकादमी के सहयोग से इसका निर्माण होगा। बीकानेर में विभिन्न स्थानों पर होने वाली रम्मतें अमरसिंह राठौड़ की रम्मत, हडाउ मेरी की रम्मत, स्वांग मेहरी की रम्मत, नौटंकी शहजादी, फक्कड़ दाता की रम्मत आदि के कथानाक, नाट्य शैली एवं गायन शैली व प्रदर्शन पर रामसहाय हर्ष के निर्देशन में वृत चित्र का निर्माण किया जा रहा है। इसमें रम्मतों के कलाकारों एवं उस्तादों के साक्षात्कार, पूर्वाभ्यासों एवं प्रदर्शन को वृत चित्र में शामिल किया गया है। कार्यक्रम संयोजक रोहित बोड़ा ने बताया कि संस्थान द्वारा इस योजना के रम्मत के कलाकारों, उस्तादों एवं कला मर्मज्ञों के साथ कार्यशाला होगी। साथ ही इनका सम्मान किया जाएगा। लोक कला मर्मज्ञ श्रीलाल मोहता के मार्गदर्शन में रम्मतों के संरक्षण एवं संवर्धन के लिए कलाकारों एवं उस्तादों की सूचीबद्ध कर प्रलेखन किया जाएगा।

बारहगुवाड़ चौक में हुआ रम्मत हेड़ाऊ मेहरी का मंचन

शृंगार रस रम्मत में रूठी म्हरी को मनाया

बारह गुवाड़ में स्वांग म्हरी रम्मत खेलते कलाकार।

बांठियां चौक में हुई नुक्कड़ महासभा में फाग गीत गाते कलाकार।

कल्चरल रिपोर्टर | बीकानेर

प्रेम एवं शृंगार रस प्रधान हेड़ाऊ-म्हरी की रम्मत का मंचन मंगलवार देर रात बारहगुवाड़ चौक में हुआ। दाम्पत्य जीवन के प्रेस प्रसंगों पर आधारित इस रम्मत को दर्शकों की खूब सराहना मिली।

रम्मत में लय बद्ध संगीत, कलाकारों की बुलंद आवाज और जोश के देखने शहर के हर हिस्से से लोग बारह गुवाड़ पहुंचे। भगवान गणेश के अवतरण के साथ शुरू हुई रम्मत में में सुख समृद्धि व ऐश्वर्य की कमाना की गई। स्वांग पात्र बोहरा-बोहरी, खाकी व जाट-जाटणी के मंच पर पहुंचने ने भी दर्शकों को रोमांचित किया। निंबुडो, मांझल रात, मजलिश, ओतो प्यालो, नींदड़ली, डेरा कितनी दूर, परदेश मत जावो आदि गीतों रात भर दर्शकों को बांधे रखा। कथानक में ठाकुर हेड़ाऊ अपने कर्त्तव्य पालन के लिए बाहर जाना चाहता है लेकिन मेहरी उसे रोकती है। हेड़ाऊ के नहीं मानने पर मेहरी रूठकर अपने पीहर चली जाती है। हेड़ाऊ अपने साले नूरसा के माध्यम से उसे मनवाता है। मेहरी के मानने के बाद प्रेम के गीत, बेटे के जनम की खुशियां आदि के गीतों के सहारे शांतिलाल पुरोहित के निर्देशन में रम्मत बुधवार सुबह तक चली।

इन्होंने निभाई भागीदारी

रम्मत में शांतिलाल पुरोहित, जमनदास सेवग, बृजमोहन, पूनमचंद, भंवरलाल, शिवशंकर, राधेश्याम पुरोहित, जयकिशन, राधेश्याम, कैलाश पुरोहित, बबूलाल व्यास, भैरुंरतन पुरोहित, गोविंद पुरोहित, राजकुमार रंगा रामलाल, विजय कुमार, कन्हैयालाल, मूलचंद, मुकंद लाल आदि ने रम्मत में मुख्य भूमिकाएं निभाई

रम्मतों में साकार हुआ वीर और श्रृंगार रस

बीकानेर के आचार्य चौक में 'अमरसिंह राठौड़' और मरुनायक चौक में 'हड़ाऊ मेहरी' सोमवार को रम्मत मंचित करते कलाकार।

बीकानेर @ पत्रिका

patrika.com

रंगों का त्यौहार होली क्षेत्र में हर्षोल्लास से मनाया जा रहा है। होली पर्व को लेकर सप्ताह भर से शहर में प्रतिदिन विभिन्न कार्यक्रम हो रहे हैं। जिनमें बड़ी संख्या में आमजन शामिल हो रहा है। सोमवार को भी शहर में बड़ी संख्या में कार्यक्रम हुए।

अमरसिंह राठौड़ की रम्मत

आचार्य के चौक में वीर रस प्रधान अमरसिंह राठौड़ की रम्मत का मंचन हुआ। इसमें हिन्दू व मुस्लिम दोनों संस्कृतियों का वर्णन किया गया। वरिष्ठ रम्मत कलाकार डां. मेघराज आचार्य ने बताया कि शुरुआत मां भवानी स्वरुप के अखाड़े में अवतरण के साथ हुई। अवतरण के समय चौक व घरों की छतें खचाखच भर गई। रम्मत में 'मेरे दिल में खार यार, मैं सिंह ज्यों लल कारुगों, बादशाह की कचेड़ी बीच , उस नीच चुगलखोर को मारुंगो' के संवाद हुए। रम्मत में अमरसिंह, बादशाह, सलावत खां, बीबी, हाडी रानी, रामसिंह, शेरखां पात्रों की भूमिका है। रम्मत में डां. मेघराज आचार्य, दीनदयाल आचार्य, बद्रीदास जोशी, सुरेश आचार्य, विजयशंकर आचार्य, मूलचंद आचार्य, विप्लव व्यास, मनोज कुमार, नवनीत नारायण ने भूमिका निभाई।

मरुनायक चौक में हड़ाऊ मेहरी रम्मत

उधर, मरुनायक चौक में श्रृंगार रस प्रधान हड़ाऊ मेहरी रम्मत शुरू हुई। मां भवानी स्तुति के बाद जोशी व चेला पात्रों ने गीत-नृत्यों से अच्छे जमाने के शगुन मनाए। पति-पत्नी के प्रेम से भरपूर इस रम्मत के गीत व दोहे विशेष लोकप्रिय है। रम्मत के वरिष्ठ कलाकार अजय देराश्री ने बताया कि यह रम्मत विभिन्न अवसरों, ऋतुओं, मेले व लोकजीवन आधारित गीतों से भरपूर है। यह रम्मत संयोग एवं वियोग, हास्य एवं करुण रस पर आधारित है। हड़ाऊ मेहरी की रम्मत ठाकुर हड़ाऊ, दो पत्नीयां मेहरी व नुरसा से सम्बंधित है। रम्मत में दास्यां, निरखण दीजो, कोमणिया, नीम्बूड़ो, हाथ रो, नुरसा, बिच्छूड़ो आदि पात्र हैं। रम्मत के कलाकारों में अजय कुमार, प्रभू लखाणी, घेवरचंद भादाणी, शिवशंकर गज्जाणी, महेश गज्जाणी, खुशाल पुरोहित, मेघसा जोशी, सुशील जोशी, दारसा जोशी, संजय जोशी ने भूमिका निभाई।

राजस्थान पत्रिका

बीकानेर . सोमवार . 21.03.2016

रम्मत 'स्वांग मेरी' का मंचन

बीकानेर में रविवार को कीकाणी व्यासों के चौक में रम्मत का मंचन करते कलाकार।

बीकानेर @ पत्रिका

patrika.com

कीकाणी व्यासों के चौक में लटियाल नाट्य एवं कला संस्थान की ओर से उस्ताद जमनादास कल्ला की स्वांग मेरी की रम्मत का मंचन हुआ। रम्मत कलाकार मदन गोपाल व्यास ने बताया कि ख्याल गीत में 'दीमक बन नेता देश ने खाय, छोड़ कृष्ण रो हाथ दुर्योधन सू हाथ मिलाय' पेश किया गया। कीकाणी व्यासों के चौक में मां लटियाल भवानी के अवतरण के साथ रम्मत शुरू हुई। रम्मत के कलाकारों ने स्तुति-वंदना कर सुख-समृद्धि की कामना। मां के अवतरण के बाद चौमासा, ख्याल व स्तुति वंदना की गई। रम्मत में गणेश दास, नथमल ओझा, मदनगोपाल, जुगल किशोर, बँलदेव दास, परमेश्वरदास, विष्णुदत, एस.पी. ओझा ने मुख्य भूमिका निभाई। स्वांग मेरी रम्मत के चौमासा गीत में चौमासा मास पति से दूर एक पत्नी की मनोभावनाओं को गीत के माध्यम से व्यक्त किया गया जिसमें 'तन चमके चांदी ज्यौ म्हारो नेणो नींद न आवे, बीकाणा चौंमासा बरसे' के माध्यम से नारी मन की बात रखी गई।

होलाष्टक के दौरान बारह गुवाड़ चौक में जबरेश्वर नाट्य एवं कला संस्थान की ओर से उस्ताद बंशी महाराज ओझा के सान्निध्य में स्वांगमेरी रम्मत का मंचन किया गया। बारह गुवाड़ चौक में रम्मत की शुरुआत उस्ताद तनसुख रंगा के अखाड़े में भगवान गणेश के अवतरण के साथ हुई। अवतरण के बाद बोहरा-बोहरी, खाकी व जाट-जाटणी के पात्रों की ओर से गीत व नृत्य गाया गया व अच्छे जमाने के शगुन मनाये गये।

रम्मत में चौमासा का प्रमुख गीत गाकर सामूहिक प्रस्तुति दी गई। चौमासा गीत में पति-पत्नी के चौमासा मास में साथ रहने पर चास मास के माध्यम से चौमासा का वर्णन किया गया जिसमें 'चतरमास चढी मस्ताई, अबके चौमासा संग में रंग रसिया' के गीत प्रस्तुत किये गये।

दैनिक भास्कर

बीकानेर, शनिवार 12 मार्च, 2016

रम्मतों के अभ्यास में रसिये लगा रहे टेर

शहर में परवान पर है रम्मतों का पूर्वाभ्यास

सिटी रिपोर्टर | बीकानेर

होली के त्योंहार पर फाल्गुन शुक्ल द्वादशी की रात को शुरू होने वाली रम्मतों को लेकर बसंत पंचमी पर शुरू हुआ रम्मतों का पूर्वाभ्यास परवान पर है।

लोकनाट्य की प्राचीन कला को संरक्षित व सुरक्षित रखने के लिए शहर के विभिन्न मोहल्लों में होने वाली इन रम्मतों को लेकर हो रहे अभ्यास में कलाकारों के साथ ही रसिये भी देर रात तक संवादों में टेर भरकर सुर में सुर मिला रहे हैं। आचार्यों के चौक में वीर तथा श्रृंगार रस प्रधान अमरसिंह राठौड़ की रम्मत का पूर्वाभ्यास अंतिम दौर में पूरे परवान पर चल रहा है। सवा सौ साल से भी अधिक परंपरा के अनुसार मंचित होने वाली इस रम्मत के पूर्वाभ्यास में राय भवानी, अमरसिंह राठौड़, हाड़ी रानी, बादशाह, सलावत खां, रामसिंह सहित अन्य किरदार निभाने वाले कलाकार पूरे मनोयोग से पूर्वाभ्यास करने में लगे हुए हैं। आचार्यों के चौक स्थित रघुनाथ मंदिर में ये कलाकार डॉ. मेघराज आचार्य के नेतृत्व में अभ्यास कर रहे हैं। डॉ. आचार्य ने बताया कि रम्मत का मंचन बीस मार्च को देर रात से अगले दिन सुबह तक होगा। रम्मत की शुरुआत राय भवानी के पदार्पण से होगी तथा समापन भैरूंनाथ की वंदना व स्तुति के साथ होगा।

अमरसिंह राठौड़ की रम्मत की रिहर्सल करते कलाकार।

रजि. सं. 15/2001–2002 मों. 9783964442

गूंज कला एवं संस्कृती संस्थान

सी–122सी, मुरलीधर व्यास नगर, बीकानेर

ICH SCHEME 2015-16
(केन्द्रिय संगीत नाटक अकादमी, नई दिल्ली के सहयोग से)

बीकानेर की लोक नाट्य रम्मत के गुरू/कलाकार एक परिचय

1. नाम (गुरू/कलाकार) –
2. पिता का नाम –
3. निवास का पता –
4. मो॰ नं॰ –
5. आयु –
6. शिक्षा –
7. व्यवसाय –
8. रम्मत में कार्य का क्षेत्र –
   (1) कलाकार ☐ (2) वादक ☐ (3) गायक ☐
   (4) निर्देशन ☐ (5) अन्य ––––––––––
9. रम्मत विशेष के क्षेत्र में कलाकार/गुरू के रूप में कार्य का अनुभव
   (विस्तृत रूप से संलग्न करें मय फोटो ग्राफ्स)

पूरा नाम व
हस्ताक्षर

भारत की अमूर्त सांस्कृति विरासत एवं परम्पराओं के संरक्षण की योजना का प्रपत्र

1. **प्रस्ताव योजना का कार्यक्षेत्र राज्य —** राजस्थान
2. **योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत/परम्परा का नाम —** राजस्थान की सांस्कृतिक विरासत ''लोक नाट्य, रम्मत, का संरक्षण संवर्धन एवं प्रलेखन द्वारा सुदृढ़ीकरण एवं एकीकरण।
3. **योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत/परम्परा से सम्बंधित समुदाय का भाषिक क्षेत्र और भाषा, उपभाषा तथा बोली का विवरण —** हिन्दी व राजस्थानी
4. **योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत/परम्परा से स्पष्ट रूप से सम्बंधित प्रतिनिधि ग्राम, समुदाय, समूह, परिवार एवं व्यक्ति का नाम एवं संपर्क —** पश्चिमी राजस्थान के बीकानेर अंचल में होने वाली ये लोक नाटय रम्मत मुख्यतः पुष्करणा ब्राहम्णों और उनसे जुडी हुई उप जातियों द्वारा खेली (मंचित की) जाती है। ये लोक नाट्य रम्मत किसी व्यक्ति विशेष द्वारा न होकर परम्परा से चले आ रहे मण्डलों या अखाड़ों द्वारा प्रस्तुत की जाती है, ये लोकनाट्य रम्मत व्यावसायिक स्तर पर नहीं किये जाते और न ही इनके कलाकार व्यावसायिक होते है। हर दल व मण्डल के अपने-अपने कलाकार होते है, कभी-कभी कलाकार दूसरी रम्मत में भी भाग व सहयोग देता है। अधिकांश आयोजन अलग-अलग मौहल्लों व अलग-अलग रातों में होते है। बीकानेर में होली के उत्सव पर होने वाली रम्मत, ख्याल में मुख्य रम्मतें है।

    1. अमरसिंह राठौड़ की रम्मत

        स्थान- आचार्यों का चौक, बीकानेर (राज॰)

        उस्ताद- मेघराज आचार्य

        आचार्यों का चौक, बीकानेर (राज॰)

        मुख्य कलाकार

        1. दीनदयाल आचार्य
        2. सूरजकरण बिस्सा
        3. श्याम लाल आचार्य
        4. अंबजी नाई
        5. सागरदत्त पुरोहित
        6. दाऊजी जोशी
        7. शिवकिशन आचार्य
        8. बद्रीजी जोशी

        ये सभी आचार्यों का चौक, बीकानेर राजस्थान के निवासी है।

2. हेड़ाउ मैरी की रम्मतः–

   स्थान– बारहगुवाड़ चौक, बीकानेर (राज॰)

   उस्ताद– शांतिलाल पुरोहित

   मुख्य कलाकारः–

   1. जमनादास सेवग
   2. ब्रृज मोहन
   3. भंवर लाल
   4. शिव शंकर
   5. बाबूलाल
   6. भैरू रतन
   7. विजय कुमार
   8. मूलचन्द

   ये सभी बारहगुवाड़ चौक, बीकानेर (राज॰) के निवासी है।

3. हेड़ाऊ मैहरी की रम्मतः–

   स्थान– मरूनायक चौक, बीकानेर।

   उस्ताद– अजय कुमार देराश्री, मरूनायक चौक, बीकानेर (राज॰) 9929670309

   मुख्य कलाकार–

   1. प्रभु लखाणी
   2. घेवरचन्द
   3. शिव शंकर
   4. मेघसा जोशी
   5. दारसा जोशी
   6. सुशील जोशी

   ये सभी मरूनायक चौक बीकानेर के निवासी है।

5. सुनारों की रम्मतः–

   स्थान–सुनारों की बड़ी गुवाड़, बीकानेर।

   उस्ताद–रामेश्वर लाल सोनी, सुनारों की बड़ी गुवाड, बीकानेर। 0151–2546122

   मुख्य कलाकार–

   1. जगदीश सोनी
   2. किसन सोनी
   3. भगवान दास सोनी
   4. सेवा राम सोनी

6. जमनादास कला की रम्मत (नौटंकी शहजादी)ः–

स्थानः— बिस्सों का चौक, बीकानेर।
उस्तादः— मदनगोपाल, चौथानी ओझाओं का चौक, बीकानेर। 8560084032

7. नौटंकी शहजादी की रम्मतः—
स्थान— बारहगुवाड़ चौक, बीकानेर।
उस्ताद— भंवरलाल जोशी, नथानीयों की सराय, बारहगुवाड़ चौक, बीकानेर।
8. भक्त पुरनमल की रम्मतः—
स्थान— बिस्सों का चौक, बीकानेर।
उस्ताद— कृष्ण कुमार बिस्सा, बिस्सों का चौक, बीकानेर। 8107934070
मुख्य कलाकार—
    1. रामकुमार बिस्सा
    2. गोविन्द गोपाल
    3. मनोज कुमार
    4. विष्णुदत्त

5. **योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत/परम्परा के तत्वों की जीवंतता का विस्तारित भौगोलिक क्षेत्र जिनमें उनका अस्तित्व है।/पहचान है। —** लोकनाटय रम्मत का अस्तित्व मुख्यतः भारत के पश्चिमी राजस्थान के मरूस्थलीय क्षेत्र बीकानेर और जैसलमेर में है इस लोकनाटय परम्परा को अधिकांश विद्वान 150 वर्ष या 250 वर्ष पुरानी मानते है। स्वर्गीय अमरचन्द जी नाहटा, देवीलाल सामर तथा डॉ. महेन्द्र भनावत इसी समयावधि से सहमत है इसके अतिरिक्त पाली और जैसलमेर में भी रम्मतों का प्रदर्शन स्वांग व ख्याल के रूप में होता है।
अतः लोकनाटय रम्मत राजस्थान राज्य के बीकानेर और जैसलमेर अंचल में प्रस्तुत की जाती है।

6. **योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत/परम्परा की पहचान एवं उसकी परिभाषा/उसका विवरण —**
    1. **मौखिक परम्पराएं एवं अभिव्यक्तियाँ —** हिन्दी एवं राजस्थानी
    2. **प्रदर्शनकारी कलाएं —** लोक नाटय रम्मत, ख्याल, स्वांग एवं चौमासा
    3. **सामाजिक रीति — रिवाज, प्रथाएँ, चलन, परम्परा, संस्कार, एवं उत्सव आदि —** राजस्थान के विभिन्न अंचलों में होने वाली रम्मतें मुख्यतः बीकानेर व जैसलमेर की रम्मतें होली पर्व के अवसर पर होती है। इन रम्मतों के स्वरूप लोक नाट्य ख्याल के काफी करीब है सिर्फ इनके गायन पक्ष में विभेद होता है। परन्तु रावलों की रम्मत लोक नाटय रूप है। रावलों की रम्मत में एक कथा की जगह छोटी—छोटी कथाओं में अलग—अलग वेष लाये जाते है जिन्हें स्वांग कहा जाता है।

यह मुलतः एक आनुष्ठानिक लोक नाट्य है जिसे एक ही जाती रावल प्रस्तुत करते है।

बीकानेर की रम्मतों में बीकानेर का लोक जीवन लोक संस्कृति स्पष्ट प्रकट होती है, बीकानेर की रम्मतें मुख्यतः होली पर्व पर की जाती है। कहीं–कहीं शीतलाअष्टमी पर भी आयोजित की जाती है। बीकानेर की रम्मतों में यहां की पारंम्परिक लोक संस्कृति, लोकवाद्य, लोकगीत समाहित है।

यहां लोक नाट्यों के सभी आयोजन साम्प्रदायिक–सदभाव के लिए शांतिपूर्ण वातावरण में सम्पन्न होते है। सभी जाति धर्म सम्प्रदाय के लोग इसमें खुले दिल से भाग लेते है। इन लोक नाट्य रम्मतों में गुरू परम्परा का श्रेष्ठ रूप देखने को मिलता है। मुख्यतः ये रम्मते एक ही परिवार द्वारा परम्परागत रूप में वर्षों से की जाती रही है। यह आयोजन मुख्यतः फाल्गुल शुक्ला अष्टमी से फाल्गुन शुक्ला चतुर्दशी तक ही होते है।

7. **प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत का सारगर्भित संक्षिप्त परिचय –** भारतीय वांग्मय में कला एवं साहित्य को दो रूपों में विभाजित किया गया है एक शास्त्रीय रूप तथा दूसरा लोक रूप।

आधुनिक जीवन की विसंगतियों को झेलता भारतीय समाज लोक एवं शास्त्र के न्यारे–न्यारे रूपों को अपने व्यवहार में स्वीकार कर उन्हे एकाकार भी करता रहता है। वह एक ही समय में ''लोक'' का होकर भी ''शास्त्र'' का बना रहता है अथवा ''शास्त्र'' की परिधि में हो कर भी लोक दृष्टि का प्रतिनिधित्व कर रहा होता है। उत्सव, नाट्य एवं अनुष्ठान इसी मिले–जुले स्वरूप को आज हमारे सामने प्रस्तुत करते है लोक के वैशिष्ट्य को स्वयं शास्त्र भी स्वीकार करता है क्योकि बिना ''लोक'' के शास्त्र की परिकल्पना संभव नहीं है। स्वय आचार्य भरत ने अपने नाट्य शास्त्र में लोक के महत्व को स्पष्ट किया है–

नानाभावोपसम्पन्न नानावस्थान्तरात्मकम्।
लोकवृतानुकरणं नाट्यमेतन्मया कृतम।।

–नाटयशास्त्र 1/112

राजस्थानी लोककला की अपनी समृद्ध परम्परा रही है अनादि काल से ही इसके माध्यम से राजस्थानी समाज जहां स्वयं को अभिव्यक्त करता रहा है वही उससे प्रेरणा भी लेता रहा है। राजस्थानी समाज और संस्कृति में व्याप्त जीवन मूल्यों की प्रतिष्ठा इस कला का ध्येय रहा है। लोकगीत, लोक–कथा एवं लोक–नाट्य की अलग–अलग विधाओं में इस समाज की सांसो की सुगन्ध प्रवाहित होती है।

राजस्थान के जनजीवन का कोई कार्य बिना लोकगीतोंके सम्पन्न नहीं हो सकता तथा इसी समाज के अनुभवों ने लोक–कथाओं को अभिव्यक्ति दी है और इन्ही कथाओं

से निकल कर आता है लोक नाट्य वस्तुतः इसी कडी में सबसे प्रमुख स्वरूप जिस विधा का प्रकट होता है वह है लोकनाट्य अपनी प्रस्तुतिपरकता के कारण वे समाज का मनोरंजन भी करते रहे और उसकी अभिव्यक्ति का साधन भी बने रहे। राजस्थान के लोकनाटयों के कई रूप प्रचलित हैः–

1. **ख्याल**
2. **गवरी**
3. **पड़**
4. **तुर्रा कलंगी**
5. **कठपुतली एवं**
6. **रम्मत इनमें प्रमुख है।**

इनमें से कुछ नाट्य अपने अनुष्ठानिक स्वरूप के कारण तो कुछ विशुद्ध मनोरंजनात्मक पहल के कारण लोक के आकर्षण का केन्द्र बने रहे है। हम कह सकते है कि लोकनाट्य सामाजिक चेतना की रचनात्मक अभिव्यक्ति का प्रदर्शनात्मक रूप है। राजस्थान का लोकनाट्य ''रम्मत'' भी इनमें से एक है। लोकनाट्य का फलक विस्तृत है। उसमें सामाजिक, आर्थिक राजनैतिक एवं दार्शनिक पक्ष अपने सत्य को तलाशने की यात्रा करते है। यह ययावरी प्रवृति लोक नाट्य का जीवन से सदा सम्बन्ध बनाये रखती है।

रम्मतः– ''रम्मत'' राजस्थानी लोकनाटयों का एक विशेषरूप है। राजस्थान में इसके कई भेद प्रचलित है। रम्मत का अर्थ है ''खेल'' राजस्थानी लोकनाट्य ख्याल का सम्बन्ध भी खेल से जोड़ा जाता है इसलिए कई बार रम्मत एवं ख्याल एक ही भाव को प्रकट करने वाले माने जाते है खेल हमारे जीवन में रंजन का कार्य करते है अतः रम्मत स्वतः ही रंजन करने वाली विधा मानी जाती है। राजस्थान में विभिन्न जातियों द्वारा प्रस्तुत किये जाने वाले लोकनाट्य रूप भी रम्मत कहे जाते है।

राजस्थान के अलग–अलग अंचलों में जाति विशेष द्वारा विशेष अवसरों पर ये लोक नाट्य रम्मत प्रस्तुत किये जाते है जिनमें प्रमुख हैः–

रावलों की रम्मतः– ये रम्मत राजस्थान के अलग–अलग अंचलों में एक ही जाति रावल द्वारा प्रस्तुत की जाती है।

बीकानेर की रम्मतेः– बीकानेर अंचल में पुष्करणा जाति द्वारा प्रस्तुत की जाती है।

जैसलमेर की रम्मतेः– पश्चिमी राजस्थान के जैसलमेर अंचल में शाकद्विपीय ब्राहम्णों द्वारा प्रस्तुत की जाती है।

मेघवालों की रम्मतः– अनुसूचित जाति द्वारा प्रस्तुत लोकनाट्य रूप की सम्भवतः प्रथम विधा जो सिरोही अंचल में प्रस्तुत की जाती है।

बीकानेर की रम्मतेः– बीकानेर दूसरी काशी सारस्वत भूमि है। यह शहर रणबंका ही नहीं रसबंका भी रहा है। यहां मेले मगरिये, पर्व–उत्सव, तीज–त्यौहार, रास–फाग, खेल–तमाशा, व्रत–उत्सव, उपासना अनुष्ठान लोक जीवन की सांसे रही है।

सावन–फागुन में बीकानेर की धरती देव रमण की धरती बन जाती है जैसा रसीला यहां का सावन है वैसा ही रसीला यहा का फागुन है। फागुन की मस्ती के आलम में रंगीले–रसीले–सुरीले वातावरण में मंचित होते रहे है लभगभग 250 वर्षों से बीकानेर के लोकनाट्य रम्मत, ख्याल और नौटंकी।

बीकानेर की रम्मतों के कथानक मुख्यतः ऐतिहासिक, सामाजिक, धार्मिक, संयोग–वियोग, प्रकृतिचित्रण, सौन्दर्यमूलक, सुधार–भाव, राजनैतिक व्यग्य, सम–सामयिक घटनायें, सूखती संवेदना, मरती मानवता के दर्द आदि भावनाओं पर आधारित होती है।

बीकानेर की रम्मतों की मौलिक विशेषताएं–

1. इनमें बीकानेर का लोकजीवन, लोक–भावना तथा लोक–संस्कृति स्पष्ट प्रगट होती है।
2. इन लोकनाट्यों की अपनी स्वयं की विशिष्ट संगीत–बंदिशे है।
3. ये स्थानीय भाषा के साथ–साथ स्थानीय प्रभाव एवं रंग लिये होते है।
4. इनकी वेशभूषा–आभूषण तथा श्रृंगार बीकानेरी होता है।
5. इनके पद–संचालन, हाव–भाव व अभिनय अपने है।
6. इनकी प्रस्तुति का अपना ही अंदाज है।
7. इनके रंगमंच जिन्हे यहां ''अखाड़ा'' या ''कड़ा'' कहा जाता है अलग ढंग से बनाये जाते है। कहीं यह अखाड़ा पाटों पर बनाया जाता है, कहीं धरती पर। धरती पर बालू बिछाई जाती है। जिसे पावन मान कर लोग समापन के बाद श्रद्धा से घर ले जाते है अखाड़ा गोलाकार होता है। पाटों का चौकोर। पाटों पर वांछित बिछायत तथा कुर्सियां आदि रखी जाती हैं व कही–कही उस क्षेत्र को रगीन फर्रियों से भी सजाया जाता है।
8. रंगमंचीय साज–सज्जा, पर्दे तथा प्रोपर्टीज का उपयोग नहीं किया जाता।
9. लोकनाट्य प्रारम्भ होने से पूर्व अपने–अपने इष्ट देवी–देवताओं की पूजा आराधना सभी कलाकार करते है।
10. आयोजन का प्रबन्ध स्वयं कलाकार ही करते है।
11. मैकअप कभी–कभी ही किया जाता है।
12. महिलाओं की भूमिका परम्परागत रूप से पुरूष ही करते है मुँह पर घूंघट रहता है।

13. ख्याल–रम्मत का सारा कथ्य गेय एवं संगीतात्मक होता है। संवाद भी गाकर प्रस्तुत किए जाते है। गद्य का प्रयोग होता ही नहीं।
14. दर्शक अखाड़े या कड़े के चारों तरफ खड़े या बैठे रहते है, अतः हर संवाद या पद कलाकार चारो तरफ घूम–घूम कर तीन या चार बार बोलता है। कई बार स्थल विशेष पर जनता भी साथ गाने लगती है।
15. टेरिये तथा वादक कड़े या अखाड़े के बाहर, पास या नीचे बैठकर गाते–बजाते है।
16. इनमें मुख्यतः नगाड़ा–ढोलक–बांसुरी आदि वाद्य ही बजाये जाते है।
17. लोक कलाकार ऐसे चूने जाते है, जिनकी आवाज व सुर इतना ऊँचा तथा बुलन्द हो कि हजारों की भीड़ को बिना माइक सुनाई दे सके। ऐसे भी कलाकार थे, जिनकी आवाज शान्त रात में 7–8 किलोमीटर दूर तक सुनाई देती थी।
18. लोकनाट्यों के अभ्यास का शुभारम्भ वसंत पंचमी से किया जाता है।
19. बीकानेर के लोकनाट्य मुख्यतः होली पर्व पर ही किए जाते है। कहीं–कहीं शीतलाष्टमी को भी आयोजित किए जाते है।
20. ये लोकनाट्य श्रद्धाभाव से अपने इष्टदेव के रास के नाम से–यथा ''भैरूंजी का रास'' ''रामदेवजी का रास'' किए जाते है अथवा मनोरंजन के लिए।
21. इन लोकनाट्यों में अश्लीलता या भद्दापन्न अभिव्यक्त नहीं होते।
22. ये लोकनाट्य व्यावसायिक स्तर पर नहीं किए जाते और न ही इनके कलाकार व्यावसायिक होते है।
23. हर दल या मण्डल के अपने–अपने कलाकार होते है। कभी–कभी कलाकार दूसरी रम्मत में भी भाग या सहयोग देता है।
24. सबके चौमासे–ख्याल–लावणी अलग–अलग होते है– हर वर्ष नये होते है।
25. अधिकांश आयोजन अलग–अलग मोहल्लों एवं अलग–अलग रातों में होते है।
26. लगभग सभी लोकनाट्य देर रात को प्रारम्भ होकर दूसरे दिन 9–10 बजे तक चलते है।
27. सभी आयोजन साम्प्रदायिक–सदभाव के लिए शान्तिपूर्वक वातावरण में सम्पन्न होते है। यह एक श्रेष्ठ रंग–परम्परा है कि आज तक कभी इन आयोजनों में कोई अशान्ति या व्यवधान नहीं आया।
28. सभी जाति–धर्म सम्प्रदाय के लोग इसमें खुले दिल से भाग लेते है–देखते है। उन्हीं के आर्थिक व अन्य सहयोग से इनकी प्रस्तुतियाँ होती है।
29. कई बार मुसलान भाइयों में ख्याल आदि लिखाए गए है। सालु भिश्ती की लावणियाँ तो खूब गाई गई है। सिक्खों द्वारा लिखी गई रचनाएं भी प्रस्तुत की गई हैं।
30. ''स्वांग मैरी'' की रम्मत में कथानक नहीं होता। बस चौमासा, लावणी, ख्याल गाये जाते है।

31. ''अमर सिंह राठौड़'' शहजादी नौटंकी आदि कथानकपूर्ण ख्याल रम्मत हाते है। यहां सभी लोक–नाट्यों को अधिकांश ''रम्मत'' ही कहते है।
32. बीकानेरी रम्मतों में ध्रुपद, कली, भेटी, उडावणी, टेर, झेला आदि गायन प्रस्तुति की अपनी स्वयं की व्यवस्था है।
33. लोक–नाट्यों मे गुरू–परम्परा का श्रेष्ठ रूप देखने को मिलता है। हर खिलाड़ी या कलाकार अखाड़े में प्रवेश करते ही गुरू को स्मरण–नमस्कार करता है तथा अखाडे की मिट्टी को मस्तक पर लगाता है।
34. इन लोक–नाट्यों में वाचिक, आंगिक, आहार्य अभिनय ही किया जाता है। सात्विक अभिनय का अधिकांश में अभाव ही रहता है।
35. ये आयोजन सदा खुले चौक में होते है तथा निशुल्क होते है।
36. श्रेष्ठ कलाकार पर लोग ''घोळ'' (रूपये सिर पर फेर कर न्यौछावर करना) करते है। सगे–सबंधी भी घोळ करते है।
37. इन आयोजनों में सदा जन–सहयोग मिलता रहा है। जनता भरपूर मनोरंजन प्राप्त करती है।
38. आयोजन से पूर्व भव्य ''बरनोलियां'' या ''छीकिया'' निकाली जाती है – जिनमें दूर–दूर तक की परिक्रमा, पैदल या घोड़ों पर या वाहनों पर की जाती हैं।
39. इनमें कंठ संगीत, वाद्य संगीत नृत्य एवं हावभाव के माध्यम से संवाद प्रस्तुत किए जाते है।
40. कलाकार की गायकी में टेरिये (गायक समूह) पूर्ण सहयोग देते है।
41. इन प्रस्तुतियों में अधिकांश मे सारंग, सोरठ, देस, माड़, खमाच आदि रागों की प्रधानता रहती है।
42. तालों में ज्यादातर तिताला, झुमरा, दीपचन्दी, दादरा, कहरवा, आदि का उपयोग होता है।
43. कई रम्मते एक ही परिवार द्वारा परम्परागत रूप में वर्षों से की जाती रही है।
44. प्रस्तुति से पूर्व सामूहिक गणेश वन्दना, रामदेव बाबा वन्दना, लटियाल आराधना शिव व भैरूं आदि में से कुछ की जाती है।
45. ये आयोजन फाल्गुन शुक्ला अष्टमी से फाल्गुन शुक्ला चतुर्दशी तक ही होते है। इनके बाद नहीं।
46. इनकी प्रस्तुति की कलात्मकता एवं आकर्षण का ऐसा प्रभाव था कि लोग दूर–दूर के गाँवों से शाम को ही आ–आकर अपना स्थान सुरक्षित कर लेते थे। इसके साथ ही प्रवासी बीकानेरी कलकता–बम्बई–मद्रास आदि से इनका आनन्द लेने अपना काम–काज छोड़, पैसा और समय लगाकर प्रतिवर्ष आते थे।
47. इनमें कलाकरों का मनोयोग एवं जनता का सहयोग प्रशंसनीय रहता था।

48. इस लोकनाट्य कला ने अपने 150–200 वर्षों के जीवन में कभी राज्याश्रय की कामना नही की। लोक की यह कला सदैव लोकश्रय पर ही जीवित रहीं। वस्तुतः लोकनाट्य कला का स्वरूप लोक की, लोक द्वारा और लोक के लिये होने के कारण पूर्णतः लोकतांत्रिक ही रहा है।
49. रम्मत करने से पूर्व राज्य से औपचारिक स्वीकृति लेनी पडती थी। पर इसकी बहुत कड़ाई से पालना नहीं होती थी।
50. होलिका लगने के बाद कई रम्मतों वाले अपने अखाड़े के आस–पास ''खम्भा स्थापना'' करते है। खम्भे पर श्रीगणेश तथा अपने–अपने इष्ट देवी–देवताओं की मूर्तियां होती है। यह खम्भा तीन–चार फीट जमीन खोद कर गाड़ा जाता है। यह देवी–देवताओं की अराधना भी है तथा रम्मत की सुरक्षा एवं कुशलात की कामना का प्रतीक है।

बीकानेर में फागुन माह में होने वाले लोक नाट्य रम्मत में मुख्य रम्मते हैः–

1. **अमर सिंह राठौड़ की रम्मत**
2. **हडाऊ–मैरी की रम्मत**
3. **शाहजादी नौटंकी तथा सांगमैरी की रम्मत**
4. **फक्कड़ दाता री रम्मत (बारह गुवाड़ चौक)**

बीकानेर की रम्मतों का दो प्रकार से वर्गीकरण किया जाता सकता हैः–

1. **कथा प्रधान रम्मते या ख्याल**
2. **बिना कथानक लावणी–चौमासा, ख्याल पर अधारित रम्मते।**

कथा प्रधान प्रचलित रम्मतेः–

अमर सिंह राठौड़ की रम्मते, हड़ाऊ–मैरी तथा शाहजादी नौटंकी

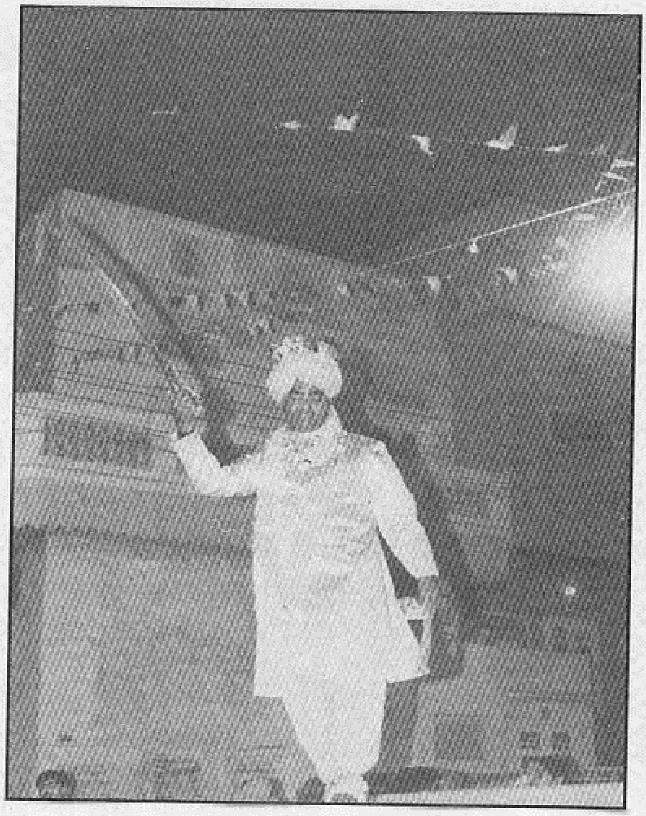

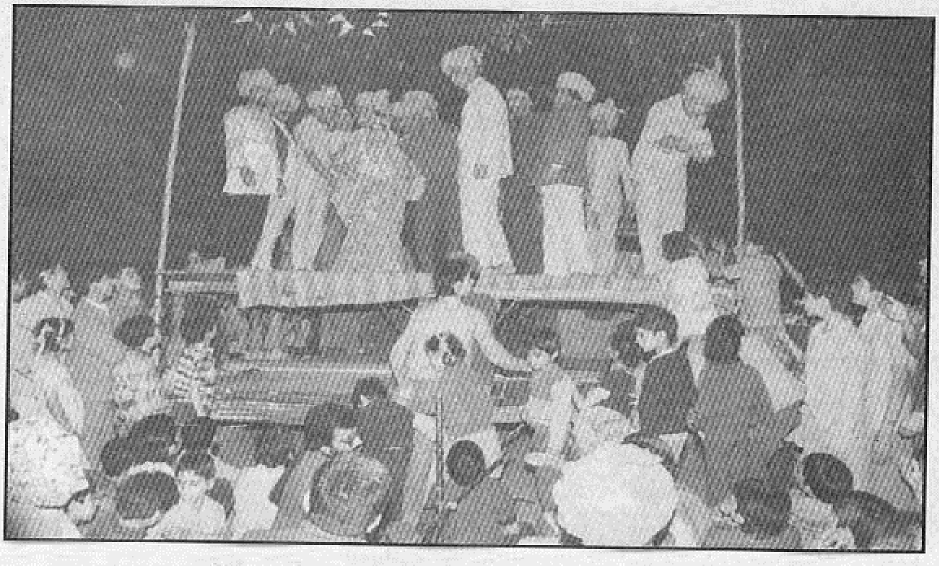

बीकानेर की रम्मत के दो दृश्य

बिना कथानक की रम्मतेः–

सांगमैरी की रम्मत, फक्कड़ दाता की रम्मत, फागुजी व्यास की रम्मत, सुआ महाराज की रम्मत।

बीकानेर की रम्मतों का साहित्यिक स्वरूपः–

बीकानेर की रम्मतों में लोकनाट्यों की सभी विशेषताओं के साथ–साथ अच्छा साहित्यिक स्पर्श भी मिलता है। अमर सिंह राठौड़ की रम्मत राजस्थानी भाषा में रचित पद्यात्मक कृतिप्रबन्ध काव्य है। अमर सिंह राठौडत्र रम्मत का सृजन संवत् 1911 में बीकानेर के मोतीलाल सवैन ने इन्दौर में किया था–

संवत् उन्नीस सौ ग्यारहवे, अमरसिंह को ख्याल।

सुभग नग्र इन्दौर में ज्योडयो मोतीलाल।।

मोती सुद है गेंद को, सब गुणियन का दास

सैन बस ऊपनो बसे बीकाणे बास।।

राजस्थानी के वरिष्ठ कवि श्री शिवराज छंगाणी इसे वीर रस काव्य ही नहीं अपितु रसों की त्रिवेणी संगम मानते है।

बीकानेर की रम्मतों में गद्य और पद्य दोनों का संगम देखने को मिलता है।

बीकानेर की रम्मतों की साहित्य सुषमाः–

अमरसिंह राठौड़ की रम्मत में अमरसिंह नाराज हुए शाहजहां के उस दरबार में अकेले जा रहे है **''जहां सब ही राजा करे नौकरी हाजर खडे नवाब''** यहा अमरसिंह की शक्ति एवं वीरता का वर्णन किया है।

''कांई करे सौ सिंह कोस रे भेडां बीस हजार,

हाथ्यां पर हाथल फिरे स कुण लेवे सिंह ने मार''

सौन्दर्य और यौवन का ज्वार शीघ्र ही ढल जाता है। इस शाश्वत सत्य को नवयौवन हाडी रानी किस चतुराई से अभिव्यक्त करती है।

है जोबन री बहार क दूध उफाणज्यो।

जात न लागे बार यही कन्थ जाण ज्यों।।

उद्दाम यौवन की उपमाः–

''आभै इन्दर गड़हडे रण में गरजे सूर

गौरी गरजे सेज में जोबन में भरपूर''

बीकानेर की हडाऊ मैरी की रम्मत संयोग और वियोग, हास्य और करूण रस पर आधारित एक स्तरीय साहित्यक कृति है। डांण गायन में हेडाऊ की प्रशंसाा का राजस्थानी अंदाज निराला है।

''हो रेशमीयों रो रेजो रे, फूलों रो रे भारो डांण मांगे हो राज।

हो लाखों रो लडाऊ रे हेड़ाऊ ठाकुर डांण मांगे हो राज।

नायिका के लिए प्रीतम इतना प्रिय है कि उसे दूरी नहीं रखा जा सकता–

नैणो मकें घुलाय राखूं दो भंवरा जीहो।

नैणों में लुभाय राखू हो भंवरा जीहो।

वियोग की अगन में जलती विरहिण नायिका के उपालम्भ

रिमझिम पायल घूघरा, मोती मांग संवार।

पिव पे आई पदमणी, सज सोलह सिंगार।।

प्यारे पतिया नहीं लिखी, बहुत गये दिन बीत।

अब तो ऐसी जान ली, मुख देख्यों री प्रीत।।

फागुजी व्यास री रम्मत में लावणी, चौमासा और ख्याल गाये जाते है इस रम्मत में सम–सामयिक घटनाओं पर व्यंग्य किये जाते है।

सत्ता एवं शासन के बिगड़ते एवं जनविरोधी स्वरूप का आक्रोश भी रम्मतो में प्रगट होता है

ध्रुपद – **शासन में दुशासन बैठे हो रहे मतवाला**

श्री लक्ष्मीवीर महाराज देश का तू ही रखवाला

कली – **ऊंचे–ऊंचे मंच बनाकर भाषण खूब सुनाते**

बेकारी–भ्रष्टाचारी पर कभी ध्यान नहीं लाते।

कोरे थोथे नारों पर ही सदा ध्यान है डाला

श्री लक्ष्मीवीर महाराज देश का तू ही रखवाला।

बीकानेर की रम्मतों की भाषा, संवाद, गीत–संगीत और नृत्य–

बीकानेर की रम्मतों में राजस्थानी भाषा का ऐसा स्वरूप है जिसे समझने में कठिनाई नही आती। भाषा पात्रानुकूल एव भावानानुकूल है भाषा मे राजस्थानी आंचलिक के सिवाय ब्रज, हिन्दी, उर्दू आदि के शब्दों के साथ–साथ संस्कृत के तत्सम शब्दों का प्रयोग भी हुआ है। राजस्थानी भाषा की लोकोक्तियों मुहावरे एवं सूक्तियों के कारण भाषा प्रभावशाली है। पद्यात्मक एवं गद्यात्मक दोनों प्रकार के संवाद होने के कारण गत्यात्मक एवं लयात्मकता की कोमलता है।

संवाद गेय–संगीतात्मक एवं लायात्मक होते हुए भी कसे हुए एवं प्रभावशाली है। लोकनाट्य होने के कारण संगीत में शास्त्रीयता की जटिलता कम है। लोक धून व लोक राग पर आधारित नगाड़ा, बांसुरी व अन्य लोक वाद्य इसमें मुख्यतः इस्तेमाल होते है।

रम्मतों में शास्त्रीय राग–रागनियों का भी प्रयोग होता है इनमें मुख्यतः मांड, सोरठ, देश, काफी, वृन्दावनी, सारंग, पीलू, पहाड़ी कल्याण, केदार, मालकोस भैरवी और नारायणी आदि का उपयोग होता है।

पर ये रागे शास्त्रीय संगीत के रागों से पूर्ण मेल नहीं रखती। लोक नाट्यों की धुनों में छंद, सवैया, दोहा, लावणी रेखता, तबील, चन्द्रायन आदि का स्वरूप दिखाई देता है।

नृत्य की दृष्टि से रम्मतों मे साधारण पद संचालन होता है हाथों से हाव–भाव प्रगटाये जाते है भ्रमरी का उपयोग होता है पद संचालन में पांव की ऐड़ी से पंजे से पूरे पांव से ठोकर मारकर आघात किया जाता है।

8. **योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत/परम्परा के तत्वों के अधिकारी व्यक्ति और अभ्यासी तथा इनकी भूमिका और दायित्व –** फागुन में बीकानेर की धरती देवरमण की धरती बन जाती है जैसा रसीला यहां का सावन है वैसा ही रसीला यहां का फागुन है। यहां फागुन में लगभग 250 वर्षोंसे ये लोक नाट्य रम्मत, ख्याल और नौटंकी मंचित होते रहे है। बीकानेर के लोक नाट्य व्यावसायिक स्तर पर नहीं किये जाते और न ही इनके कलाकार व्यावसायिक होते है हर दल या मण्डल (अखाड़ा) के अपने–अपने कलाकार होते है जो अपने उस्ताद या गुरू के निर्देशन में अभ्यास करते है और मंचित करते है।

   अधिकांश आयोजन अलग–अलग चौक, मौहल्लों और अलग–अलग रातों में होते है इन लोक नाट्यों के अभ्यास का शुभआंरम्भ बसंत पंचमी से किया जाता है। सब के चौमासे, ख्याल, लावली अलग–अलग होते है और हर वर्ष नये होते है।

   ये लोक नाट्य रम्मते एक ही परिवार व जाति द्वारा परम्परागत रूप से की जा रही है। बीकानेर की पुष्करणा व उनसे जुड़ी उप जातियों द्वारा प्रारम्भ की गई ये रम्मते अलग–अलग मौहल्लों व मण्डलों में दूसरी जातियों द्वारा भी की जा रही है।

   इनके आयोजन और मंचन करने वाली व्यक्ति व अभ्यासी स्वयं कलाकार है। जो अपने अपने गुरू के निर्देशन में स्वयं के प्रयास व जन सहयोग से इनकी प्रस्तुती करते है। किसी संस्था या राज्य व्यय केन्द्र के उपक्रम द्वारा इन्हें आर्थिक सहयोग प्राप्त नहीं होता। बीकानेर की रम्मतों के प्रमुख मण्डल (अखाड़े) और चौक निम्न है–

   1. अमरसिंह राठौड़ की रम्मत
      अभ्यासी व व्यक्ति – आचार्य (बीकानेर के पुष्करणा ब्राहम्ण)
      स्थान– आचार्यों का चौक, बीकानेर (राज॰)

2. हेड़ाउ मैरी की रम्मतः–
अभ्यासी व व्यक्ति – बीकानेर के पुष्करणा ब्राहम्ण
स्थान– बारहगुवाड़ चौक, बीकानेर (राज॰)
3. स्वांग मैहरी की रम्मतः–
अभ्यासी व व्यक्ति – बीकानेर के पुष्करणा ब्राहम्ण
स्थान– मरूनायक चौक, बीकानेर।
4. सुनारों की रम्मतः–
अभ्यासी व व्यक्ति – बीकानेर की सुनार जाति
स्थान–सुनारों की बड़ी गुवाड़, बीकानेर।
5. जमनादास कला की रम्मत (नौटंकी शहजादी)ः–
अभ्यासी व व्यक्ति – बिस्सा (बीकानेर के पुष्करणा ब्राहम्ण)
स्थानः– बिस्सों का चौक, बीकानेर।
6. नौटंकी शहजादी की रम्मतः–
अभ्यासी व व्यक्ति – बीकानेर के पुष्करणा ब्राहम्ण
स्थान– बारहगुवाड़ चौक, बीकानेर।
7. भक्त पुरनमल की रम्मतः–
अभ्यासी व व्यक्ति – बीकानेर के पुष्करणा ब्राहम्ण
स्थान– बिस्सों का चौक, बीकानेर।

उपरोक्त सभी कलाकर आजिविका के लिए अपना–अपना अलग काम करते है इन मौहल्लों व चौक में फागुन माह में पांच वर्ष के बच्चे से लेकर सौ साल का वृद्ध तक इन रम्मतों के अभ्यास, आयोजन व मंचन में अपना सहयोग देता है और पूर्णतया जी–जान से इसके सफल आयोजन के लिए मेहनत करता है। इस प्रकार ये रम्मते गत 250 वर्षों से प्रत्येक परिवार में दादा से पोते तक विरासत में चली आ रही है। इनके लिए ये आयोजन महज एक आयोजन नहीं अपितु विरासत में मिली एक परम्परा है। जिनकों ये लोग अपनी सांस्कृतिक धरोहर मानते है।

9. **ज्ञान और हुनर/कुशलता का वर्तमान में संचारित तत्वों के साथ अंतर सम्बन्ध –** राजस्थान, विशेषकर बीकानेर के लोक नाट्य अपनी प्रस्तुतिपरकता के कारण समाज का मनोरंजन भी करते रहे है और उसकी अभिव्यक्ति का साधन भी बने रहे है। ये लोक नाटय सामाजिक चेतना की रचना अभिव्यक्ति का प्रर्दशनात्मक रूप है। साहित्य की अन्य विधाओं की तुलना में इसके अभिनेता मंच, दर्शक, गीत, संगीत, नृत्य एवं वेशभूषा के माध्यम से अभिव्यक्ति की सामाजिकता प्रतिष्ठित होती है। इन लोक नाट्य का फलक विस्तृत है। इसमें सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक एवं दार्शनिक पक्ष अपने सत्य को तलाशने की यात्रा करते है।

बीकानेर की रम्मतों में वर्तमान सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनैतिक कुरितियों और भ्रान्तियों पर स्वांग, चौमासा व लावली द्वारा कटाक्ष किया जाता है। नैतिक व सांस्कृतिक मूल्य जो कि आज की भागम–भाग वाली जिन्दगी में अपना अस्तित्व खोते जा रहे। उनके पोषण में इन लोक नाट्य रम्मतों का अपना योगदान है हमारें भारतीय जीवन मूल्यों और संस्कारों का बनाये रखने में ये अहम भूमिका निभा रहे है। पीढ़ी दर पीढ़ी चले आ रहे संस्कार इन्ही लोक नाट्यों की देन है।

10. **आज वर्तमान में सम्बन्धित समुदाय के लिए इन तत्वों का सामाजिक व सांस्कृतिक आयोजन के मायने** – ये लोक नाट्य रम्मत अपनी समृद्ध परम्परा के रहते सैकडों वर्षों से राजस्थानी जन जीवन को अपने गौरवशाली इतिहास से जोड़े हुए है।

    इन लोकनाट्य रम्मत को देखकर हम यह जान सकते है कि यहां का लोक समाज किन सामाजिक मूल्यों को पोषित करता रहा है, उनके साथ जीता रहा है। परन्तु आधुनिक कहलाने की होड़ में हम अपने मूल्यों का क्षरण करने लगे है। ये लोकनाट्य इन्हीं मूल्यों की रक्षा करने का प्रयास करते है।

    राजस्थान की अधिकतर रम्मतें काव्य प्रधान लोक नाट्य है ये लोक नाट्य पद्यात्मक भी है। इन लोकनाट्यों ने राजस्थान के समृद्ध साहित्य की झलक दृष्टिगोचर होती है। लोक साहित्य की परम्परा को बनाये रखने व इसके संवर्धन के लिए इनके साहित्य के संयोजन की आवश्यकता है।

    रम्मतों की भाव भूमि यहां की सांस्कृतिक चेतना की अभिव्यक्ति रही है। इनके नायकों में वीरता, समाज के हित रक्षक, वचन बद्धता, स्वामी धर्म, देश हित, सत्य, स्त्री रक्षक आदि आदर्श मूल्यों की झलक देखने को मिलती है, जो आज की युवा पीढ़ी के लिए प्रेरणादायक है। परन्तु सामाजिक स्तर पर आज ऐसे आदर्शों की अवहेलना हो रही है। ऐसे समय में इन चरित्रों से सजे लोक नाट्य समाज के लिए अति आवश्यक है इन लोक नाट्यों के आयोजन से यहां की सामाजिक चेतना की रचनात्मक अभिव्यक्ति बनी रहती है।

11. नहीं

12. **प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत/परम्परा की योजना क्या उससे सम्बंधित संवाद के लिए पारदर्शिता, सजगता और प्रोत्साहन को सुनिश्चित करती है** – हां

13. **योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत/परम्परा के तत्वों के संरक्षण के लिए उठाए जाने वाल उपायों/कदमों/प्रयासों के बारें में जानकारी जो उसको संरक्षित या संवर्धित कर सकते है। उल्लेखित उपाय/उपायों को पहचान कर चिन्हित करें जिसे वर्तमान में सम्बंधित समुदायों, समूहों, और व्यक्तियों द्वारा अपनाया जाता है–**

    1. **औपचारिक एवं अनोपचारिक तरीके से प्रशिक्षण (संचरण)** – वर्तमान में रम्मत करने वाले मण्डल (अखाड़े) अपने स्तर पर इनकी प्रस्तुति से पूर्व अभ्यास करते रहे है। परम्परागत तरीके से गुरू द्वारा विरासत में दिये गये प्रशिक्षणों जो कि अभ्यास में ही

नीहित है, के द्वारा प्रशिक्षण होता है। अभीतक इन रम्मतों के लिए संस्थागत या सरकारी व्यावसायिक प्रशिक्षण अनोपचारिक या औपचारिक तरीके से किये जाने के लिए कोई प्रशिक्षण केन्द्र नहीं है।

उपाय– इन रम्मतों के कलाकारों के लिए प्रशिक्षत या अनुभवी उस्तादों (गुरूओं) या लोक नाट्य विशेषज्ञों द्वारा सेमिनार और कार्याशालाओं द्वारा प्रशिक्षण की व्यवस्था होनी चाहिए जिससे ये लोक नाट्य रम्मत व्यावसायिक स्वरूप में आ सके।

2. **पहचान, दस्तावेजीकरण एवं शोध –** अभी तक कुछ लोक कला समिक्षक व मर्मज्ञों द्वारा इन पर अध्ययन कर इनके बारें में पुस्तक रूप में या समाचार पत्रों और पत्रिका में प्रकाशन किया गया है परन्तु वास्तव में देशव्यापी पहचान बनाने हेतु कोई विस्तृत कार्य नहीं किया गया है।

   उपाय– लोक नाटय रम्मत के गुरूओं और कलाकारों को चिन्हित कर उनका दस्तावेजीकरण आवश्यक है।

3. **रक्षण एवं संरक्षण –** रक्षण एवं संरक्षण के लिए इन लोकनाट्य रम्मतों के प्रस्तुतियों को बीकानेर से बाहर राज्य एवं देशव्यापी स्तर पर होना आवश्यक है इनके गुरूओं व कलाकारों को इन आयोजनों हेतु प्रशिक्षण एवं आर्थिक सहायता की आवश्यकता है साथ ही अधिक से अधिक प्रचार–प्रसार व अनुदान द्वारा इनका प्रचार–प्रसार किया जावें। इन लोक नाट्य रम्मतों के साहित्य के प्रकाशन की भी आवश्यकता है।

4. **संवर्धन एवं बढ़ावा –** संवर्धन व बढ़ावा हेतु प्रशिक्षित एवं अनुभवी गुरूओं के द्वारा कार्यशालाओं का आयोजन किया जावें। समय–समय पर सैमिनार व गोष्ठीयों का आयोजन किया जावें।

   इन लोक नाट्य रम्मतों के साहित्य का संकलन व प्रकाशन किया जावें तथा इनके अभ्यास एवं प्रस्तुतियों का इलेक्ट्रोनिक मीडिया द्वारा वृत्त चित्र का निर्माण व उसका प्रदर्शन किया जायें।

14. **स्थानीय, राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर पर योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत परम्परा के तत्वों के संरक्षण के लिए अधिकारियों ने क्या उपाय किये ? उनका विवरण –** समय–समय पर राष्ट्रीय नाट्य अकादमी या सांस्कृतिक मंत्रालय, भारत सरकार के निकायों द्वारा व्यक्ति विशेष जो कि लोक कला में रूचि रखते है को स्कॉलरशीप या अनुदान इन लोक नाट्य रम्मतों के शोध के लिए शोध वृत्ति के रूप में प्राप्त हो चुके है। परन्तु भारत सरकार व राज्य सरकार के उपक्रमों द्वारा अभी तक इन लोक नाट्य रम्मतों के संरक्षण व संवर्धन के लिए व्यावसायिक स्तर पर कोई योजना व सत्त कार्यक्रम नहीं चलाया गया है। इस कारण से यह लोक नाट्य रम्मत अवसर विशेष और क्षेत्र में सिमित होकर रह गया है।

15. योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत/परम्परा के तत्वों के व्यवहार, जीवन्तता और भविष्य को क्या खतरे है ? वर्तमान परिदृश्य के उपलब्ध साक्ष्यों और सम्बंधित कारणों का ब्यौरा दे –

बीकानेर की रम्मतों की वर्तमान स्थिति

एक समय था जब लोकनाट्य ही लोकनुरंजन के एकमात्र साधन थे। जब भी, जहाँ भी लोकनाट्य होने की सूचना मिलती, जनता उमड़ पड़ती थी। हजारों नर–नारी, आबाल–वृद्ध, रात–रात भर इन आयोजनो का आनन्द लेते थे दूरियों और समय की परवाह न करते हुए लोक इन आयोजनों में पहुंच जाते थे। जीवन की गति धीमी एवं सहज थी, लोक सहृदय एव रसिक थे। गाँवों में ही नहीं, कस्बों व शहरों मे भी लोकनाट्यों के प्रति गहरा आकर्षण था। लोकनाट्य प्रारम्भ होने से घंटों पूर्व लोग स्थल पर जा पहुँचते थे। एक अनोखा क्रेज।

पर धीरे–धीरे दृश्यपटल बदला। शिक्षा आई, व्यस्तता आई। भौतिक सभ्यता आई, रुचियाँ एवं अनिवार्यताएं बदली। जीवन का दृष्टिकोण बदला। शिक्षित वर्ग का मनोविज्ञान बदला। बड़प्पन की भावना पनपी। पढ़ा–लिखा एवं पैसे वाला वर्ग लोक से हटता गया, एक आभिजात्य भावना लोक मे खाई पैदा करने लगी। ''जी'' की जगह वह ''साहब'' बन गया। साहब के लिए जन या लोक–अनपढ़, गंवार, असभ्य मात्र रह गया। अतः वह लोक से जुड़ी हर बात से अपने को दूर रखने लगा। यही परिणाम लोकनाट्यों–रम्मतों–ख्यालो, नौटंकियों का हुआ।

फिर सिनेमा आया, दूरदर्शन आया, वी.सी.आर. आया, इन्टरनेट आया और ये तथा कथित अभिजात्य एवं शिक्षित लोगो को ही नहीं, आम आदमी को भी लोक कलाओं से काटते गये। लोकनाट्य भी इस संक्रमण से बच न सके। आज लोकनाट्यों की लोकप्रियता धीरे–धीरे कम होती चली जा रही है।

लोकनाट्य रम्मतें भी ऐसे ही दौर से गुजर रही है। आज रम्मतों के प्रति न तो जनता की रुचि रही है और ना ही कलाकारों–आयोजकों की। बस मात्र औपचारिकता का निर्वहन हो रहा है। इसके निम्नलिखित कारण संभव हैं–

1. जीवन व्यस्तताएं, आर्थिक–उपार्जन की भागम–भाग, बढ़ते फासले।
2. मीडिया का प्रभाव। ओडियों–विडीयो सुविधाओं तथा सैल्यूलाइउ मीडिया के कारण घर बैठे मनोरंजन उपलब्ध कराना। बढ़ते चैनल्स के कारण चौबीसो घन्टे कार्यक्रम उपलब्ध होना। सस्ते में सुविधा–सहित मनचाहा मनोरंजन मिलना। विविध प्रकार का मनोरंजन मिलता। सस्ते स्तर का मनोरंजन मिला। भव्य सैट, पल–पल बदलते आकर्षक दृश्य, सुदर्शन कलाकार, मधुर संगीत, आधुनिक संगीत एवं नृत्य सहज मिलना। तरह–तरह के कथानक एवं घटनाएं देखने को मिलना, साउन्ड एवं लाइट

इफैक्टस के अनोखे–आकर्षक प्रभाव मिलना। अविश्वसनीय घटनाएं, रोमांचक दृश्य देखना, प्रचार माध्यमों द्वारा इन मीडियाज के प्रति ग्लैमर पैदा करना आदि ऐसी अनेक बातें एवं साधन है– जो लोकनाट्यों की तरफ नजर डालना भी नहीं चाहती। बालकों के लिए बनने वाली कार्टून फिल्में–कामिक्स, टी.वी. गेम्स आदि बालकों की रूचियाँ बदल रहे है। अतः रम्मतें अपना आकर्षण खोती जा रही है।

3. लोकनाट्यों के आनुष्ठानिक स्वरूप ने भी लोकप्रियता में कमी पैदा की है। लोकनाट्य यदि व्यावसायिक रूप से नियमित मंचित होते रहते, तो जन–जुड़ाव रहता पर वर्ष में एक बार विशेष अवसरों पर ही प्रस्तुति होने के कारण दर्शक अभ्यस्त नहीं हो पाता। बीकानेर की रम्मतें–ख्याल तथा नौटंकी बस होली पर या कोई–कोई शीतलाष्टमी या शरद पूर्णिमा को ही होती हैं– अतः दर्शकों में देखने की आदत नहीं पड़ती।
4. लोकमंच व्यावसायिक न होने कारण आर्थिक–उपार्जन का साधन नहीं बन पाता। अतः कलाकार आर्थिक–उपार्जन को छोड़कर, इसमें समय लगाना नहीं चाहता। जो परम्परागत रूप से इनमें भाग लेते थे–उनका शौक तथा निष्ठा भी आर्थिक चक्की में पिस गए। नये कलाकार इनमें वैसे ही जुड़ना नहीं चाहते।
5. सिनेमा के संगीत, चटपटे रूपानियत भरे गीत, गजलों, पाप संगीत को छोड़कर कोई युवा लोक–रम्मतों की रागों को, टेरों को क्यों अलापेगा ?
6. समयाभाव एवं घटती रूचियों के कारण रम्मतों का पूर्ण अभ्यास नहीं होता। अतः न तो कलाकारों के पास वह बुलन्द आवाज हैं, जो हजारों लोगों तक पहुँचकर प्रभावित कर सके तथा न वह सुरीलापन तथा बुलन्दगी है, जो जनता को जोड़–जुटा सके। रम्मतों के पास केवल नगारा, ढ़ोलकी तथा कभी–कभी बांसुरी तथा छमछमों का ही प्रयोग होता हैं– जो मीडिया के अनेक एवं विविध प्रकार के साजों एवं संगीत प्रभावों के सामने अप्रभावशाली रहते है।
7. स्टेज तो स्क्रीन के लिए जम्पिग बोर्ड बन रहा है, पर लोकनाट्य यह चमचमाता द्वारा नहीं खोल सकता। अतः कलाकार इधर आना पसंद ही नहीं करता।
8. पुराने कलाकार वृद्ध हो गये या चुक गए, नये कलाकार रूचि नहीं लेते हैं, जो कर रहें है, वे बस रस्म निभा रहे हैं–ऐसे में लोकनाट्य एवं लोक–रंगमंच धीरे–धीरे लोकप्रियता खो रहा है।
9. संगीत एवं नृत्य की स्कूलों एवं प्रशिक्षण संस्थानों में विधिवत् प्रशिक्षण लेने वाले–लोकनाट्यों में भाग लेना नहीं चाहते। लोकनाट्य गायन उनके लिए न तो सरल है और न ही उनके आभिजात्य अहं की तुष्टि कर पाता है। अतः लोकनाट्य मूलतः सांगीतिक विधा है–वह गायकों के बिना कैसे आगे बढ़े।
10. लोकनाट्य के लिए सरकारी या गैर–सरकारी किसी भी क्षेत्र में कोई प्रशिक्षण की व्यवस्था नहीं।

11. लोकनाट्य का, पब्लिसिटी मीडिया की उपेक्षा का शिकार होना। न पैसा, न पब्लिसिटी, न भविष्य–तो कौन करे समर्पण इस माध्यम के लिए।
12. लोकनाट्य आयोजकों की कमी होना।
13. लोकनाट्य खुले रंगमंच की प्रस्तुति हैं, जिसे एक खुला–चौड़ा स्थान चाहिए जबकि स्थान सिकुड़ते जा रहे हैं। कहाँ हो आयोजन–कहाँ बैठे दर्शक।

16. संरक्षण के क्या उपाय अपनाने के सुझाव है –

बीकानेर की सांस्कृतिक विरासत ''लोकनाट्य रम्मत'' के संरक्षण व संवर्द्धन की आवश्यकता और उपाय

लोक नाट्य की अपनी समृद्ध परम्परा के रहते सैकड़ो वर्षो से राजस्थानी जन जीवन को आकर्षित करने वाले ये लोक नाट्य रूप आज बिख्राव की स्थिति में है इसमें राजस्थान के लोक नाट्य ''रम्मत'' की स्थिति भी कुछ ऐसी है।

ये लोक नाट्य रम्मत प्राचीन काल से ही राजस्थानी समाज के मनोरंजन का माध्यम रही है। किन्तु आधुनिक काल में जनसंचार के बढ़ते माध्यमों से इस विद्या के नष्ट होने का खतरा पैदा हो गया है आधुनिकता की अंधी दौड़ में हम अपनी परम्परागत लोकानुरंजक कलाओं को नकारा कहकर अस्वीकार करने लगे है।

इन लोक नाट्य रम्मत को देखकर हम यह जान सकते है कि यहां का लोक समाज किन सामाजिक मूल्यों को पोषित करता रहा है, उनके साथ जीता रहा है। परन्तु आधुनिक कहलाने की होड़ में हम अपने मूल्यों का क्षरण करने लगे है। ये लोक नाट्य इन्ही मूल्यों की रक्षा करने का प्रयास करते है।

राजस्थान की अधिकतर रम्मते काव्य प्रधान लोक नाट्य है। ये लोक नाट्य पद्यात्मक भी है। इन लोक नाट्यों में राजस्थान के समृद्ध साहित्य की झलक दृष्टिगोचर होती है। लोक साहित्य की परम्परा को बनाये रखने व इसके संवर्धन के लिए रम्मतों के साहित्य के सयोजन एवं प्रकाशन की आवश्यकता है।

रम्मतों की भवभूमि यहा की सांस्कृतिक चेतना की अभिव्यक्ति रही है इनके नायकों में वीरता, समाज के हित रक्षक, वचनबद्धता स्वामी धर्म, देशहित, सत्य, स्त्री रक्षक आदि आदर्श मूल्यों की झलक देखने को मिलती है जो आज की युवा पिढ़ी के लिए प्रेरणा दायक है। परन्तु सामाजिक स्तर पर आज ऐसे आदर्शो की अवहेलना हो रही है ऐसे समय में इन चरित्रों से सजे लोक नाट्य समाज के लिए अतिआवश्यक है।

इन लोक नाट्यों में सगीत की प्रमुख भूमिका होती हैंइनमें कलाकारों की भावना एक दूसरे की रचनात्मकता में बढावा देने की होती है। गुरू–शिष्य परम्परा यहा कायम रहती है। इनसे परम्परागत लोक वाद्य, लोकधुन व लोकनृत्य की पहचान व परम्परा बनी रहती है।

अतः प्राचीनकाल से चली आ रही है। राजस्थन की सास्कृतिक विरासत ''लोक नाट्यरम्मत'' के सामने आज संकट है। सांस्कृतिक और सामाजिक धरोहर ये लोक नाट्य रम्मत का अस्तित्व जनसंचार के बढ़ते माध्यमों से खतरे में है आज आधुनिकता की अन्धी दौड़ में फंसकर हम अपनी परम्परानुगत लोकरंजनकारी कला ''रम्मत की अनदेखी कर रहे है। बाजार के दर्शन को नहीं समझ पाने के कारण लोक नाट्य रूप रम्मत आज विलुप्त होने की कगार पर है नष्ट होती हमारी ये सांस्कृतिक थाती को बचाने के लिए प्रस्तोता एवं प्रेक्षक सभी को मिलकर प्रयास करना पड़ेगा।

इसके लिए आवश्यक हैं इसके संरक्षण, संवर्धन, प्रलेखन एवं एकीकरण की जिससे ये सांस्कृतिक विरासत लोक नाट्य रम्मत बची रह सके।

बीकानेर की सांस्कृतिक विरासत ''लोकनाट्य रम्मत'' के संरक्षण एव संवर्धन हेतु किए जाने वाले क्रिया कलाप

1. रम्मतों के कलाकार व दलों को चिन्हित कर सूचिबद्ध करना।
2. कलाकार, दल व प्रस्तुति देने वाले समुह के व्यवसाय, प्रस्तुति के क्षेत्र, जीवन–वृत्त व प्रस्तुतियों और उपलब्धियों का प्रलेखिकरण कर एक पुस्तक के रूप में प्रकाशित करवाना।
3. रम्मतों के उस्ताद व गुरूओं को चिन्हित कर सूचिबद्ध करना।
4. रम्मतों के उस्ताद व गुरूओं की लोक नाट्य क्षेत्र में पहचान बनाने के लिए उनके जीवन वृत्त, अनुभव, उपलब्धियों और प्रस्तुतियों को प्रकाशित करवाना।
5. रम्मतों की प्रस्तुति के लिए संशाधन, स्थान व अवसर उपलब्ध करवाना।
6. लोक सृजन धर्मी, लोकनाट्य विशेषज्ञ, साहित्यकार, नाट्यकार व लोककला के क्षेत्र में कार्य करने वाले शोधकर्ता, प्रस्तोता एवं प्रेक्षक की उपस्थिति में कार्यशाला, सेमिनार, एवं गोष्ठियों का अयोजन।
7. रम्मतों का व्यवसायिक करण हेतु विशेषज्ञों एवं उस्ताद और गुरूओं के द्वारा कलाकारों के प्रशिक्षण करवाना।
8. अभ्यास एवं प्रशिक्षण के उपरान्त रम्मतों का विभिन्न स्थानों पर प्रस्तुतिकरण करवाना।
9. राजस्थान की रम्मतों पर शोधपरक कार्य कर प्रकाशित करवाना।
10. रम्मतों के नाट्य रूप की विडियोग्राफी करवाना जिससे इस विधा का दृश्य रूप सभी जगह देखा जा सके।

रम्मतों के प्रचार–प्रसार के लिए सामाचार पत्र, इलेक्ट्रोनिक मिडियाव अन्य प्रचार–प्रसार के साधनों द्वारा अधिकतम प्रचार–प्रसार करवाना।

17. **सामुदायिक सहभागिता –** बीकानेर में होने वाली लोक नाट्य रम्मत कलाकारों के व्यक्तिगत प्रयास व मौहल्ला, चौक और समुदाय की सहभागिता से ही अब तक आयोजित होते आ रहे है। रियासत काल में राज आश्रय जरूर था पर आजादी के बाद यह लोक नाटय रम्मत जन सहभागिता से ही आयोजित किये जाते है। इनमें प्रस्तुति स्थल वाला मौहल्ला, चौक व अन्य व्यक्ति अपने पूर्ण सहायोग से इसके सफल आयोजन में भाग लेते है, यहां तक की मंच (अखाड़ा) बनाने हेतु घर से फर्नीचर, पर्दे तक ले आते है रात भर चलने वाले इन आयोजन में समुदाय का पूर्ण सहयोग रहता है। आयोजन करने वाला दल व मण्डल एक समूह के रूप में कार्य करता है। तथा प्रत्येक कलाकार अपना–अपना पूर्ण सहयोग देता है। कभी–कभी तो गुरू व कलाकार आयोजन हेतु आर्थिक सहयोग भी देते है।

18. **सम्बंधित समुदाय के संघठन या प्रतिनिधि –**

(1)

1. संस्था/कम्पनी/हस्ती का नाम – श्री लक्ष्मी नारायण रंगा
2. सम्बंधित/अधिकारी व्यक्ति का नाम पदनाम व संपर्क –
3. पता – दुर्गावति छात्रावास के पीछे, मुरलीधर व्यास नगर, बीकानेर।
4. फोन नंबर मोबाईल नं. 9414139198
5. ईमेल
6. अन्य सम्बंधित जानकारी – श्री लक्ष्मी नारायण रंगा गत 20 वर्षों से राजस्थान के लोक साहित्य व नाट्य के क्षेत्र में कार्य कर रहे है।

19. **किसी मौजूदा इन्वेंटरी, डेटाबेस या डाटा क्रिएशन सेंटर की जानकारी जिसका आपकों पता हो या आप किसी कार्यालय एजेंसी, आर्गेनाईजेशन या व्यक्ति की जानकारी को इस तरह की सूची को संभल कर रखता हो उसकी जानकारी –**

20. **के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत/परम्परा के तत्वों से सम्बन्धित प्रमुख प्रकाशित सन्दर्भ सूची या दस्तावेज (किताब, लेख, ऑडियो, विजुअल सामग्री, लाईब्रेरी, म्यूजियम, प्राईवेट सहदृयों संग्राहकों, कलाकारों/व्यक्तियों के नाम और पत्ते तथा वेबसाईट आदि जो सम्बंधित सांस्कृतिक विरासत/परम्परा के तत्वों के बारें में हो–**

(1)

1. संस्था/कम्पनी/हस्ती का नाम – आर.आर.क्रियेशन, बीकानेर
2. सम्बंधित/अधिकारी व्यक्ति का नाम पदनाम व संपर्क – श्रीराम सहाय हर्ष
3. पता – लखोटियों का चौक, बीकानेर।
4. फोन नंबर – मोबाईल नं. 9251257002
5. ईमेल – rrharshbkn@gmail.com

6. अन्य सम्बंधित जानकारी – श्रीराम सहाय हर्ष गत 15 वर्षों से लोक कला एवं लोक नाट्य के क्षेत्र में इलेक्ट्रोनिक मीडिया के द्वारा लोक कला से सम्बन्धित विषयों पर वृत्तचित्र का निर्माण कर रहे है।

(2)

1. संस्था/कम्पनी/हस्ती का नाम – मेघराज आचार्य
2. सम्बंधित/अधिकारी व्यक्ति का नाम पदनाम व संपर्क – मेघराज आचार्य
3. पता – आचार्यों का चौक, बीकानेर।
4. फोन नंबर – मोबाईल नं. 9214402659
5. अन्य सम्बंधित जानकारी – श्री मेघराज जी गत 20 वर्षों से अमर सिंह राठौड़ की रम्मत का निर्देशन व मंचन कर रहे है।

(3)

1. संस्था/कम्पनी/हस्ती का नाम – राजस्थानी भाषा एवं साहित्य अकादमी, बीकानेर।
2. सम्बंधित/अधिकारी व्यक्ति का नाम पदनाम व संपर्क – सचिव
3. पता – मुरलीधर व्यास नगर, बीकानेर, (राजस्थान) 334004 ।

अनोप

सचिव
गूंज कला एवं संस्कृति संस्थान
बीकानेर

हस्ताक्षर
नाम व पदनाम – अनोप सिंह (सचिव)
संस्थान का नाम (यदि है तो) – गूंज कला एवं संस्कृति संस्थान, बीकानेर
पता – सी–122–सी, मुरलीधर व्यास नगर,
बीकानेर (राजस्थान) 334004
मोबाईल – 9783964442
ईमेल – goonjkalaandsanskritisansthan@gmail.com